खण्ड-399, अंक-2
मंगलवार, 29 कार्तिक, शक संवत् 1912
(20 नवम्बर, 1990 ई0)

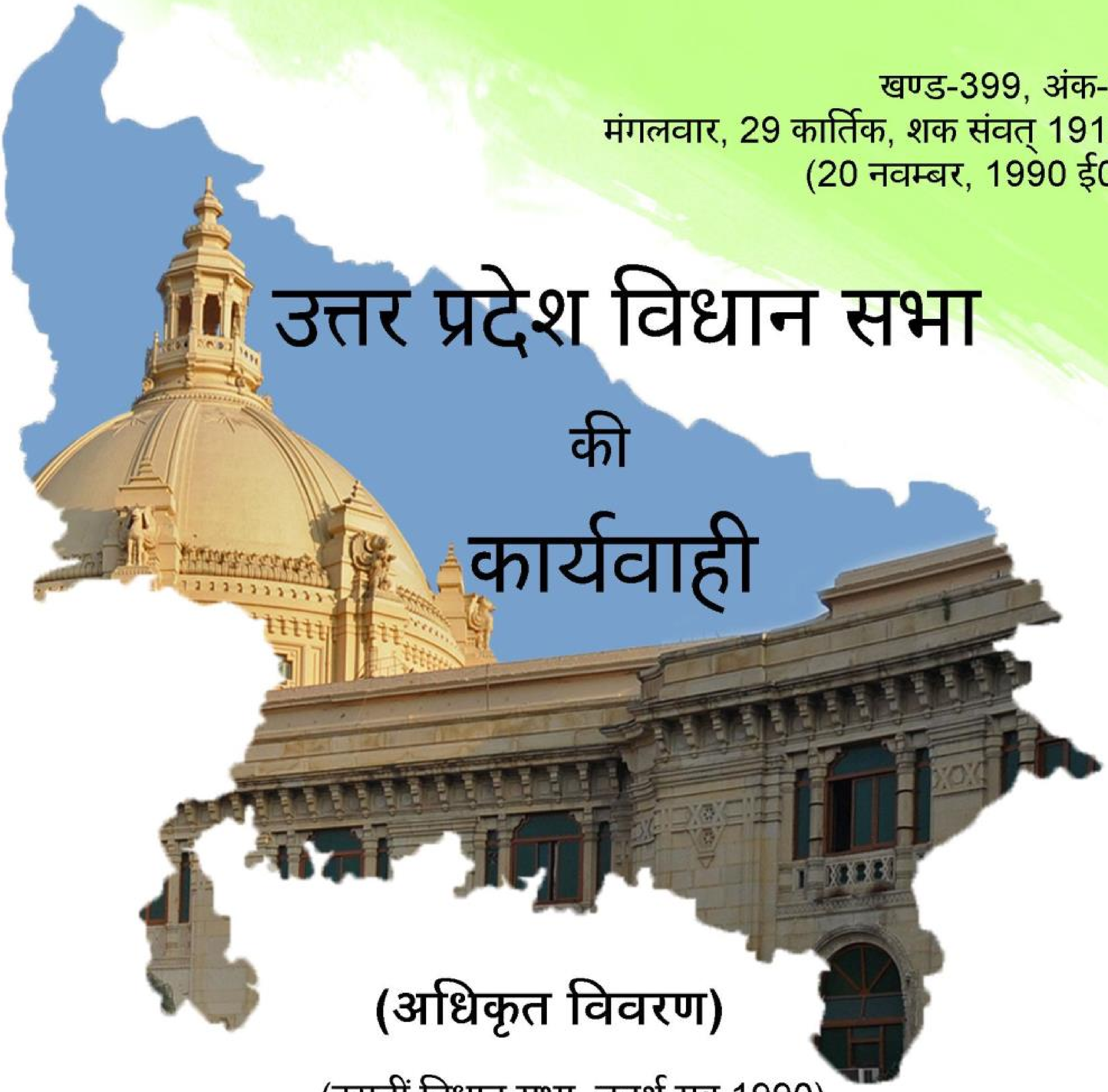

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(दसवीं विधान सभा, चतुर्थ सत्र 1990)

खण्ड 399 में 2 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
1990

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	ग
कार्य मंत्रणा समिति द्वारा लिए गये निर्णय की सूचना	1
मन्त्रि परिषद् में विश्वास के प्रस्ताव पर चर्चा के समय का निर्धारण	1
उत्तर प्रदेश बिक्री कर (संशोधन और वैधीकरण) (द्वितीय) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	3
उत्तर प्रदेश नागर स्वायत्त शासन विधि (तृतीय संशोधन) अध्यादेश 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	3
उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 1990 .. .. .. (पटल पर रखा गया।)	3
उत्तर प्रदेश इंट (संभरण का विनियमन) (द्वितीय) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	3
भ्रष्टाचार निवारण (उ0 प्र0 संशोधन) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	3
उत्तर प्रदेश औद्योगिक झगड़ा (संशोधन) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	3
उत्तर प्रदेश कृषि उत्पादन मंडी (संशोधन) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	3
उत्तर प्रदेश भारतीय चिकित्सा (संशोधन) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	4
उत्तर प्रदेश होम्योपैथिक मेडिसिन (संशोधन) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	4
उत्तर प्रदेश राज्य विश्व विद्यालय संशोधन (तृतीय) अध्यादेश, 1990 (पटल पर रखा गया।)	4
उत्तर प्रदेश म्युनिसिपैलिटी नोटीफाइड एरिया और टाउन एरिया .. (अल्पकालिक व्यवस्था) (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 1990 .. .. (पटल पर रखा गया।)	4
उत्तर प्रदेश आमोद और पणकर (संशोधन) द्वितीय अध्यादेश, 1990 .. (पटल पर रखा गया।)	4
उत्तर प्रदेश बिक्रीकर (संशोधन और वैधीकरण) (तृतीय) अध्यादेश, 1990 .. (पटल पर रखा गया।)	4
उत्तर प्रदेश लोक सेवा (पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण) संशोधन अध्यादेश, 1990 .. (पटल पर रखा गया।)	5
उत्तर प्रदेश म्युनिसिपैलिटी नोटिफाइड एरिया और टाउन एरिया (अल्पकालिक व्यवस्था) (द्वितीय संशोधन) विधेयक, 1990 .. .. (राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्ति की सूचना)	5

विषय	पृष्ठ संख्या
उत्तर प्रदेश पंचायत राज (संशोधन) विधेयक, 1990 .. .. (राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्ति की सूचना)	5
उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, 1990 (राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्ति की सूचना)	5
उत्तर प्रदेश नागर स्वायत्त शासन विधि (संशोधन) (द्वितीय) विधेयक, 1990 .. (राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्ति की सूचना)	6
उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति तथा जिला परिषद् (संशोधन) (द्वितीय) विधेयक, 1990 (राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्ति की सूचना)	6
उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन योजना (विधि मान्यकरण) विधेयक, 1990 .. (राष्ट्रपति महोदय की अनुमति प्राप्ति की सूचना)	6
भारतीय स्टाम्प (उत्तर प्रदेश संशोधन) विधेयक, 1990 .. .. (राष्ट्रपति महोदय की अनुमति प्राप्ति की सूचना)	7
श्री मुलायम सिंह यादव को विधान मण्डल जनता दल के नेता पद से हटाये जाने के सम्बन्ध में व्यवस्था का प्रश्न	6
मन्त्रिपरिषद् में विश्वास का प्रस्ताव (जारी)	10
सदन में सदस्यों के साथ हुयी दुर्व्यवहार की घटना पर खेद प्रकाश	14
मन्त्रि परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव (पारित)	21

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :—

1—अरिदमन सिंह, श्री	आगरा
2—इन्द्र प्रताप सिंह, श्री	बहराइच
3—छेदा लाल चौधरी, श्री	खीरी
4—भोला पाण्डेय, श्री	बलिया
5—रणजीत सिंह जूदेव, श्री	झांसी
6—रमाकान्त यादव, श्री	आजमगढ़
7—रवीन्द्र शुक्ल, श्री	झांसी
8—रिजवान जहीर उर्फ रिज्जू, श्री	गोण्डा
9—श्याम नारायन तिवारी, श्री	महाराजगंज
10—समीउल्ला, श्री	गोण्डा
11—बी0 बी0 इनिस, श्री	नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

विधान सभा
उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 20 नवम्बर, 1990

विधान सभा की बैठक, सभा मण्डप लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष श्री हरी किशन की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

कार्यमंत्रणा समिति द्वारा लिये गये निर्णय की सूचना

(मा0 अध्यक्ष के सदन में आने पर घोर व्यवधान)

(श्री रविदास मेहरोत्रा, श्री रघुबर दयाल वर्मा आदि सदस्यों ने नारे लगाये कि मुलायम सिंह इस्तीफा दो, मुलायम सिंह इस्तीफा दो)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग आसन ग्रहण करें और शांति बनायें रखें ।

महानुभाव, आपको सूचना देनी है कि कार्य सूची के अनुसार मा0 मुख्य मंत्री जी आज अपना विश्वासमत का प्रस्ताव रखेंगे . . . ।

(मुलायम सिंह इस्तीफा दो, मुलायम सिंह इस्तीफा दो के नारे लगाये जाने से घोर व्यवधान)

आप लोग मेरी बात सुन लें ।

मैं कार्य मंत्रणा समिति की सिफारिश की सूचना सदन को दे रहा हूं (व्यवधान) पढ़ी हुई मानी जायं ? (व्यवधान) (ठीक है कि आवाजें) (कार्य मंत्रणा समिति की सिफारिश पढ़ी हुई मानी गयीं जो इस प्रकार है)

["उत्तर प्रदेश विधान सभा की कार्य मंत्रणा समिति ने अपनी दिनांक 18 नवम्बर, 1990 की बैठक में सदन के दिनांक 19 तथा 20 नवम्बर, 1990 तक के उपवेशनों के कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित सिफारिशें की हैं :–

19-11-90 सोमवार		निधन के निर्देश ।
20-11-90 मंगलवार	(1)	औपचारिक कार्य ।
	(2)	मा0 मुख्य मंत्री द्वारा अभिसूचित निम्नलिखित प्रस्ताव का प्रस्तुतिकरण एवं उस पर चर्चा– "यह सदन मंत्रि-परिषद में विश्वास व्यक्त करता है ।"

उक्त दोनों तिथियों में प्रश्नकाल तथा शून्य प्रहर नहीं होगा तथा नियम 300, 301, 51 तथा नियम 56 की सूचनायें न ली जायं तथा वर्तमान सत्र के प्रश्न उसके सत्रावसान के फलस्वरूप व्यपगत न माने जायें ।"]

(घोर व्यवधान के मध्य गुण्डा गर्दी नहीं चलेगी, गुण्डा गर्दी नहीं चलेगी की आवाजें लगायीं गयीं)

मंत्रि परिषद् में विश्वास के प्रस्ताव पर चर्चा के समय का निर्धारण

श्री अध्यक्ष–

आप लोग आसन ग्रहण करें ।

नोट :– [ ] यह अंश पढ़ा हुआ माना गया ।

इस विश्वास मत के लिये समय 6 घंटे निर्धारित किया गया है और इस पर मतदान 5 बजे होगा । मा0 मुख्य मंत्री जी, मा0 नेता विरोधी दल, अन्य सभी दलों के नेता और हर दल का एक-एक सदस्य इसमें भाग ले सकेगा । यदि समय बचेगा तो अन्य मा0 सदस्यों को भी समय मिलेगा । इसके पहले एक और निवेदन करना है कि ऐसे समय में, ऐसे विषयों पर जब चर्चा होती है तो कुछ तनाव स्वभाविक रूप से हो जाता है । लेकिन मेरा नम्र निवेदन है आपसे, और आप सब भी मेरी भावना से सहमत होंगे कि आज सारा प्रदेश और देश यह जानना चाहता है कि इस संबंध में आपके क्या विचार हैं । यदि आप शान्तिपूर्वक बैठेंगे तो सबको अवसर मिलेगा । माननीय मुख्य मंत्री जी बोलेंगे और उनको बाद में भी अवसर मिलेगा सबकी बातों का उत्तर देने के लिए। इसलिए जनहित में यही है कि अब शान्तिपूर्वक यहां की कार्यवाही चलने दी जाए ।

श्री मुईद अहमद–

सदन का समय बढ़ा दिया जाए ।

(कुंवर रेवती रमण सिंह के अपने स्थान पर खड़े होने पर, सत्ता पक्ष की ओर से घोर व्यवधान ।)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, एक बार मेरी आप सुन लें . . .

श्री शारदानन्द अंचल–

आप बैठ जाइये, बैठ जाइये, । (घोर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

अंचल जी आप बैठ जाइये । अरे आप बैठ तो जाइये ।

श्री शारदानन्द अंचल–

यह निर्दल सदस्य खड़े होकर क्या कहने जा रहे हैं, पहले आप इनको बैठाइये ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, मेरा एक आग्रह है इसमें . . .

श्री अध्यक्ष–

देखिये बात यह है कि आज न तो कोई औचित्य का प्रश्न उठेगा, न कोई 301 का प्रश्न उठेगा, इसके अतिरिक्त आप क्या कहना चाहते हैं बतावें?

(घोर-व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

इस सदन के सभी माननीय सदस्यों की यह भावना है कि सदन का समय बढ़ा दिया जाए । मेरा आपसे आग्रह है कि आप को 5 बजे तक का आज इसके लिए समय है, इसमें पांच घंटे का समय और बढ़ा दिया जाए और 10 बजे रात्रि को इस पर मतदान आप करावें ।

श्री अध्यक्ष–

यह समय फिर देख लिया जाएगा यदि आवश्यक होगा । तो उस समय देख लिया जाएगा । इस समय ऐसे ही इसे चलने दें ।

(श्री रघुवर दयाल वर्मा और श्री चन्द्र शेखर सिंह (वाराणसी) एक साथ अपने स्थानों पर खड़े होकर व्यवस्था का प्रश्न उठाने लगे ।)

(मुख्य मंत्री का नाम बुलाये जाने पर श्री मुलायम सिंह यादव अपने स्थान पर बोलने के लिए खड़े हुए और इस पर सत्तापक्ष की ओर से मेजें थपथपाई गईं)

(घोर-व्यवधान)

उत्तर प्रदेश बिक्रीकर (संशोधन और वैधीकरण) (द्वितीय) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश बिक्री-कर (संशोधन और वैधीकरण) (द्वितीय) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश नागर स्वायत्त शासन विधि (तृतीय संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश नागर स्वायत्त शासन विधि (तृतीय संशोधन) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश ईंट (सम्भरण का विनियमन) (द्वितीय) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश ईंट (सम्भरण का विनियमन) (द्वितीय) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

भ्रष्टाचार निवारण (उत्तर प्रदेश संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से भ्रष्टाचार निवारण (उत्तर प्रदेश संशोधन) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश औद्योगिक झगड़ा (संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश औद्योगिक झगड़ा (संशोधन) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश कृषि उत्पादन मण्डी (संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश कृषि उत्पादन मण्डी (संशोधन) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

---

†छापा नहीं गया ।

उत्तर प्रदेश भारतीय चिकित्सा (संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश भारतीय चिकित्सा (संशोधन) **अध्यादेश**, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश होम्योपैथिक मेडिसिन (संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश होम्योपैथिक मेडिसिन (संशोधन) **अध्यादेश**, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय (तृतीय संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय (तृतीय संशोधन) **अध्यादेश**, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

(सर्वश्री रघुवर दयाल वर्मा और चन्द्रशेखर सिंह (वाराणसी) एक साथ अपनी बात कहने का बार-बार प्रयास करते रहे)

(तब तक श्री रघुवर दयाल वर्मा, श्री चन्द्रशेखर सिंह व श्री रविदास मेहरोत्रा के साथ मा0 **अध्यक्ष** पीठ के सामने बेंचों पर बैठे सभी सदस्य अपनी बात कहते हुए वेल आफ दि हाउस में आ गए जिससे घोर व्यवधान उत्पन्न हो गया)

उत्तर प्रदेश म्युनिसिपैलिटी नोटीफाइड एरिया और टाउन एरिया (अल्पकालिक व्यवस्था) (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 1990 †

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश म्युनिसिपैलिटी नोटीफाइड एरिया और टाउन एरिया (अल्पकालिक व्यवस्था) (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

(घोर व्यवधान)

उत्तर प्रदेश आमोद और पणकर (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 1990 †

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)--

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश आमोद और पणकर (द्वितीय संशोधन) **अध्यादेश**, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

उत्तर प्रदेश बिक्रीकर (संशोधन और वैधीकरण) (तृतीय) अध्यादेश, 1990 †

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश बिक्री-कर (संशोधन और वैधीकरण) (तृतीय) **अध्यादेश**, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

(घोर व्यवधान के मध्य)

---

†छापा नहीं गया ।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा (पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण) (संशोधन) अध्यादेश, 1990†

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश लोक सेवा (पिछड़े वर्गों के लिये आरक्षण) (संशोधन) अध्यादेश, 1990 को सदन के पटल पर रखता हूं ।

श्री रविदास मेहरोत्रा–

[xxx] (घोर व्यवधान)

उत्तर प्रदेश म्युनिसिपैलिटी नोटीफाइड एरिया और टाउन एरिया (अल्पकालिक व्यवस्था) (द्वितीय संशोधन) विधेयक, 1990 †

सचिव, विधान सभा–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से अधिनियम संख्या 16 लगायत 22 सन् 1990 से संबंधित विधेयकों के विषय में सदन को सूचित करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

मत्थी (क) पढ़ा हुआ माना जाए ।

सचिव, विधान सभा–

[माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से घोषणा करता हूं कि–

उत्तर प्रदेश म्युनिसिपैलिटी, नोटीफाइड एरिया और टाउन एरिया (अल्पकालिक व्यवस्था) (द्वितीय संशोधन) विधेयक, 1990 पर, जिसे उत्तर प्रदेश विधान परिषद् ने अपनी दिनांक 25 जून, 1990 की बैठक में पारित किया था तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा ने अपने दिनांक 9 जुलाई, 1990 के उपवेशन में पारित किया था, राज्यपाल महोदय की अनुमति दिनांक 13 जुलाई, 1990 को प्राप्त हो गयी और वह सन् 1990 का उत्तर प्रदेश का 16वां अधिनियम बन गया।]

उत्तर प्रदेश पंचायत राज (संशोधन) विधेयक, 1990†

सचिव, विधान सभा–

[माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से घोषणा करता हूं कि–

उत्तर प्रदेश पंचायत राज (संशोधन) विधेयक, 1990 पर, जिसे उत्तर प्रदेश विधान परिषद् ने अपनी दिनांक 25 जून, 1990 की बैठक में पारित किया था तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा ने अपने दिनांक 9 जुलाई, 1990 के उपवेशन में पारित किया था, राज्यपाल महोदय की अनुमति दिनांक 13 जुलाई, 1990 को प्राप्त हो गयी और वह सन् 1990 का उत्तर प्रदेश का 17वां अधिनियम बन गया।]

उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, 1990†

सचिव, विधान सभा–

[माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से घोषणा करता हूं कि–

उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, 1990 पर, जिसे उत्तर प्रदेश विधान

---

† छापा नहीं गया ।

नोट :–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

नोट:– [ ] यह अंश पढ़ा हुआ माना गया।

सभा ने अपने दिनांक 17 जुलाई, 1990 के उपवेशन में पारित किया था तथा जो श्री अध्यक्ष द्वारा धन विधेयक प्रमाणित किया गया था और उत्तर प्रदेश विधान परिषद् से बिना किसी सिफारिश के दिनांक 21 जुलाई, 1990 को वापस प्राप्त हुआ था, राज्यपाल महोदय की अनुमति दिनांक 24 जुलाई, 1990 को प्राप्त हो गई और वह सन् 1990 का उत्तर प्रदेश का 18वां अधिनियम बन गया।]

उत्तर प्रदेश नागर स्वायत्त शासन विधि (संशोधन) (द्वितीय) विधेयक, 1990†

सचिव, विधान सभा–

[माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से घोषणा करता हूं कि–

उत्तर प्रदेश नागर स्वायत्त शासन विधि (संशोधन) (द्वितीय) विधेयक, 1990 पर, जिसे उत्तर प्रदेश विधान सभा ने अपने दिनांक 6 जुलाई, 1990 के उपवेशन में पारित किया था तथा उत्तर प्रदेश विधान परिषद् ने अपनी दिनांक 20 जुलाई, 1990 की बैठक में पारित किया था, राज्यपाल महोदय की अनुमति दिनांक 24 जुलाई, 1990 को प्राप्त हो गयी और वह सन् 1990 का उत्तर प्रदेश का 19वां अधिनियम बन गया।]

उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति तथा जिला परिषद् (संशोधन) (द्वितीय) विधेयक, 1990†

सचिव, विधान सभा–

[माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से घोषणा करता हूं कि–

उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति तथा जिला परिषद् (संशोधन) (द्वितीय) विधेयक, 1990 पर, जिसे उत्तर प्रदेश विधान सभा ने अपने दिनांक 6 जुलाई, 1990 के उपवेशन में पारित किया था तथा उत्तर प्रदेश विधान परिषद् ने अपनी दिनांक 20 जुलाई, 1990 की बैठक में पारित किया था, राज्यपाल महोदय की अनुमति दिनांक 24 जुलाई, 1990 को प्राप्त हो गयी और वह सन् 1990 का उत्तर प्रदेश का 20वां अधिनियम बन गया।]

उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन योजना (विधि मान्यकरण) विधेयक, 1990 †

सचिव, विधान सभा–

[माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से घोषणा करता हूं कि–

उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन योजना (विधि मान्यकरण) विधेयक, 1990 पर, जिसे उत्तर प्रदेश विधान परिषद् ने अपनी दिनांक 25 जून, 1990 की बैठक में पारित किया था तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा ने अपने दिनांक 5 जुलाई, 1990 के उपवेशन में पारित किया था, राष्ट्रपति महोदय की अनुमति दिनांक 23 जुलाई, 1990 को प्राप्त हो गयी और वह सन् 1990 का उत्तर प्रदेश का 21वां अधिनियम बन गया।]

---

†छापा नहीं गया।

नोट:– [ ] यह अंश पढ़ा हुआ माना गया।

भारतीय स्टाम्प (उत्तर प्रदेश संशोधन) विधेयक, 1990†

सचिव, विधान सभा–

[माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से घोषणा करता हूं कि–

भारतीय स्टाम्प (उत्तर प्रदेश संशोधन) विधेयक, 1990 पर, जिसे उत्तर प्रदेश विधान सभा ने अपने दिनांक 28 जून, 1990 के उपवेशन में पारित किया था तथा जो श्री अध्यक्ष द्वारा धन विधेयक प्रमाणित किया गया था और उत्तर प्रदेश विधान परिषद् से बिना किसी सिफारिश के दिनांक 7 जुलाई, 1990 को वापस प्राप्त हुआ था, राष्ट्रपति महोदय की अनुमति दिनांक 23 जुलाई, 1990 को प्राप्त हो गयी और वह सन् 1990 का उत्तर प्रदेश का 22वां अधिनियम बन गया।]

(श्री रविदास मेहरोत्रा, श्री शारदा प्रताप शुक्ल, श्री यदुनाथ सिंह, श्री रघुवर दयाल वर्मा एवं कई अन्य मा0 सदस्य सदन के फ्लोर पर आ गये और मुलायम सिंह इस्तीफा दो के नारे लगाने लगे . .) (घोर व्यवधान के मध्य)

श्री अध्यक्ष–

मैं हाउस को दस मिनट के लिए स्थगित करता हूं।

(इस समय 11 बजकर 10 मिनट पर श्री अध्यक्ष ने सदन की बैठक 11 बजकर 20 मिनट तक के लिए स्थगित कर दी, 11 बजकर 20 मिनट पर मार्शल ने सदन को सूचित किया कि मा0 अध्यक्ष ने सदन का स्थगन 11 बजकर 30 मिनट तक के लिए बढ़ा दिया है)

(11 बजकर 30 मिनट पर सदन की कार्यवाही श्री अध्यक्ष के सभापतित्व में पुनः आरम्भ हुई)

श्री मुलायम सिंह यादव को विधान मण्डप जनता दल के नेता पद से हटाये जाने के सम्बन्ध में व्यवस्था का प्रश्न

***श्री रघुबर दयाल वर्मा–**

मान्यवर, मैंने एक व्यवस्था का प्रश्न उठाया था।

श्री अध्यक्ष–

आप 2 व्यक्ति खड़े हैं। आप लोग अध्यक्ष पीठ की कठिनाई को समझें, मैं किसका नाम बुला लूं? आप मेरी बात सुनें, मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि यदि आप समझते हैं कि इस महत्वपूर्ण मसले पर डिबेट हो तो आप मेरा सहयोग करें, यह आपसे मेरा नम्र निवेदन है। एक व्यक्ति कहे तो मैं सुन सकता हूं और उत्तर दे सकता हूं लेकिन सुने बिना मैं कैसे उत्तर दे सकता हूं? जब मैं नाम लूं तब आप कहें।

श्री रघुबर दयाल वर्मा–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि माननीय मुलायम सिंह को जनता दल की सदस्यता से हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष बोम्मई जी ने निष्कासित कर दिया था।

(शोर)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

नोटः–[ ] यह अंश पढ़ा हुआ माना गया।

जनता दल विधान मण्डल ने अपनी बैठक में सर्वसम्मति से निश्चय करके जो बोम्मई जी का प्रस्ताव था उसकी पुष्टि करके मुलायम सिंह को नेता पद से निष्कासित कर दिया था। मैं जानना चाहता हूं कि जब वह हमारे जनता दल के नेता नहीं हैं तो किस दल में हैं? मान्यवर, आप स्पष्ट करें कि वह किस दल के हैं और किस दल की हैसियत से यहां पर बैठे हुए हैं? इस पर आप व्यवस्था देने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष–

आपने जो व्यवस्था का प्रश्न उठाया उस सन्दर्भ में मैं आपको बता दूं कि केवल प्रश्न काल के अतिरिक्त, अध्यक्ष पीठ किसी भी सम्मानित मंत्री को बाध्य नहीं कर सकती है कि वह उत्तर दें। आपने एक बात कही है मानीय मुख्य मंत्री जी अपना भाषण देने जा रहे हैं।

(कुछ माननीय सदस्यों के खड़े होने पर शोर)

श्री रविदास मेहरोत्रा–

आप मान्यवर, व्यवस्था के प्रश्न का उत्तर दें।

***श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–**

मान्यवर, मेरी बात सुन लें।

श्री अध्यक्ष–

चार-चार माननीय सदस्य एक साथ खड़े हो रहे हैं। मैं कहना चाहता हूं कि एक सदस्य खड़ा हो। यदि डिबेट नहीं हुई और मतदान बिना डिबेट के हो गया तो इसका उत्तरदायित्व सामने बैठे हुये लोगों का होगा, यह मैं चेतावनी दे रहा हूं।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

मान्यवर, आप नाम ले लें, वही आदमी बोलेगा, बाकी लोग बैठ जायेंगे।

श्री अध्यक्ष–

गुप्ता जी आप बैठ जायं।

मेरा वाक्य पूरा नहीं होने पाता है, चार-चार माननीय सदस्य खड़े हो जाते हैं। आप कम से कम यह भी देखें कि मेरी बात समाप्त हो जाय तब आप खड़े हों। मैं आवश्यक समझूंगा तो आपका नाम लूंगा। मैंने अभी माननीय रघुबर दयाल वर्मा जी को बुलाया और अभी मैं उनकी बात का पूरा उत्तर नहीं दे पाया लेकिन चार-चार सदस्य खड़े हो जाते हैं। आप कैसे कहते हैं कि आप शांति पूर्वक सदन चलाना चाहते हैं। मेरी बात समाप्त हो जाय तब आप अपनी बात कहें। जैसा कि वर्मा जी ने प्रश्न उठाया था, मैंने उत्तर यह दे दिया है कि मैं बाध्य नहीं कर सकता हूं कि वह उत्तर दें केवल प्रश्न काल के। दूसरी बात यह है, यह मेरी घोषणा है कि माननीय मुख्य मंत्री जी हमारे रिकार्ड के अनुसार जनता दल के सदस्य हैं।

(सत्तापक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

अध्यक्ष महोदय, आपने अभी कहा कि माननीय सदस्य खड़े न हों। आप बहुत पुराने

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सदस्य हैं और इस सम्मानित कुर्सी पर बैठे हुये हैं । मैं आपसे आग्रह करूंगा कि हम लोग सदन चलाना चाहते हैं और बहुत शांतिपूर्वक चलाना चाहते हैं। लेकिन मान्यवर, उसी के साथ-साथ आपको भी यह निष्पक्षता से निर्णय करना होगा, चाहे जितने भी सदस्य खड़े हों, आप जिसको बुलाना चाहेंगे, वही बोलेंगे, सब नहीं बोलेंगे। आपने एक निर्णय दे दिया, वह शिरोधार्य है, लेकिन कल 90 विधायकों ने आपके सामने उपस्थित होकर लिखित बयान पर अपने हस्ताक्षर किये।

(घोर व्यवधान के मध्य)

मान्यवर, ये मुझे बोलने नहीं देंगे।

(घोर व्यवधान)

मान्यवर, जब आपके सामने यह लिखित दे दिया गया कि हम जनता दल में हैं और जनता दल के नेता माननीय मुलायम सिंह यादव अब नहीं हैं।

(घोर व्यवधान)

आप ही बैठ जाइये कुर्सी पर, आप ही व्यवस्था दे दीजिए।

(घोर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

मैं स्वीकार करता हूं कि मेरे समक्ष 90 सदस्यों ने उपस्थित होकर हस्ताक्षर किये।

(घोर व्यवधान)

इन सभी पत्रों के परिप्रेक्ष्य में मेरा निर्णय होगा, आप उसकी प्रतीक्षा करें। अब कृपया शान्त हो जायें, अब इस पर चर्चा न करें ।

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

अध्यक्ष महोदय, . . . (व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

आप मेरी बात तो सुन लीजिए।

श्री अध्यक्ष–

आपकी जो भी बात होगी, उसका माननीय मुख्य मंत्री अपने भाषण में यदि चाहेंगे, तो उत्तर देंगे।

(घोर व्यवधान)

यदि आप ही लोगों को सदन चलाना हो, तो चला लीजिए ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मेरा आपसे आग्रह है कि हर जगह, चाहे दिल्ली हो, बिहार हो, चाहे और भी कोई प्रान्त हो, सबमें यह फैसला हो चुका है और सब जगह दो दलों में जनता दल विभाजित हो गया है, एक जनता दल (मूल) और दूसरा जनता दल (एस) । अब हम लोग जनता दल में हैं, . . .

(घोर व्यवधान)

मान्यवर, एक बात तो सुन लें ।

श्री अध्यक्ष–

यह इलेक्शन कमीशन नहीं है।

(घोर व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, यह सदन में ही निर्णय होगा कि जनता दल में कौन है? जनता दल के अध्यक्ष बोम्मई जी हैं, उन्होंने माननीय मुलायम सिंह यादव को जनता दल से निष्कासित कर दिया है।

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

मान्यवर, ये काफी वरिष्ठ सदस्य हैं। सदन की परम्पराओं में यह मान्यता भी रही है कि अध्यक्ष के निर्णय के बाद कोई बहस नहीं की जाती है। जहां तक इनके 90 सदस्यों की बात है, 90 सदस्य इनके हैं ही नहीं और इनके 31 सदस्य निष्कासित किये जा चुके हैं।

(घोर व्यवधान)

इनको सुनने का भी धैर्य नहीं है कि ये कोई बात सुन सकें। आप विषय को सुनने का साहस रखें। मान्यवर, बोम्मई को पार्टी से निकाला जा चुका है. . .

(घोर व्यवधान)

सदन के अन्दर आपको अधिकार है, आप जिसको मान्यता दे दें, उसकी मान्यता मानी जायगी। मान्यवर, निर्दलीय सदस्य केवल 31 हैं और इनके पास मुश्किल से 50 लोग हैं।

मंत्रि परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

मान्यवर, आपकी अनुमति से मैं प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहता हूं–

"यह सदन मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है।"

अध्यक्ष महोदय, जनता दल पिछले चुनाव में स्पष्ट बहुमत ले करके आया था और उसने 5 दिसम्बर को अपनी सरकार बनायी थी।

(व्यवधान के मध्य)

श्री अध्यक्ष–

माननीय रेवती रमण जी, यह निर्णय करके बता दें कि आपके सदस्य डिबेट में शान्तिपूर्वक भाग लेना चाहते हैं या नहीं?

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, यही तो मैं आपसे चाहता था कि आप मान्यता दें, आपने उस मान्यता को दे दिया इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। मान्यवर, जब इतनी बड़ी संख्या में लोग बैठे हैं तो उनके विचारों को सुनने के लिए उनकी भावनाओं की भी आपको कद्र करनी चाहिए। एकतरफा आप जो भी निर्णय दें वह शिरोधार्य है लेकिन निर्णय ऐसा होना चाहिए जो केवल निष्पक्ष न हो बल्कि निष्पक्ष दिखाई भी पड़े। मेरा आपसे आग्रह था, हम तो यह नहीं कह रहे थे कि माननीय मुख्य मंत्री जी न बोलें।

श्री अध्यक्ष–

आप इसको बराबर कहते रहेंगे, जब तक सदन चलेगा। जब मैंने आपकी बात को सुन लिया, मैंने कहा मेरे निर्णय की प्रतीक्षा कीजिए तो आपको सम्मान करना चाहिए। अब जो भी बात माननीय मुख्य मंत्री जी कहेंगे आप सुने होंगे तो आप बोल सकेंगे। आपकी भावना को सदन ने सुन लिया, आप बैठें।

श्री मुलायम सिंह यादव-

अध्यक्ष महोदय, मैंने आपके सामने निवेदन किया था कि जनता दल स्पष्ट बहुमत लेकर सदन में आया है और जनता ने 5 साल के लिए जनादेश भी दिया और इस जनादेश के साथ देश की सर्वोच्च कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने कुछ अन्य संगठनों और राजनैतिक दलों की सांठ-गांठ से किस तरह [xxx] की है इसे मैं सबके सामने स्पष्ट करना चाहता हूं। इसीलिए आज इस सदन में हमारी सरकार को विश्वास मत प्राप्त करने का प्रस्ताव रखना पड़ा है। यह कोई नई बात नहीं है लोकतंत्र में जब-जब किसी भी सरकार को बहुमत सिद्ध करने की चुनौती दी जाती है तो यही सर्वोच्च स्थान है जहां पर सरकार को अपना बहुमत सिद्ध करने का मौका मिलता है। अभी 16 नवम्बर को दिल्ली में भी केन्द्रीय सरकार ने अपना बहुमत सिद्ध किया है।

लेकिन आज इस विधान सभा के माध्यम से देश की जनता को बताना चाहता हूं कि कि राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद के विवाद का सहारा लेकर किस तरह एक लोकप्रिय सरकार को नीचा दिखाने, हमारे कामों में रोड़े और देश की करोड़ों-करोड़ों जनता के साथ छल करने की कोशिश की गयी है। आखिर में ऐसी स्थितियां पैदा की गयीं कि एक राजनैतिक समस्या का राजनैतिक समाधान करने की बजाय उसके प्रशासनिक समाधान की जिम्मेदारी उत्तर प्रदेश सरकार पर आ गयी। राजनीतिक समस्याओं के प्रशासनिक समाधान का परिणाम पंजाब में हम भुगत रहे हैं, पूरा देश भुगत रहा है। उत्तर प्रदेश में भी यही स्थिति पैदा करने की कोशिश की गयी है।

पूर्व प्रधान मंत्री [xxx] ने भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिन्दू परिषद् के साथ मिलकर देश के हिन्दुओं, मुसलमानों के साथ [xxx] किया है, उन्हें धोखा दिया है। माननीय वी0 पी0 सिंह ने भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिन्दू परिषद् के साथ भी [xxx] किया है, और आखिरकार अपने बिछाये हुए जाल में वे खुद भी फंस गये। देश की जनता की भावनाओं के साथ मनमाने ढंग से खिलवाड़ और मजाक का ऐसा उदाहरण इतिहास में मिलना कठिन है।

अध्यक्ष महोदय, बुद्धिजीवियों ने भी मानना शुरू किया कि सचमुच एक सार्थक पहल हुई है। लेकिन पिछले कुछ महीनों से धर्म, जाति आदि के मुद्दों में उलझकर सामूहिक समस्याओं का सर्वसम्मत हल ढूंढने की बजाय हम आपस में बंटने लगे हैं। यह इस प्रदेश के लिए और देश के लिए गम्भीर चिन्ता का विषय बन चुका है। इस सरकार ने जो भी चुनावी वायदे किये थे, उन्हें पूरा करने का हर सम्भव प्रयास किया। लेकिन कुछ लोगों को यह पसंद नहीं आया। सरकार की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर और यह देखकर कि उत्तर प्रदेश की सरकार को हरियाणा की चौटाला सरकार की तरह बर्खास्त नहीं किया जा सकता, अयोध्या के विवाद को फिर से उठाया गया। इस समय इन तथ्यों को सबके सामने स्पष्ट करना मैं अपनी जिम्मेदारी समझता हूं। जनहित के बजाय कुछ लोगों ने राजनीतिक स्वार्थों को महत्व दिया। अपने स्वार्थ के लिए पूर्व प्रधान मंत्री, विश्व हिन्दू परिषद्, भारतीय जनता पार्टी ने मिलकर पूरे देश को [xxx] दिया है।

मेरा शुरू से कहना रहा है कि अयोध्या का विवाद एक धार्मिक मुद्दा है जिसे भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिन्दू परिषद् ने राजनीतिक मसला बना दिया है। इस मामले को अपनी सुविधा के अनुसार जब चाहा तब भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिन्दू

नोट:-[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

परिषद् ने उठाया । बड़े अफसोस की बात है कि देश की सबसे सम्मानित कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने भी इस [xxx] में साम्प्रदायिक ताकतों का साथ दिया राम जन्म भूमि का मामला दिसम्बर 1949 से शान्त पड़ा था । 35 वर्ष बाद 1984 में चुनाव से ठीक पहले इसे फिर से क्यों उठाया गया ? मैं बहुत दिनों से कुछ सवाल उठा रहा हूं जिनका उत्तर मुझे न भारतीय जनता पार्टी से मिल रहा है और न ही विश्व हिन्दू परिषद् से । क्योंकि ये जवाब दे नहीं सकते । जब चुनाव होने वाले थे, तो उससे ठीक पहले 1984 में इस मामले को उठाकर भगवान राम के प्रति हिन्दुओं की अपार श्रद्धा को को वोट की राजनीति से जोड़ने का प्रयास किया । फिर पांच साल तक मामला नहीं उठाया गया । इसके बाद 1989 में चुनाव के ठीक पहले 1 नवम्बर में फिर शिलान्यास की बात उठाकर देश के करोड़ों हिन्दुओं की भावनाओं को भड़काने का [xxx] किया गया कुछ लोगों ने भगवान राम का अपमान किया, राजनैतिक कारणों से उनकी निन्दा करता हूं । नवम्बर में चुनाव हो गये और दिसम्बर में हमारी सरकार का गठन हुआ । उसके बाद हमारी सरकार आयी । उसके बाद 28 जनवरी से 30 जनवरी तक संतों और विश्व हिन्दू परिषद् का सम्मेलन इलाहाबाद में होता है जिसमें दिल्ली से प्रधान मंत्री जी के दो दूत जाते हैं उसमें एक सांसद और एक अन्य और उन्होंने वहीं जाकर कहा कि सीधे प्रधान मंत्री से बात होगी और उत्तर प्रदेश सरकार से बात करने का कोई सवाल नहीं उठता है यह प्रधान मंत्री का संदेश है। और चार महीने का समय गुप्त रूप से वहीं तय हो गया । 3 फरवरी को मैंने बहुत जोर देकर विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं को बुलाया, निमंत्रण दिया और कहा कि नहीं आप आ सकते हैं तो मैं आ सकता हूं । 3 फरवरी को आये और राजभवन में तीन-साढ़े तीन घंटे हमारी बातचीत हुई और उसके बाद उन्होंने तुरन्त कहा कि हम आपसे बात नहीं करेंगे, प्रधान मंत्री से बात करेंगे । उसके बाद ही उत्तर प्रदेश के सभी दलों के नेताओं की हमने बैठक बुलाई जिसमें माननीय नेता विरोधी दल माननीय श्री नारायण दत्त तिवारी जी भी उपस्थित थे । भारतीय जनता पार्टी के नेता उपस्थित नहीं हुए, इन्तजार किया गया, उसके बाद स्थगित की गयी मीटिंग । शाम को फिर दुबारा मीटिंग होती है और भारतीय जनता पार्टी के माननीय राजेन्द्र कुमार गुप्त और दूसरे माननीय कलराज मिश्र दोनों नेता आये और इन्होंने साफ-साफ कहा कि विश्व हिन्दू परिषद् का जो प्रस्ताव है उस पर हम अडिग हैं, आगे हम आपसे कोई बात करने के लिए तैयार नहीं चार महीने का समय गुप्त रूप से दिल्ली में राष्ट्रीय मोर्चा के भूतपूर्व प्रधान मंत्री के साथ तय हो गया, बिना प्रदेश सरकार को विश्वास में लिये । अध्यक्ष महोदय, आप ही बतायें कि इसे मिली भगत और [xxx] कहा जाये या नहीं? मुझे जानकारी अभी तक नहीं है, कि प्रधान मंत्री ने समय दिया, अखबारों के माध्यम से (व्यवधान) मैंने पढ़ा । प्रधान मंत्री जी ने, भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने उनकी बात कर रहा हूं और उसके बाद चाहे भारतीय जनता पार्टी हो, चाहे विश्व हिन्दू परिषद्--मुझे कोई सूचना नहीं दी, अखबार के अलावा (व्यवधान) मुझे सुनें । फिर बिना मुझसे पूछे, बिना विश्वास में लिए उत्तर प्रदेश की सरकार की, तीन नेताओं की कमेटी कब बनी, कैसे बनी, मुझे जानकारी नहीं है। उसमें मुझे हटाया गया, मुझे पता नहीं है । मेरे एक सहयोगी मंत्री को उसमें ले लिया गया, इसका मुझे कोई दुख नहीं है । मुझे अफसोस इस बात का है कि चार महीने का लगातार जो मौका दिया विश्व हिन्दू परिषद् ने उसमें भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने कोई प्रयास नहीं किया, न ही मेरी कोई राय और न मशविरा किया ।

नोट:-[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

क्या देश के एक दर्जन ऐसे सम्मानित लोगों को अध्यक्ष महोदय, जिन पर दोनों सम्प्रदायों का विश्वास हो, एक मंच पर लाकर उनकी राय नहीं ली जा सकती थी ? क्या उनसे हल निकालने के लिए नहीं कहा जा सकता था ? क्या दोनों धार्मिक समुदायों के वरिष्ठ नेताओं को अलग-अलग या साथ-साथ बैठाकर समाधान का प्रयास किया गया ? क्या देश की जनता और बुद्धिजीवियों के सामने समस्या को गम्भीरता से पेश किया गया ? 9 फरवरी को दूरदर्शन और आकाशवाणी के माध्यम से देश और प्रदेश की जनता के नाम अपनी अपील में मैंने फिर से कहा था कि क्या मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का मंदिर देश, न्याय और संविधान की मर्यादाओं को तोड़कर बनाया जायेगा ? इस अपील पर मेरे पास अनेक पत्र आये, लेकिन पहल मेरे हाथ में नहीं थी । यह सावधानी बरती जाती थी कर रहा हूं। विश्व हिन्दू परिषद और भारतीय जनता पार्टी ने सारी जिम्मेदारी और कर रहा हूं । विश्व हिन्दू परिषद और भारतीय जन्ता पार्टी ने सारी जिम्मेदारी और विश्वास पूर्व प्रधान मंत्री को सौंप रखे थे । तीनों में से किसी ने उत्तर प्रदेश की सरकार को विश्वास में लेने की कोई जरूरत नहीं समझी ।

तो मान्यवर, मैं यह कहना चाहता था कि किस तरह से [xxx] इस देश के साथ की गयी। विश्व हिन्दू परिषद् से प्रस्ताव पास करके चार महीने का मौका दिया प्रधानमंत्री, [xxx] को । 23-24 जून को प्रस्ताव पास होता है कि मन्दिर बनाओ, मुलायम सिंह हटाओ । मुझे कोई मौका नहीं दिया और न ही मुझसे बातचीत की । इसके दोषी भूतपूर्व प्रधानमंत्री, विश्वनाथ प्रताप सिंह हैं । प्रस्ताव तो यह होना चाहिए था कि [xxx] हटाओ मंदिर बनाओ। यह सारी [xxx] भूतपूर्व प्रधान मंत्री, [xxx] कर रहे थे । मैं तो उन्हें 1980 से अच्छी तरह से पहचानता था । तो मान्यवर मैं इस प्रदेश की जनता को बताना चाहता हूं कि इसमें मेरा क्या कसूर है ? प्रधान मंत्री ने समय दिया और फिर उसके बाद बिना बातचीत किए चार महीने का और समय दिया गया 30 अक्टूबर तक । इस 8 महीने के अन्दर भूतपूर्व प्रधान मंत्री [xxx] ने देश के साथ और दोनों सम्प्रदायों के साथ, विश्व हिन्दू परिषद् के साथ [xx] बोला, मुस्लिम सम्प्रदाय के साथ [xx] बोला व मुझसे [xx] छिपा-छिपा कर रखा गया, भारतीय जनता पार्टी को भी [xx] में रखा। भारतीय जनता पार्टी बिना मतलब उछल रही है । भारतीय जनता पार्टी से कोई शिकायत नहीं है और इसलिए शिकायत नहीं है कि भारतीय जनता पार्टी की एक ही मांग है—मन्दिर निर्माण हमारी यह साफ राय है कि चाहे कितनी बड़ी चुनौती हो, हम उसका मुकाबला करेंगे । मैंने शुरू में भी कहा था, फिर कहना चाहता हूं कि इन 8 महीनों के अन्दर कोई भी गम्भीर प्रयास नहीं किया गया । भारतीय जनता पार्टी के नेता, श्री लाल कृष्ण अडवाणी ने कहा कि मुझे [xxx] में रखा और यही नहीं विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं से भूतपूर्व प्रधान मंत्री, [xxx] जो कहा उसका उल्लेख श्री अरुण शौरी ने किया है कि "मन्दिर की एक-एक ईंट उखाड़कर भारतीय जनता पार्टी को दे दी जाए" और दूसरी तरफ मुस्लिम नेताओं ने कहा कि आप क्या बात करते हैं मस्जिद तोड़ने का सवाल ही नहीं उठता ।

नोट:—[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री वीरेन्द्र नाथ दीक्षित–

श्री वी0 पी0 सिंह इस सदन के सदस्य नहीं हैं इसके लिए उनका नाम बार-बार यहां मा0 मुख्य मंत्री जी द्वारा नहीं लिया जाना चाहिए। यह उचित नहीं है इस पर आप अपनी व्यवस्था दें।

(अनेक माननीय सदस्यों द्वारा खड़े होकर बोलने का प्रयास करने से व्यवधान)

(श्री वीरेन्द्र नाथ दीक्षित, रविदास मेहरोत्रा, श्री चन्द्रशेखर सिंह, श्री मूलचन्द्र आदि अनेक माननीय सदस्य सदन के फ्लोर पर आ गये सुरेन्द्र सिंह [XXX] के विरोध में तथा वी0 पी0 सिंह के पक्ष में जिन्दाबाद-जिन्दाबाद नारा लगाने लगे। (इसके विरोध में सत्ता पक्ष के श्री रामतेज, श्री स्वामीनाथ, श्री पारस नाथ यादव आदि सदस्य भी जवाबी नारे लगाते हुए सदन के फ्लोर पर आकर धक्का-मुक्की करने लगे तथा श्री रविदास मेहरोत्रा तथा श्री मूलचन्द्र आदि सदस्यों से उलझ कर मारपीट करने लगे। जिससे सदन में घोर अराजकता का वातावरण हो गया।)

श्री अध्यक्ष–

मैं सदन की कार्यवाही को 10 मिनट के लिए स्थगित करता हूं।

(इस समय 12 बजे श्री अध्यक्ष ने सदन की बैठक 12 बजकर 10 मिनट तक के लिए स्थगित कर दिया, 12 बजकर 10 मिनट पर मार्शल ने सदन को सूचित किया कि मा0 अध्यक्ष ने सदन के स्थगन को 12 बजकर 30 मिनट तक के लिए बढ़ा दिया है, 12 बजकर 30 मिनट पर मार्शल ने सदन को पुनः सूचित किया कि मा0 अध्यक्ष ने सदन का स्थगन पुनः 15 मिनट तक के लिए बढ़ा दिया है।)

(12 बजकर 45 मिनट पर श्री अध्यक्ष के सभापतित्व में सदन की कार्यवाही पुनः आरम्भ हुई।)

सदन में सदस्यों के साथ हुयी दुर्व्यवहार की घटना पर खेद प्रकाश

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, जो कुछ भी सदन में हुआ है यह...

(श्री गौरी शंकर भैया के कुछ बोलने पर)

गौरी भैया आप सुन तो लें। मैं मानता हूं कि आप बहुत ज्ञानी हैं।

श्री मूल चन्द्र–

यह जो हुआ है वह देश और प्रदेश के लिये बहुत ही शर्मनाक है।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

यह जो सदन में हुआ है, बहुत ही शर्मनाक घटना है और माननीय हर तरह से अगर सदस्यों के साथ व्यवहार करेंगे, तो बहुत ही अप्रिय स्थिति पैदा हो जायेगी। फिर बहुमत के बल पर किसी भी सदस्य को कुछ भी बोलने नहीं देंगे। रविदास मेहरोत्रा

नोटः–[XXX] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

और मूल चन्द्र और वीरेन्द्र दीक्षित के साथ हाथापाई की गयी और पीटा गया। मेरा आग्रह है कि इस तरह की घटनाओं को आप रोकें। इस परिसर में बाहर के भी लोग आये हैं, लोग लाबियों में बैठे हैं, जो इस विधान सभा के सदस्य नहीं हैं और वह इस तरह का व्यवहार करते देखेंगे, तो इस सदन की मान मर्यादा पर आंच आवेगी। यहां पर स्वस्थ परम्परा बनाने के लिये आपसे आग्रह है कि इस तरह की घटनाओं को आप रोकें और इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। इसको आप सुनिश्चित कर लें। आज विधान सभा के परिसर में बाहर के लोग भी आये हैं, और यहां पर ऐसा वातावरण बन गया है। सरकार के लोगों ने ऐसा किया है, जो उचित नहीं था। यहां पर हथियार बन्द लोग घुस आये हैं। मैं आग्रह करूंगा कि आप इसका निराकरण करें और विधान सभा को चलाना है, तो परम्परागत तरीकों से चलायें। अगर एक नई परम्परा बनेगी तो कोई विधान सभा नहीं चल पायेगी और कोई लोक सभा नहीं चल पायेगी और विरोध पक्ष मुखरित नहीं हो पायेगा। इसलिए मान्यवर, मेरा आग्रह है कि यहां पर दुर्व्यवहार हुआ है उसके लिए आप एक-एक मिनट का समय माननीय रविदास जी को, माननीय मूलचन्द्र जी को और माननीय दीक्षित जी को अपनी बात कहने का मौका दे दें। आप उनकी बात सुन लें। फिर मुख्य मंत्री जी बोल लें। यह बात खतम हो जाय। हम चाहते हैं कि हाउस में डिबेट हो और जो बातें हैं वे सफाई के तौर पर सदन में और जनता के बीच में आ जायं। वे क्या बातें हैं, जिन मुद्दों पर पार्टी टूटी है और जिन मुद्दों पर विश्वास का मत प्राप्त किया जा रहा है। मान्यवर, यही मेरा आपसे आग्रह है। मेरा विश्वास है कि आप मेरे इस आग्रह को कबूल करेंगे।

(माननीय मुख्य मंत्री का नाम पुकारे जाने पर)

श्री रविदास मेहरोत्रा–

[xxx] (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप कृपया बैठ जायं ..... (व्यवधान)

श्री शारदा प्रताप शुक्ल–

जो दुर्व्यवहार माननीय सदस्य के साथ हुआ है।

श्री अध्यक्ष–

आप बैठ जायं।

श्री शारदा प्रताप शुक्ल–

मान्यवर, इसका क्या हुआ ..... (जूता दिखाते हुए)

श्री रविदास मेहरोत्रा–

[xxx]

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

जो भी बात रविदास जी कह रहे हैं, वह कार्यवाही का अंग नहीं बनेगा। कृपया बैठ जायं।

नोट:–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री रविदास मेहरोत्रा–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

आप समय नष्ट न करें । आपकी कोई बात कार्यवाही में नहीं आयेगी....

(व्यवधान)

श्री रविदास मेहरोत्रा–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

मैं नहीं सुन सकता । आप क्यों सदन का समय नष्ट कर रहे मेरे कक्ष में जो निर्णय हुआ है, वही होगा ।

श्री रविदास मेहरोत्रा–

(व्यवधान) [xxx]

श्री चन्द्र शेखर सिंह (वाराणसी)–

माननीय तिवारी जी, आप तो संसदीय परम्पराओं के ज्ञाता हैं, इस सम्बन्ध में आप स्पष्टीकरण दें कि जो आज विधान सभा में घटना घटी है वह विधान सभा के संसदीय इतिहास में और संसदीय लोकतंत्र के अनुरूप है । इस सम्बन्ध में आप क्या कहना चाहते हैं ।

नेता विरोधी दल (श्री नारायण दत्त तिवारी)–

श्रीमन्, मैं किन शब्दों में अपना क्षोभ और अपनी व्यथा व्यक्त करूं। जो भी आज यहां पर हुआ है वह मैं समझता हूं कि विधान सभा के इतिहास में ऐसा दुखद प्रकरण घटित हुआ है जो कभी नहीं होना चाहिए था। सन् 1952 से मुझे इस विधान सभा में सेवा करने का समय-समय पर मौका मिला है किन्तु शायद ही पहले कभी मार-पीट की बारी यहां पर आई हो या ऐसा दुर्व्यवहार हुआ हो । यह नहीं होना चाहिए । आज जब कि ऐसे गम्भीर विषय पर विवाद हो रहा है, इस तरह की बहस किसी भी प्रकार से उचित नहीं है । जो दृष्टिकोण दलों के हैं, वह सामने आये, जनता को मालूम हो कि उनका क्या दृष्टिकोण है, उनको हम सुनें यह आवेश का समय नहीं है । अगर किसी माननीय सदस्य के ऊपर घात प्रतिघात हुआ है वह संसदीय लोकतंत्र और उसकी परम्पराओं के विपरीत है यह नियमानुकूल नहीं है । मैं समझता हूं कि यह नियमों की भी अवहेलना है मैं इस अवसर पर वह सारे प्रश्न नहीं उठाना चाहता हूं किन्तु जो विश्वास का प्रस्ताव है, मैं चाहूंगा कि नेता सदन और सभी दलों के नेता और प्रत्येक सदस्य, विशेषरूप से युवा सदस्य इस सम्बन्ध में मर्यादा के अनुकूल ही अपनी बात कहें । नहीं तो यह यह सदन कैसे चलेगा, कैसे वातावरण बन सकता है । इसलिये हमें इसे समाप्त करना चाहिए । तभी इस विधान सभा के अधिक अधिवेशन हो सकते हैं । श्रीमन्, मैं आपसे यही आग्रह करूंगा कि भविष्य में ऐसी घटना न हो । कुंवे में आने की परम्परा बन गयी है यह भी अच्छी परम्परा नहीं है । हमने पहले भी इस बारे में विचार व्यक्त किये आज भी कहते हैं । अगर कोई आ भी जाय थोड़ी देर के लिए

नोटः–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

वह वापस चला जाय और उसमें संसदीय भाषा का प्रयोग करें तभी विधान सभा में कार्य चल सकता है ।

(व्यवधान)

श्री राम चन्द्र बच्चा सिंह–

मान्यवर, औरों को भी कहने का मौका दें ।

श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, आज इस माननीय सदन में एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हो रही है । यह बात ठीक है कि आज इस प्रस्ताव पर विभिन्न दलों को अपने-अपने दृष्टिकोण रखने हैं जो जनता के सामने आयेंगे। हमारे दल का निश्चित मत है हम चाहते हैं शालीनता के साथ शांतिपूर्ण वातावरण में यहां पर चर्चा हो । जिसके पास जो भी तर्क हों, जो भी उनका दृष्टिकोण हो वह उनके सदन में प्रस्तुत करें । लेकिन मान्यवर,, ऐसा लग रहा है कुछ लोग लोकतंत्र में विश्वास के बजाय लाठीतंत्र में विश्वास रखते हैं और उसका सहारा ले रहे हैं । यह लोकतंत्र के लिए बहुत बड़ा खतरा है सदन के अंदर भी और सदन के बाहर भी यह जो प्रवृत्ति बढ़ती चली जा रही है जोर जबरदस्ती और लाठीतंत्र इसकी जितनी निन्दा की जाय वह कम होगी। आज इस स्तर पर लोग आ जायं और जो घटना घटित हुई वह बहुत शर्मनाक है। मारपीट करना, जूता चप्पल चलाना चश्मे तोड़ना, घड़ी तोड़ना वह अत्यंत अनुचित है । जैसा एक माननीय सदस्य ने कहा यहां बाहरी व्यक्तियों का प्रवेश हो गया है हथियार बंद लोग यहां आ गये हैं । अगर यह सच है तो यह बहुत ही गंभीर बात है । हम सब की जिम्मेदारी है ऐसा कार्य न हो और सदन शांतिपूर्वक चले, शालीनता से चले लेकिन इसमें सत्तापक्ष की जिम्मेदारी कुछ ज्यादा बनती है। सत्ताधारी दल को उनके नेताओं को उसी बात की विशेष चिंता करनी चाहिए इस तरह से हंगामा न करें, हमारी भी जिम्मेदारी है उससे हम मुकरते नहीं है। जहां तक भारतीय जनता पार्टी का प्रश्न है आपने देखा होगा प्रातः काल से ही उत्तेजना के बावजूद हम शान्ति से सुन रहे हैं हम एक अनुशासित पार्टी के सिपाही हैं। हम चाहते हैं कि सभी दल इसका अनुपालन करें सदन शांतिपूर्वक चले ताकि आज इस महत्वपूर्ण विषय पर बहस चल सके और हम सब के दृष्टिकोण सामने आ जायं क्योंकि हम सब को जनता की अदालत में खड़ा होना है ताकि वह हमारे दृष्टिकोण को परख कर फैसला दे सके कि किसका क्या दृष्टिकोण है। जिसका दृष्टिकोण जनहित में है, किसका अनुचित है। किसका दृष्टिकोण जनमानस पर खरा उतरता है। सभी को अपना दृष्टिकोण तर्कों के साथ रखने का अवसर मिलना चाहिए। इन शब्दों के साथ में सभी दलों के नेताओं से, सभी विधायकों से प्रार्थना करूंगा इस उत्तेजित वातावरण में शालीनता बनाये रखें।

एक बात और कहना चाहता हूं कि आज का विषय कुछ ऐसा है उसमें उत्तेजना आयेगी, नोकझोंक होगी उसके लिए कलेजा रखें सुनने के लिए उसमें कहने में शालीनता होनी चाहिये उसमें तर्क देने के बजाय हाथापायी होने लगेगी तो लोकतंत्र खतरे में पड़ जायेगा और लाठीतंत्र हो जायेगा। इन शब्दों के साथ विशेष रूप से नेता सदन से कहना चाहूंगा उनकी ज्यादा जिम्मेदारी बनती है सदन में शान्ति बनाये रखने में उसके लिए उनका योगदान मिलेगा।

श्री रामचन्द्र बख्श सिंह–

श्रीमन्, जैसा माननीय नेता विरोधी दल ने कहा यह बहुत गम्भीर विषय है। मैं कहना चाहता हूं कि आपने 5 बजे तक का समय निश्चित किया है और 5 बजे बहस समाप्त हो जायेगी। तो दो घंटे ऐसे ही बीत गये हैं इसमें बहस नहीं हो पायी है और इस बीच जो कुछ हो गया है वह शर्मनाक है।

(समय एक बजे)

श्री रणजीत सिंह जूदेव–

मान्यवर, वोटिंग कितने समय होगी?

श्री अध्यक्ष–

5 बजे होगी।

श्री राम चन्द्र बख्श सिंह–

मैं निवेदन कर रहा था कि इस गम्भीर विषय पर बहस के बाद 5 बजे वोटिंग का समय निश्चित किया गया था लेकिन 2 घंटे का समय बिना बहस के चला गया लेकिन इस बीच जो हुआ वह संसदीय परम्पराओं का, लोकतंत्र का और हमारी विधान सभा की नियमावली का खुला दुरुपयोग हुआ है। इस सदन से प्रदेश की जनता प्रदेश में शान्ति स्थापित करने की अपेक्षा करती है और जनता का हक है कि वह मांग करे। हम सभी समय समय पर शांति व्यवस्था की बात करते हैं लेकिन जो आज यहां हुआ और सम्मानित विधायकों पर हमला करना एवं मारपीट करना अत्यन्त निन्दनीय है। इसमें किसी दल विशेष की बात नहीं है बल्कि पूरी विधान सभा का प्रश्न है हम लोग क्या चेहरा लेकर जनता के सामने जायेंगे। बल का सहारा लेकर और मारपीट के जरिए कोई चीज तय करेंगे तो इससे लोकतंत्र समाप्त हो जायेगा। इसलिए मान्यवर, आपसे और मा0 सदस्यों से, नेता सदन से अनुरोध करता हूं कि हम लोग जिस कार्य के लिए चुनकर आये हैं उसको करें और यदि विधान सभा नियमावली को रोज यहां तोड़ा जायेगा तो आई0 पी0 सी0 की धारा और कानून बाहर तोड़े जा रहे हैं उसको कहने का हमको कोई हक नहीं होगा। इसलिए सभी से अनुरोध है कि एक दूसरे पर हमला करना और मारपीट करना ठीक नहीं है। वेल में जाना अनुचित है, बीच-बीच में टोका-टोकी करना अनुचित है लेकिन मारपीट करना तो भयानक अपराध है। इसलिए अनुरोध है कि हम सभी लोग शालीनता से व्यवहार यहां करें और बहस जारी रखें।

श्री मूल चन्द्र–

मुझे भी सुन लें।

श्री अध्यक्ष–

यदि आवश्यक समझते हों तो मुख्य मंत्री जी को सुन लें।

श्री राज किशोर सिंह–

दो मिनट मेरी बात को सुन लिया जाये।

श्री अध्यक्ष–

ठीक है।

श्री राज किशोर सिंह–

मान्यवर, आज जिस गम्भीर विषय पर चर्चा करने जा रहे हैं वह प्रदेश की जनता की जिंदगी से बहुत संबंध रखता है और प्रदेश में आने वाले दिनों में कौन सरकार चलेगी इसका भी फैसला आज सदन करेगा। लेकिन जो यहां पर आज दृश्य उपस्थित हुआ वह शर्मनाक है और इसमें विशेष जिम्मेदारी शासक दल की है कि इस तरह की घटना को यहां पर न होने दें। मान्यवर, यहां एसेम्बली को अखाड़ा बना दिया गया और जिस तरह से मारपीट हुई है वैसे जबसे मैं यहां का सदस्य हुआ हूं ऐसी घटना कभी नहीं देखी थी। आज इस तरह से सदस्य अपमानित किये जायं, यह कतई बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए। मान्यवर, वेल में जाना न तो हम और न हमारी पार्टी ही पसंद करती है और न जाते हैं जब तक बहुत ही विषम परिस्थिति न हो किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरे पक्ष के लोग जो वेल में जायें तो उनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार और मारपीट की जाये, यह बहुत ही शर्मनाक घटना है। मैं चाहूंगा कि इस पर आप उचित कार्यवाही करें।

श्री शेख मोहम्मद सुलेमान–

मा0 अध्यक्ष महोदय और सदन के सभी सम्मानित सदस्यगण, आज प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश की निगाहें उत्तर प्रदेश असम्बली पर लगी हैं . . । अभी जो कुछ यहां मुझे देखने के लिए मिला–विधायकों के साथ मारपीट हुई, माननीय नेता सदन और मुख्य मंत्री जी को अपशब्द कहे गये, मुझको इसका बड़ा दुःख है । मैं अपने सभी सम्मानित सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि वह संयम बरतें संयम बरत कर ही वह अपनी-अपनी बात कहें और एक दूसरे के तर्क-वितर्कों को सुनें और करें। यदि यह परम्परा टूटेगी तो उत्तर प्रदेश के आवाम पर उसका बड़ा बुरा असर पड़ेगा । मैं चाहता हूं कि आप लोग संयम बरतें।

श्री रविदास मेहरोत्रा–

मान्यवर, दो मिनट में मुझे अपनी बात कह लेने दें, उसके बाद आप . . . (व्यवधान) ।

श्री अध्यक्ष–

आप कृपया बैठिये, आप कृपया बैठ जाइये । आपको जो कुछ कहना है, आप मेरे कक्ष में आकर कहें। मुझसे कहें (व्यवधान) आप बैठ जाइये।

श्री रघुवर दयाल वर्मा–

आप मान्यवर, एक मिनट का समय इन्हें अपनी बात कहने के लिए दे दें, इनको केवल एक मिनट में आप अपनी बात कह लेने दें . . ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

यदि मैं आपको दो मिनट देता हूं, तो मैं सबको दो-दो मिनट का समय दूंगा, जो आपके विपरीत भी बोलना चाहते हैं। तो इस तरह इसका कोई अन्त नहीं है। आप कृपया बैठिये (व्यवधान)

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

अध्यक्ष महोदय, अभी सम्मानित नेता विरोधी दल . . .

श्री मूल चन्द्र—

मैं नेता सदन से ही एक यह निवेदन करना चाहता हूं . .

(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव—

और सभी नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं . . .

श्री मूल चन्द्र—

मैं इनसे कहना चाहता हूं कि इन्होंने जो यहां हमें अपने सामने पिटवाया है, मुझे वह क्या पीट रहे हैं, आप खुद पिट जायेंगे ।

श्री अध्यक्ष—

मेरी बात सुनिये । आप मुझ से मिल लीजियेगा । इस तरह नहीं . . . (व्यवधान) जो सब लोगों ने यहां तय कर दिया है, अपने विचार रख चुके हैं, उसके अनुसार ही कार्यवाही होगी। (व्यवधान) ऐसे सदन नहीं चल पायेगा।

श्री मूल चन्द्र—

मान्यवर, मेरी बात आप सुन लें. . .

श्री मुलायम सिंह यादव—

अध्यक्ष महोदय मैं कह रहा था, आज जो घटना हुई है अशोभनीय है, शर्मनाक है और मुझे उसका अफसोस है । लोकतंत्र में जो सबसे बड़ी पंचायत है, उसका आचरण बाहर जनता भी देखती है और हम लोग बहुत विश्वास के साथ जनता का विश्वास लेकर यहां आते हैं । कोई भी इस तरह की घटना हो तो मैं नहीं पसन्द करता हूं । मैंने अफसोस भी जाहिर किया है और सभी माननीय सदस्यों से भी कहूंगा और विशेषकर मैं अपने पीछे बैठे हुए माननीय सदस्यों से अपील करूंगा, प्रार्थना करूंगा कि वह संयम और धीरज से काम लें । मेरी तरफ से इशारा हो तो वह कोई न बोला करें । इसी तरह सदन के माननीय सदस्यों से भी कहना है कि वह पहले अपने आचरण को भी ठीक रखें । यह स्थिति या समस्या कैसे शुरू हो जाती है, अशोभनीय घटनाएं क्यों हो जाती हैं इसलिए सबसे प्रार्थना करूंगा और आपसे भी विनम्र प्रार्थना है कि कोई ऐसा विषय हो . . (व्यवधान) सभी विपक्षी दलों के नेताओं और सम्मानित नेता विरोधी दल ने जो सुझाव रखे हैं, उनके सम्बन्ध में आप सभी की बैठक बुला लें जो हमारे देश की सबसे बड़ी विधान सभा है और इस विधान सभा की बड़ी परम्परायें रही हैं उच्च आदर्श रहे हैं, उन उच्च आदर्शों को, उन परम्पराओं को कायम रखने के लिए कभी भी बैठक बुलायें, लेकिन भविष्य में ऐसी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए । इन्हीं शब्दों के साथ जो आज घटना हुई मैं उसके लिए अफसोस व्यक्त करता हूं ।

श्री अध्यक्ष—

जो माननीय सदस्य इससे प्रभावित हुए हैं उससे मैं बहुत दुखी हूं मैं उनसे निवेदन करना चाहूंगा कि आप मुझसे कक्ष में आकर भेंट कर लें । आपकी बात को सुनकर सभी दल के नेताओं के साथ बैठकर इसमें गम्भीरता से निर्णय लिया जाएगा ।

(व्यवधान)

श्री मूलचन्द्र—

मान्यवर, मेरा चश्मा यह लोग ले लिए उसको तो दिला दें ।

(व्यवधान)

श्री भोला पाण्डेय—

पीठ को जूता दिखाया गया है इस सम्बन्ध में क्या व्यवस्था दे रहे हैं ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

मैं माननीय नेताओं के साथ बैठकर इन सदस्यों की बात सुनूंगा ।

मंत्रिपरिषद् में विश्वास का प्रस्ताव (क्रमागत)

श्री मुलायम सिंह यादव—

मान्यवर, मैं आपके सामने वह तथ्य रख रहा हूं कि उत्तर प्रदेश के सामने साम्प्रदायिक उन्माद क्यों है । सारे प्रदेश और देहात के लोग दहशत में क्यों हैं । इसके लिए कौन जिम्मेदार है ? यह देश के सामने आना चाहिए । इसलिए मैंने कहा था कि पत्रकार जिन्होंने इस [xxx] का पर्दाफाश किया था उनको नौकरी से निकाल दिया गया, तथ्यों को दबाने की कोशिश की गई काफी दबावों के बाद 19 अक्तूबर को. जबकि मुझे सब तरफ से जाल बिछाकर फंसाया जा चुका था और कारसेवकों को अयोध्या आने से रोकना लगभग असम्भव हो गया था, क्योंकि बहुसंख्यक हिन्दुओं की भावनाओं को [xxx] जा चुका था, तब जाकर सभी राजनीतिक दलों की बैठक बुलाई गयी और इसके बाद पूर्व प्रधान मंत्री ने 22 अक्तूबर को सभी मुख्य मंत्रियों की बैठक बुलाई थी। लेकिन तब तक जान बूझकर बहुत देर कर दी गयी थी । इस पर नहीं जाना चाहता हूं । लेकिन जो एकान्त में कहा वह कहना चाहता हूं राष्ट्रीय एकता परिषद् देश का सर्वोच्च राजनीतिक मंच है जिसके प्रति जनता का अगाध विश्वास है, जिसमें हिन्दुस्तान के सर्वोच्च नेता, पत्रकार, विद्वान और तमाम समाजसेवियों को, नेताओं को बुलाया गया था। वहां भी मैंने कहा कि केन्द्र सरकार ध्यान नहीं दे रही है, केन्द्र सरकार को दोषी ठहराया। यह देश का मामला है। इसके पीछे कारण क्या था? उसमें कांग्रेस पार्टी के नेता, कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष, माननीय राजीव गांधी, माननीय ज्योति बसु और माननीय इन्द्रजीत गुप्ता जो संसदीय परिषद् की बैठक में मौजूद थे । उन्होंने इसको गम्भीरता से लिया कि मुख्य मंत्री कह रहे हैं। केन्द्रीय सरकार अगर चाहती है कि राष्ट्रीय एकता बनी रहे तो केन्द्र सरकार की तरफ से स्पष्ट आदेश मिलने चाहिए। यह केवल अयोध्या का मामला नहीं है यह पूरे देश का मामला है। इसमें माननीय राजीव गांधी मा0 चन्द्रशेखर जी माननीय ज्योति बसु और माननीय इन्द्रजीत जी ने खुलकर मेरा समर्थन किया और कहा कि मुख्य मंत्री अगर यह बात कह रहे हैं तो यह बहुत गम्भीर मामला है यह भी कहा कि इसके लिए सारे देश के नेता मुख्य मंत्री की सराहना करते हैं और उनका समर्थन करते हैं। लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री ने एक शब्द भी नहीं कहा। 19 अक्टूबर, को सारे देश के नेताओं की बैठक बुलाई जाती है। 30 अक्टूबर निकट आ गया है । साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष की [xx] देने वाले [xxx] क्या नहीं जानते थे कि मन्दिर-मस्जिद विवाद के

नोट:—[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

सवाल पर प्रदेश की राक्षसी साम्प्रदायिक शक्तियों से मैदानी संघर्ष तो उत्तर प्रदेश सरकार ही कर रही थी? मैं यहां यह साफ कर दूं कि अगर श्री आडवानी भी उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री होते तो भी बाबरी मस्जिद नहीं टूटती और मैंने जो बाबरी मस्जिद बचाने के लिए किया उससे कम श्री आडवानी भी नहीं करते और यदि मौलाना बुखारी भी मुख्य मंत्री होते तो बाबरी मस्जिद को बचाने के लिए जितना मेरी सरकार ने किया, उससे ज्यादा नहीं कर सकते थे। बाबरी मस्जिद की रक्षा करके उत्तर प्रदेश की सरकार ने हजारों मन्दिरों और लाखों हिन्दुओं की जान की रक्षा की है। झगड़ा केवल अयोध्या का नहीं, पूरे प्रदेश का था। अगर मस्जिद गिर गयी होती तो यह विधान सभा जहां हम बैठे हैं और दिल्ली की संसद इनकी क्या सूरत होती, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह भी कहा कि केन्द्र सरकार भी इस मसले पर देख रही है। आगे अब आप जानें। मैं सावधान हो गया। इसके लिए मैं आभारी हूं कि उन्होंने मुझे सावधान कर दिया। 22 अक्टूबर को सारे हिन्दुस्तान के मुख्य मंत्रियों की बैठक होती है। मुख्य मंत्रियों की बैठक में हर पार्टी के मुख्य मंत्री थे। उस समय भी मैंने कहा कि प्रधान मंत्री जी आपने 8 महीने में क्या किया मुझे आज तक कोई जानकारी नहीं है, पूरी जिम्मेदारी ले रखी है, अकेले बुला लेते हैं। लन्च, डिनर करते हैं और मुझे गाली खिलवाते हैं। गोरखपुर का जो प्रस्ताव भारतीय जनता पार्टी ने दिया आप उस पर कुछ नहीं कह सकते, केवल मुलायम सिंह को गाली दिलवाते हैं लन्च डिनर करते रहते हैं। क्या इस गम्भीर मुद्दे पर मुख्य मंत्रियों की बैठक पहले नहीं बुलाई जा सकती थी? क्या राष्ट्रीय एकता परिषद् का विशेष अधिवेशन अयोध्या या लखनऊ में नहीं हो सकता था? इन सब कारणों से न्यायालय के सम्मान रखने के लिए और साम्प्रदायिक सौहार्द्र बनाए रखने के लिए मेरे पास प्रशासनिक कदम उठाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं छोड़ा गया। दूसरी तरफ, प्रचार करके मुझे अपमानित किया गया। इसका कारण एक और भी था, अध्यक्ष महोदय, जिसे मैं यहां स्पष्ट कर देना चाहता हूं ताकि देश को सच्चाई का पता चले। दहिया ट्रस्ट की गड़बड़ियों और घोटाले की जांच करने की मांग करने वालों में मैं भी शामिल था। दहिया ट्रस्ट की बेईमानी का पर्दाफाश करने और जांच की मांग को लेकर राष्ट्रीय मोर्चा के प्रधान मंत्री [xxx] मुझसे नाराज रहे हैं। वह चाहते थे कि किसी तरह मुख्य मंत्री पद से मुझे हटा दिया जाये। इसका एक कारण दहिया ट्रस्ट की वजह से हुई रंजिश है। भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिन्दू परिषद् का सहारा लेकर साम्प्रदायिक तनाव और दो सम्प्रदायों में द्वेष फैलाने की कीमत पर भी यह काम करने की कोशिश की गयी। मैं हिन्दू विरोधी हूं। मुझे हिन्दू विरोधी इसलिए कहा गया क्योंकि मैं पिछड़ी जाति का हूं। कहा गया कि मेरी मां मुसलमान की बेटी है क्योंकि मैं किसान का, गरीब का बेटा हूं, मैं गांव से आकर इस कुर्सी पर बैठा हूं। इसीलिये मुझे हिन्दू विरोधी और मेरी मां को मुसलमान की बेटी कहा गया। मैं कहना चाहता हूं मान्यवर कि जो अपने को हिन्दू समझते हैं, जिन्होंने हिन्दुत्व का ठेका ले रखा है उनसे कहीं अच्छा आचरण हमारा और हमारे साथियों का है। उनसे कहीं बेहतर आचरण है। मैंने 19 महीने जेल में रहकर देखा है। मैं हिन्दू विरोधी नहीं हूं। मैं मन्दिर बनाने का विरोध नहीं करता हूं। अयोध्या में ही नहीं तमाम जगहों पर मन्दिर बनें।

नोट:–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

चित्रकूट में भी मंदिर बने । जहां कुत्ते गंदा करते हैं उन मंदिरों को भी ठीक किया जाय । हम मंदिर बनाने का विरोध नहीं कर रहे हैं लेकिन अयोध्या में राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद विवादग्रस्त स्थल है और उच्च न्यायालय में इसका मामला लम्बित है । बात-चीत के द्वारा ही इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है । यदि बात-चीत के द्वारा कोई समाधान नहीं निकलता है इस समस्या का तो न्यायालय के निर्णय का इन्तजार करना होगा । अयोध्या में पुराने शिलान्यास की तिथि को अशुभ बताकर नया शिलान्यास करवाने की कोशिश करने वाले द्वारिकापीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी को बहुत दुखी मन से और बड़ी मजबूरी में हमें गिरफ्तार करना पड़ा, क्योंकि इस शिलान्यास से न्यायालय के आदेश की अवमानना होती थी । उनकी गिरफ्तारी के लिए मैंने उनसे, पूरे प्रदेश और देश की जनता से खेद व्यक्त किया क्योंकि मेरे मन में भी शंकराचार्य जी के लिए अपार श्रद्धा है । लेकिन यह एक प्रशासनिक दायित्व था, जिसका अनुभव श्रद्धेय शंकराचार्य जी ने भी किया था । गिरफ्तारी के बावजूद इसीलिए उनके मन में सरकार के विरुद्ध कोई रोष या गुस्सा नहीं है। विश्व हिन्दू परिषद् के सारे नेताओं के नाम मेरे पास कागज में हैं, अभी बताता हूं । मान्यवर, जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं उनमें हैं श्री दाऊ दयाल खन्ना, श्री श्रीशचन्द्र दीक्षित, श्री ओंकार भावे, श्री महेश नारायण सिंह, श्री सुरेश गुप्ता, श्री अशोक सिंघल, महंत अवैध नाथ, महंत नृत्य गोपाल दास, इन्होंने दस्तखत किये हैं कि हम अदालत के फैसले का इंतजार करेंगे । लेकिन ऐसा न करके भगवान राम को वोट की राजनीति से जोड़ा जा रहा है। अचानक न्यायालय का सम्मान की न मान कर इस समझौते का उल्लघंन क्यों किया गया ? श्री आडवाणी जी ने अब तो खुद भी मान लिया है कि उनकी रथयात्रा विशुद्ध राजनैतिक यात्रा थी। इसका सबूत यह भी है कि मस्जिद को नुकसान पहुंचाये बिना मन्दिर बनवाने की बात झूठी हुई। दंगा कराने की कोशिश की गयी । अध्यक्ष महोदय, अगर सिर्फ मन्दिर ही बनाना होता, तो मस्जिद की चोटी पर चढ़ने, झंडा फहराने और तोड़-फोड़ का प्रयास करने की क्या जरूरत थी?

यहां पर यह भी उल्लेख करना मैं जरूरी समझता हूं कि पालमपुर (हिमांचल प्रदेश) में भारतीय जनता पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक में जो प्रस्ताव पास किया गया, उससे बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। प्रस्ताव में कहा गया कि अयोध्या के विवाद पर विश्व हिन्दू परिषद् का जो भी फैसला होगा, उसे भारतीय जनता पार्टी मानेगी । इसका अर्थ यह हुआ कि विश्व हिन्दू परिषद् को ढाल बनाया गया है जो वार्ता का काम करेगी और एक धार्मिक मुद्दे पर विश्व हिन्दू परिषद् के काम का राजनैतिक लाभ भारतीय जनता पार्टी उठायेगी। धर्म के नाम पर एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में राजनीति करने का अध्यक्ष महोदय, यह एक ऐतिहासिक प्रयास है और यह प्रचार किया गया कि यह मुख्य मंत्री विदेशी है। सारे हिन्दुस्तान के लोगों ने जैसे चढ़ाई की उत्तर प्रदेश के ऊपर । मध्य प्रदेश की सरकार के एक मंत्री ने प्रेस कांफ्रेंस की और कहा कि 20 लाख लोग मध्य प्रदेश से आयेंगे। जिस सरकार ने अपने अधिकारियों को लेकर सरकारी साधनों का दुरुपयोग करके उत्तर प्रदेश की शांति व्यवस्था भंग करने की कोशिश की है राजस्थान और मध्य प्रदेश । इन दोनों सरकारों को केन्द्र सरकार भंग करे यह मैं कहना चाहता हूं । मैं यह भी कहना चाहता हूं कि मैंने कभी भी भारतीय जनता पार्टी का समर्थन नहीं मांगा है । मैं तब

रखना चाहता हूं । इटावा से लेकर ग्वालियर तक 25–30 हजार लोग आ गये राइफलें और बन्दूकें लेकर। क्या मंदिर बनाने के लिए लोहा चाहिए, ईंटा चाहिए, तलवार चाहिए, कट्टा चाहिए? मध्य प्रदेश की सरकार ने तमाम अपराधियों को जेल से निकाल कर, हथियार देकर, इटावा पर चढ़ाई कर दिया। मैं पूछना चाहता हूं कि अयोध्या का रास्ता इलाहाबाद होकर है या इटावा होकर है?

(व्यवधान)

मान्यवर, यही नहीं, एक बहुत बड़े डकैत ने हमें और हमारे परिवार को चुनौती दिया है, भूतपूर्व कुख्यात डकैत ने चुनौती दिया है। वह कार सेवा में था। यही नहीं, गांव-गांव जाकर राम ज्योति के नाम पर, विजय यात्रा के नाम पर उत्तेजनात्मक नारे, दीवारों पर नारे लगाया यह कह कर कि हिन्दू राष्ट्र बन कर रहेगा, संविधान की धज्जियां उड़ा दीं। यही नहीं, यह कह कर नारे लगाये गये कि मुसलमानों का स्थान [xxx] । यह नारे लगाने वाले हिन्दू क्या मुसलमानों के शुभचिन्तक हैं ? मैं आज भी कहना चाहता हूं कि मन्दिर के खिलाफ मैं नहीं हूं, लेकिन जब तक अदालत का फैसला नहीं हो जाता है, तब तक मस्जिद तोड़ने की इजाजत नहीं दी जायगी । यह मेरी राजनैतिक जीवन की सबसे कठिन चुनौती है। मेरा मुख्य मंत्रित्व दांव पर लगा हुआ है, लेकिन किसी तरह से भी अदालत के फैसले के बिना और बातचीत के बिना मस्जिद तोड़ने की इजाजत नहीं दी जायगी ।

(व्यवधान)

श्री मोती लाल वोहलवी–

मस्जिद कैसे टूटी ?

श्री मुलायम सिंह यादव–

जब राम ज्योति के नाम पर उन्माद बढ़ाया गया, तो हमको एहसास हो गया कि दंगा कराने की पूरी साजिश हो गयी है, यह मंदिर नहीं बनाना चाहते हैं । अगर मंदिर ही बनाना होता, तो क्या मस्जिद की चोटी पर चढ़ जाते। यह उनकी [xxx] थी। तो मान्यवर, जब यह उन्माद फैला, तो मैंने 5 अक्टूबर को केन्द्रीय सरकार को लिखकर पत्र दिया, मौखिक रूप से कहा, हमने लिखित दिया हमारे चीफ सेक्रेटरी और सेक्रेटरी ने लिखकर दिया, हिंसा रोकने के लिए, कुछ खास-खास लोगों को, जो उत्तेजना फैला रहे हैं, उनको मैं गिरफ्तार करना चाहता हूं । उनके 23 लोगों की सूची मैंने बनाई। 4/5 की रात को गिरफ्तार कर दिया । वहां से टेलीफोन आता है कि मेरी पटना में आरक्षण समर्थक रैली है, इससे हमारी रैली पर असर पड़ेगा, मैंने कहा कि क्या असर पड़ेगा ? असर पड़ा नहीं । 4/5 अक्टूबर की रात को गिरफ्तारी हुई । हमारी 12 अक्टूबर को रैली थी । जितने दंगा फैलाने वाले लोग थे, भूमिगत हो गये। वे लोग हमारे अधिकारियों को गुप्त रूप से टेलीफोन करते थे ।

(व्यवधान)

जो सबसे ज्यादा उन्माद फैला रहे थे, हिंसा कराने की [xxx] कर रहे थे, हिन्दू-मुसलमानों के दंगे कराने की [xxx] कर रहे थे, सीधे प्रधान मंत्री का जहाज फैजाबाद के

नोट:–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

लिए गया, मुझे पता ही नहीं चला । मुझे सुबह पता चला कि जहाज फैजाबाद जाने वाला है । उस समय मैंने तत्कालीन प्रधान मंत्री से कहा कि जहाज फैजाबाद क्यों जा रहा है ? वहां से किस-किस को लाना है? वह जो लोग दंगा कराना चाहते हैं, हिंसा फैलाना चाहते हैं, विस्फोटक स्थिति पैदा करना चाहते हैं, साम्प्रदायिकता फैलाना चाहते हैं, उन्हीं को जहाज लेकर जायेगा तो प्रशासन पर क्या असर पड़ेगा । मैंने कहा मैं नहीं चाहता हूं कि जहाज जाय फैजाबाद और अगर जाय तो सूची दीजिए । मुझे सूची दी गयी। तो मुझे सूची दी गयी और कहा गया कि इनको गिरफ्तार न किया जाय । ये वे लोग हैं जिन्होंने पूरे देश के वातावरण को खराब किया। मान्यवर, भारत सरकार का कानपुर के अन्दर जहाज उतरा और 15 की सूची दी गयी थी, जबकि 25 लोगों को ले गये और जाकर उत्तर प्रदेश भवन में उनको ठहराया, उनका इन्तजाम किया और धीरे-धीरे अयोध्या पहुंचा दिया । सबको पहुंचा दिया, 2-3 लोग पकड़ में आये । 2 को मैंने पकड़ा दिया । मैनपुरी के सांसद उदय प्रताप सिंह के माध्यम से 18 अक्टूबर को मेरी सरकार से कहा गया कि इन लोगों को छोड़ दो। मैंने कहा क्यों छोड़े उनको छोड़ने से साम्प्रदायिकता बढ़ जायेगी। उदय प्रताप सिंह जी से टेलीफोन करा दिया कि छोड़ दो तो आखिर मुझे छोड़ना पड़ा । इनके नाम हैं (1) अयोध्या के आचार्य हरि आचार्य जगतगुरू रामानन्द जी (2) श्रीमठ काशी के जगत गुरू रामानंद राम नरेशाचार्य जी (3) मणिराम छावनी, अयोध्या के महंत नृत्य गोपाल रामदास जी (4) दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के महंत-परमहंस रामचन्द्र दास जी (5) हनुमान गढ़ी, अयोध्या के महंत-ज्ञानदास जी (6) निर्मोही अखाड़ा अयोध्या के महंत-राम केवल दास जी (7) लक्ष्मण किला अयोध्या के महंत—सीताराम शरण जी (8) अयोध्या के महंत-पुरुषोत्तमाचार्य रामानुजाचार्य (9) वृन्दावन (मथुरा) के महंत-वासदेव महाराज (10) मुगुध आश्रम सहारनपुर के स्वामी नित्यानन्द (11) भारत माता मन्दिर हरिद्वार के महंत-सत्य नित्यानन्द (12) ऋषिकेश के महामण्डलेश्वर-स्वामी विद्यानंद गिरि (13) कौशलेश मंदिर, अयोध्या के-रामानुजकांत वासुदेवाचार्य (14) अध्यक्ष, भारत कारसेवा समिति—वासुदेवानंद (15) प्रयाग के शांतानंद श्री शंकराचार्य (अयोध्या के महंत)। ये वो लोग थे जिन्हें सुरक्षित, गुपचुप फैजाबाद ले जाया गया और सरकारी वाहन का उपयोग दंगा करने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए किया गया । यह देश की सर्वोच्च कुर्सी पर बैठे व्यक्ति द्वारा आदमियों की (तस्करी) का मामला नहीं तो और क्या है? जो हिन्दुस्तान के सबसे बड़े नेता हैं, इन नेताओं को मैंने बताया था कि राष्ट्रीय मोर्चा के प्रधान मंत्री [xx] कर रहे हैं मेरे खिलाफ । इन सात नेताओं के नाम मैं सदन के अन्दर ले रहा हूं इन नेताओं में थे—पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री माननीय ज्योतिबसु, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के श्री इन्द्रजीत गुप्ता, श्री मधुलिमये। यही नहीं मैंने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता जगदीश नारायण त्रिपाठी को राम सुमेर यादव को बताया, कम्युनिस्ट पार्टी के डा0 जेड0 ए0 अहमद को बताया । श्री हरिकिशन सुरजीत को, श्री देवीलाल जी को और श्री चन्द्र शेखर जी को भी बताया। मैंने सारे नेताओं को बात बताई (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

अगर कोई रिफरेंस नहीं है तो हटा देंगे ।

नोट:—[xx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री मुलायम सिंह यादव—

यही नहीं, लाखों लोगों की भीड़ में उस समय मैंने उद्योग मंत्री के सामने कहा।

(व्यवधान)

(कुछ सदस्यों द्वारा मुख्य मंत्री द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री के नाम लिए जाने पर आपत्ति प्रगट करने पर)

श्री अध्यक्ष—

देखिये अगर कोई उल्लेख किसी संबंध में ऐसा है कि आवश्यक है तो रहेगा, यदि अनावश्यक है तो हटा दिया जायगा। आपने निर्णय सुन लिया, बैठ जायें।

श्री रघुवर दयाल वर्मा—

मान्यवर, सामान्य भावनाओं के विपरीत, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि उधर बैठे लोग जो कहते हैं कि "बैठो", ऐसे लोगों को आप रोकें।

श्री अध्यक्ष—

मैंने निर्णय दे दिया। अगर कोई उल्लेख अनावश्यक आया है तो हटा दिया जायगा, आवश्यक है और आक्षेप नहीं है तो बना रहेगा।

श्री मुलायम सिंह यादव—

मान्यवर, 12 अक्टूबर को लाखों लोगों के सामने भारत सरकार के उद्योग मंत्री की तरफ इशारा करके मैंने पुनः कहा कि घुटन में हूं दिल्ली सरकार के खेमें से। दिल्ली सरकार की राय साफ होनी चाहिये। दिल्ली सरकार को मोह नहीं होना चाहिए कुर्सी का। उद्योग मंत्री ने कहा कि बात सरकार की है, आपको मोह होना चाहिये। मैंने उस समय कहा कि लाखों की जान बचानी होगी तो दिल्ली की सरकार को नहीं बचाऊंगा, लाखों की जान बचाऊंगा। बाईस अक्टूबर को सारे मंत्रियों के सामने यह बात कही, समाचार पत्र पढ़ लें। मैंने कहा कि केन्द्रीय सरकार नहीं बचा सकती है, लाखों लोगों की जान खतरे में है।

श्री राज किशोर सिंह—

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है। मा0 मुख्य मंत्री जी कह रहे हैं कि हमने पश्चिमी बंगाल के मुख्य मंत्री ज्योति बसु से कहा, इंद्रजीत गुप्त जो सी0 पी0 आई0 के जनरल सेक्रेटरी हैं, उनसे कहा। बंगाल के मुख्य मंत्री जो इस सदन के सदस्य नहीं हैं, इंद्रजीत गुप्त, रामसुमेर यादव, जगदीश त्रिपाठी जो इस सदन के सदस्य नहीं हैं, क्या उनके बारे में इस तरह से दृष्टांत दिया जा सकता है? कृपया अपनी व्यवस्था दें।

श्री मुलायम सिंह यादव—

मान्यवर, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता..

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

क्या हर मा0 सदस्य को निर्णय बार-बार बताता रहूं। एक बार निर्णय हो चुका है।

श्री रघुवर दयाल वर्मा—

मान्यवर, मा0 मुख्य मंत्री के बीच में और लोगों से क्या बात हुई, जिन माननीय

लोगों के नाम लिये गये हैं, वे इस सदन के सदस्य नहीं हैं उनकी बात यहां नहीं आ सकती हैं, इसलिये आप इनको रोक दें ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

जनता को जानकारी होनी चाहिये । इससे ज्यादा गम्भीर स्थिति और क्या होगी? इतना बड़ा सवाल और कोई नहीं है। यही नहीं, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री हरकिशन सिंह सुरजीत को मैंने कई बार बताया । यही नहीं जब श्री हरकिशन सिंह सुरजीत को पता चला कि बात सच है तो फिर श्री राम सुमेर यादव और हरकिशन सिंह सुरजीत हमारे पास आए । मैंने कहा कि ये लोग देश को [xxx] रहे हैं, हिन्दू मुसलमान की अलग-अलग बात करके [xxx] यह मैंने कहा । नाम लेकर इसलिए कह रहा हूं कि श्री सुरजीत, मधुलिमये, इन्द्रजीत गुप्त, राम सुमेरजी इसका खण्डन करें । जितने नेताओं का नाम लिया है, अगर मैं गलत रहा हूं तो वह इसका खण्डन करें, इसलिये मैंने कहा । और मेरे समझ में आया कि मान्यवर पूरी [xxx] थी यही नहीं मध्य प्रदेश से एक बयान आता है कि रथयात्रा को रोको और आडवानी जी का बयान आता है कि मेरी [xxx] बात हो गयी है, तत्कालीन प्रधान मंत्री जी से । और मुलायम सिंह से मैं सहमत नहीं हूं । जयपुर से आडवाणी जी का बयान आता है कि आज ही मेरी टेलीफोन पर राष्ट्रीय मोर्चा के प्रधान मंत्री से बातचीत हुई है कि मैं मुलायम सिंह से सहमत नहीं हूं। यह [xxx] चल रही थी भारतीय जनता पार्टी और तत्कालीन प्रधान मंत्री की । और क्यों साजिश थी ? मेरा अपराध था कि 'अंग्रेजी हटाओ और राष्ट्रीय भाषाओं को आगे लाओ' यह मैंने कहा । जब यह बात करके अंग्रेजी हटायी और हिन्दी में कामकाज किया बहुत तेजी के साथ उत्तर प्रदेश में तो प्रधान मंत्री ने मुझसे बुलाकर कहा कि दक्षिण के लोग नाराज हो गये हैं । स्वयं तत्कालीन प्रधान मंत्री ने मुझसे बुलाकर कहा कि दक्षिण के लोग नाराज हो रहे हैं । स्वयं प्रधान मंत्री हम से कहते हैं कि अंग्रेजी के सवाल पर कुछ किया तो नाराज होंगे दक्षिण के लोग । स्वयं तत्कालीन प्रधान मंत्री ने प्रचार कर दिया कि दक्षिण नाराज है ।

(व्यवधान)

आप पूरी बात सुनें । आरक्षण विरोध का आंदोलन चल रहा था, तो मैंने समझ लिया कि [xxx] है। मैं हैदराबाद, मदुराई और मध्य प्रदेश गया, मैंने करुणानिधि जी से बातचीत की, मैंने डा0 चैन्ना रेड्डी, आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री से बातचीत की । बात हुई कि हिन्दुस्तान में भारतीय भाषाओं को बढ़ाया जाय, इन भारतीय भाषाओं की तरक्की हो । हम से दोनों मुख्य मंत्री सहमत हुए । कोई भी दक्षिण का नाराज नहीं हुआ है । हमने कोई अपराध किया है? अगर कोई सिद्ध कर दे कि भारतीय भाषाओं को बढ़ाना और उत्तर प्रदेश में अपनी भाषा, मातृभाषा हिन्दी को लागू किया जाना कोई सिद्ध कर दे कि मेरा अपराध है मेरा गुनाह है तो आज ही मैं मुख्य मंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए तैयार हूं ।

(सत्ता पक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट)

नोट :-[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

भाषा नीति के सवाल को लेकर मैंने यह किया । भारतीय जनता पार्टी से बड़ी उम्मीद थी कि 'अंग्रेजी हटाओं' के सम्मेलनों में उनके नेता साथ देंगे । इस सवाल को लेकर के मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री, राजस्थान के मुख्य मंत्री और हिमांचल प्रदेश के मुख्य मंत्री–तीनों की सहमति थी कि अंग्रेजी हटे । इन्दौर में 11 अगस्त, को बुलाया और सम्मेलन का उद्घाटन कराया गया। लेकिन एक मुख्य मंत्री को भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेता ने कहा, हवाई अड्डे पर कहा कि क्यों जा रहे हो । लेकिन वह मुख्य मंत्री फिर आ गये । फिर 11 सितम्बर, को राजस्थान भवन में मीटिंग तय हुई राजस्थान के मुख्य मंत्री की सहमति से, मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री की सहमति से, हिमांचल प्रदेश के मुख्य मंत्री की सहमति से । 11 सितम्बर को राजस्थान भवन में बैठक हुई अंग्रेजी हटाने के लिये और एक ही दिन में तीनों मुख्य मंत्रियों को टेलीफोन हुआ कि अब इस मीटिंग को न रखा जाय । यह बात थी । मैंने कहा आप लोगों सुन तो लें कि आपके नेता अंग्रेजी के नाम पर लंदन की तरफ देख रहे हैं और मंदिर के नाम पर अयोध्या की तरफ देख रहे हैं, यह दोहरी चरित्र नहीं चलेगा । आप हिन्दूवाद की बात करते हैं, रथयात्रा चलाते हैं और अंग्रेजी की वकालत करते हैं। इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती है ? मुझे खुशी इस बात की है कि हम अंग्रेजी हटाकर उत्तर प्रदेश में हिन्दी लाये, भारतीय भाषा लाये। एक भी मुस्लिम नेता ने विरोध नहीं किया था । केवल भारतीय जनता पार्टी के नेता ने विरोध किया।

(भारतीय जनता पार्टी की ओर से झूठ-झूठ की आवाजें)

यह आप उनसे पूछिये जो रथयात्रा चलाते हैं, उनसे पूछिये, अखबार बताता है पूरे हिन्दुस्तान को पता है कि भारतीय जनता पार्टी के नेता [xxx] अंग्रेजी के नाम पर लंदन और मंदिर के नाम पर अयोध्या यह दोहरे चरित्र की बात करते हैं । हिन्दुत्व की बात करते हैं ? मंदिर तो हम भी बनाना चाहते हैं । हम चाहते हैं कि मंदिर बने । हम लोग भी सहयोग करेंगे । तो मान्यवर इसके लिए नाराजगी यह ठीक नहीं है ।

यही नहीं उसके बाद मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू भी की गयीं । मण्डल आयोग की सिफारिशें पूरी तरह से लागू करने के पक्ष में मैं हूं । मान्यवर, चिट्ठी दिखा दूंगा कि जो अपने को नम्बरदार बनाना चाहते हैं उनका आरक्षण नीतियों से दूर का रिश्ता भी नहीं है । इन्होंने पूरी तौर से मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू नहीं कीं । सारे प्रदेश में लिख दिया गया कि जो लागू करना चाहे वह लागू करे जो नहीं चाहता है न करे । यह नीति पालन करते हैं ? यही नहीं सारे मुख्य मंत्रियों को चिट्ठी लिखी गयी कि आप सहमति दें कि मण्डल आयोग के बारे में आपकी क्या राय है । 31 अक्टूबर को जब सारे देश के मुख्य मंत्री दिल्ली बुलाये गये थे तो मैंने कहा था कि चुनावी घोषणा पत्र में जो लिखा था क्या वह बदल गया है । मान्यवर, चुनावी घोषणा पत्र किसी पार्टी के लिए उतना ही पवित्र होता है जितना कि हमारा देश का संविधान पवित्र है । मैं यहां पर यह भी कहना चाहता हूं कि 27 प्रतिशत आरक्षण के संबंध में हमने जो कलम चला दी है उससे हम पीछे हटने

नोट :–[xx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

वाले नहीं हैं । फिर मुझसे कहा जाता है, तत्कालीन प्रधान मंत्री स्वयं कहते हैं कि सभायें करो, आरक्षण समर्थक रैलियां करो ।मैंने कहा कि बोट क्लब पर आपके दो मंत्रियों ने जो कर रखा है उसे दिल्ली भोग रहा है । आप दिल्ली में आरक्षण समर्थक रैलियां करिये किन्तु उत्तर प्रदेश को रहने दीजिये । हमारे प्रदेश में इसकी जरूरत नहीं है। आपके मंत्रियों ने आह्वान किया कि सड़कों पर आयें उसका नतीजा दिल्ली भोग रहा है । मैंने ऊंची जाति के लोगों से प्रार्थना की और पिछड़ी जाति के लोगों से एलान करके कहा कि कोई सड़क पर न आये। मैंने ऊंची जाति वाले लोगों से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि वह इसे स्वीकार करें । उसका नतीजा यह हुआ कि सबसे ज्यादा आरक्षण विरोध चलना था उत्तर प्रदेश में, किन्तु सबसे कम चला है । हम तो हर पार्टी का सहयोग मांगते हैं, जनता का सहयोग मांगते हैं, लेकिन तत्कालीन प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि उत्तर प्रदेश में आरक्षण समर्थक रैली करा दो । मैंने कहा कि क्या देश में आग लगाना चाहते हैं?

हमारे महात्मा गांधी का सपना था कि 'हिन्दू, मुस्लिम, सिख-ईसाई, आपस में सब भाई-भाई,' उनको जोड़ना चाहते थे यह लोग। भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिन्दू परिषद् और तत्कालीन प्रधान मंत्री ने इस देश को आज बारूद के ढेर पर खड़ा कर दिया है। जब हमने आग से बचाने के लिए कांग्रेस का समर्थन लिया, तो कहते हैं कि कांग्रेस का समर्थन ले रहे हो । मैंने तो खुलेआम कांग्रेस का समर्थन लिया है और आप लोग [xxx] से समर्थन ले रहे थे। कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष ने लोक सभा के अन्दर दो लोगों के नाम लेकर कहा कि यह लोग आखिरी समय तक कांग्रेस का समर्थन मांगते रहे, जिसमें से एक राष्ट्रीय मोर्चा के प्रधानमंत्री भी थे। आज यह लोग हमसे कहते हैं कि कांग्रेस का समर्थन ले रहे हो ? आज देश गंभीर संकट में है, आज देश टूटने के कगार पर है, ऐसी स्थिति में हमें चुनना था कि देश बचे । लेकिन तत्कालीन प्रधान मंत्री ने हिन्दू मुसलमानों को [xxx] मुसलमान कहते हैं कि 9 बजे तक हम बैठे रहे, लेकिन अध्यादेश का हमें कोई पता तक नहीं । यह विश्व हिन्दू परिषद्, भारतीय जनता पार्टी और तत्कालीन प्रधान मंत्री की तिकड़ी ने आपस में [xxx] करके देश में आग लगाने की कोशिश की । मेरे लिये मुख्य मंत्री पद का सवाल नहीं है, मेरे आगे देश का सवाल है । इसलिये मैंने धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई के लिये आह्वान किया, पूरे देश की पार्टियों से आह्वान किया। मैं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी का आभारी हूं, उनको धन्यवाद देता हूं कि वह इस लड़ाई में हमारे साथ बराबर खड़े रहे और पूरी तरह से समर्थन दिया । मैं आज भी इन लोगों से प्रार्थना करना चाहता हूं कि सारे भेदभाव भुलाकर हमें इन साम्प्रदायिक ताकतों को कमजोर करना है। इसके लिए जरूरी है कि हम और आप साथ खड़े रहें । कांग्रेस पार्टी ने और उनके नेता ने 22 सितम्बर को ही हमें समर्थन का एलान कर दिया था, यह लोग तब क्यों नहीं बोले कि समर्थन ले रहे हो ?आज यह लोग हमारी आलोचना करते हैं, तब क्यों नहीं कहा कि कांग्रेस पार्टी ने गलत काम किया है? तब तो इनके नेताओं ने मेजें थपथपाई थीं। कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष ने मद्रास के अन्दर 22 सितम्बर को ही हमें समर्थन का एलान कर दिया था। इन लोगों को इस तरह का दोहरा आचरण नहीं करना चाहिए। मैंने शुरू में ही कहा था, जिस दिन

नोट :-[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

मैंने शपथ ली थी, और आज भी कहना चाहता हूं कि देश को बचाने के लिए मुझे कांग्रेस का समर्थन लेना था और मैंने कांग्रेस पार्टी का समर्थन लिया है और आगे भी लूंगा। आज इन लोगों को शर्म आनी चाहिए। हमारे श्रद्धेय नेता चौधरी चरण सिंह जी के सामने भी ऐसी स्थिति आयी थी, तब उन्होंने कांग्रेस पार्टी का समर्थन लिया था। मुझे ताज्जुब होता है कि उन्हीं के अनुयायी, उन्हीं के उत्तराधिकारी, अपने को कहने वाले आज इस तरह की बातें कर रहे हैं। मैंने पहले ही कहा था कि आप उनकी सम्पत्ति ले लो, उनकी खेती ले लो, लेकिन चौधरी चरण सिंह के विचारों का असली उत्तराधिकारी मुलायम सिंह ही है। इन लोगों को शर्म नहीं आती, जो अपने नेता के उत्तराधिकारी होने का दावा करते हैं। इन लोगों को 1979 की घटना का क्या पता नहीं है? जब चौधरी साहब प्रधान मंत्री बने थे, उस समय उन्होंने कांग्रेस पार्टी का समर्थन लिया था। ये प्रमाण है कि उस समय इन्दिरा जी ने राष्ट्रपति को स्वयं लिखकर दिया था कि मेरा समर्थन चौधरी चरण सिंह को है। अध्यक्ष महोदय आप देखते हैं कि कितनी [xx] की फसल यह लोग काट रहे हैं। राष्ट्रपति जी के यहां स्व0 श्रीमती इन्दिरा गांधी जी का लिखा हुआ पत्र है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि मैं श्री चौधरी चरण सिंह जी को समर्थन देती हूं।

कुंवर रेवती रमण सिंह उर्फ मणि जी–

मान्यवर, यहां पर झूठ व झूठा शब्द का प्रयोग हो रहा है। कृपया इस शब्द को कार्यवाही से निकाल दें।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, ये तो मेरे दोस्त हैं। मैं इसलिए बोलना नहीं चाहता हूं कि ये मुझे परिवार का मानते रहे हैं। "सूप बोले तो बोले चलनी क्या बोले, जिसमें बहत्तर छेद" इसलिए मैंने कांग्रेस का समर्थन लिया। उत्तर प्रदेश में आज पानी की कमी है, किसान का खेत सूख रहा है, किसान को बिजली नहीं मिल पा रही है। विकास के कामों में हमें जुटना है। हम चाहते हैं कि प्रदेश की आमदनी बढ़े लेकिन विश्व हिन्दू परिषद् के लोग मन्दिर के नाम पर अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं। यही नहीं अध्यक्ष महोदय, समय आने पर मैं फिर बता दूंगा। बैंक का नाम बता दूंगा और खाते को बता दूंगा। यही नहीं विश्व हिन्दू परिषद् ने 37 करोड़ रुपए दिल्ली के बैंक से निकाला मैं कभी भी प्रदेश की जनता के सामने व इस असेम्बली में बिना तथ्य के नहीं बोलता हूं। दिल्ली की सरकार को लिखूंगा कि इसकी जांच होनी चाहिए कि विश्व हिन्दू परिषद् यह पैसा कहां से ला रहा है। आज देश की एकता कायम करने के लिए और साम्प्रदायिक शक्तियों को नेस्तनाबूद करने के लिए सारे धर्मनिरपेक्ष पार्टियों से आग्रह करता हूं कि प्रदेश के विकास के लिए आप हमें समर्थन दें और हमारा सहयोग करें। धन्यवाद।

नोट:-[xx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

नेता विरोधी दल (श्री नारायण दत्त तिवारी)–

मैं दुखी अन्तर्मन से इस प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त करने के दायित्व का निर्वहन कर रहा हूं। दुःख इसलिए कि आज हम देश के सबसे बड़े प्रदेश, उत्तर प्रदेश की विधान सभा में ऐसे प्रस्ताव पर विचार कर रहे हैं जिसके निर्णय पर हमारे देश के संविधान के बुनियादी सिद्धान्त उनकी मर्यादा, प्रदेश में शासकीय व्यवहार व प्रक्रिया के भविष्य की बुनियाद खड़ी है। आज उत्तर प्रदेश ही नहीं हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों के चारों ओर देखें कि कश्मीर में क्या हो रहा है, पंजाब में क्या हो रहा है, असम में क्या हुआ है और तमिलनाडु में क्या होने की सम्भावना है। इस प्रकार पूरे भारतवर्ष में, खासकर सीमा वाले राज्यों में राष्ट्रीयता, एकता व अखण्डता की शक्तियां बराबर क्षीण हो रही हैं। एक तरफ पैशाचिक आतंकवादी तांडव हो रहा है, वहीं दूसरी ओर हमारे देश में व उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिकता का ज्वार कितने ही स्थानों में फैला हुआ है। कहीं पर कर्फ्यू है तो कहीं पर धारा 144 लगी है।

रांची से लेकर केरल तक और पश्चिम बंगाल से गुजरात तक आज निर्दोष लोग मर रहे हैं। कट्टर पंथी साम्प्रदायिकता के इस नंगे उन्माद को कैसे समाप्त किया जाय, इस पर विचार करने का भी हम लोगों को आज एक अवसर मिला है। राष्ट्रमानस से इस उन्माद को समाप्त करने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाय, आज यह पहली आवश्यकता है। लेकिन हम देख रहे हैं कि हर जगह राजनैतिक बिखराव आ रहा है। प्रदेश में गैर-कांग्रेसवाद, कम्युनिस्टवाद, यह वाद, वह वाद के नामों की निषेधात्मक विचारधाराएं प्रचारित की गयी हैं। यदि सही मायने में देखा जाय तो यही गैर-कांग्रेसी विचारधारा आज इस सरकार की असफलता की द्योतक बनी है। यह गैर-कांग्रेसवाद कोई विचारधारा है? यह कोई विचारधारा नहीं है। आज आप निगेटिव व निषेधात्मक दृष्टिकोण से सोचते हैं और यह कहते हैं कि फलां से बात नहीं करेंगे और फलां से समझौता नहीं करेंगे और फिर सभी पक्षों से भिन्न-भिन्न प्रकार के गठबन्धन करते हैं तो क्या यह नीति सही है?

(समय 2 बजे)

माननीय मुख्य मंत्री जी ने सौहार्द्रपूर्ण ढंग से स्पष्टता के साथ अपनी बातें रखने की चेष्टा की और अत्यधिक वाद-विवाद वाली व कटु बातों को संसदीय ढंग से कहने का प्रयास किया। लेकिन उन्हें आज यहां विश्वास प्रस्ताव लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी? जनादेश प्राप्त करके सन् 1989 में केन्द्र में राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार गठित हुई। यह जनादेश गैर-कांग्रेसवाद के आधार पर प्राप्त किया गया था। इनके कार्यक्रम बेमेल थे। इसके पीछे कोई स्पष्ट दर्शन नहीं था। इसलिए मैं आग्रह करूंगा कि इस प्रकार के गैर-कांग्रेसवाद, गैर-कम्युनिस्टवाद, गैर यह वाद और वह वाद की जो खाई बनायी हुई है, उसे पाटा जाय तथा साथ ही देश व प्रदेशों की उन्नति के लिए भावी स्पष्ट कार्यक्रमों व उद्देश्यों के साथ रचनात्मक राजनीति की संरचना की जाय।

जो लोग चाहते थे कि कोई ऐसा सही विकल्प बने जो कांग्रेस दल की जगह पर काम करे तो क्या वह बना? जनता दल या राष्ट्रीय मोर्चा जब इसका विकल्प बाम

चुनावों के बाद कहा जाने लगा, तब पहले ही दिन, जब प्रधान मंत्री पद के चुनाव की बात शुरू हुई और उसी दिन से इनमें बिखराव शुरू हो गया । हम कांग्रेसजन तो उस वक्त कुछ बोले भी न थे कि यह सब शुरू हो गया । फिर भी हम केन्द्र सरकार व प्रदेशीय सरकारों से रचनात्मक सहयोग करते रहे । कुछ ऐसे अवसर भी आये जब रचनात्मक विरोध भी किया गया । कांग्रेस के मुख्य राष्ट्रीय दल होने के नाते, जिसका एक स्वर्णिम इतिहास है, यह दायित्व निभाते रहे । यह सहयोग इसलिए भी दिया कि इन्हें पर्याप्त अवसर दिया जाना चाहिए ताकि ये जनादेश के अनुसार सफलतापूर्वक सरकार चला सकने का प्रयास कर सकें ।

सरकार राष्ट्रीय मोर्चे के नाम से हो या जनता दल के नाम से, उसका कार्य विवरण कटु पर संसदीय भाषा में स्वयं माननीय मंत्री जी ने प्रस्तुत किया है । केन्द्र सरकार और प्रदेश सरकार में सही तालमेल नहीं रहा है । वर्तमान स्थिति में देश और प्रदेश को जो झटका पहुंचा है, वह इसी प्रकार के आमूलचूल तालमेल की कमी से पहुंचा है । नेतृत्व में जो घटकवाद था, जनता दल में जो चार पांच घटक थे, उन में समन्वय की कमी थी । उसी के कारण मुख्य मंत्री को यह प्रस्ताव लाना पड़ा और सब कुछ कहना पड़ रहा है । मुख्य मंत्री ने बहुत सी बातें नहीं बताईं ।

मैं जानना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश को केन्द्र से कितनी आर्थिक सहायता मिली, कितने औद्योगिक लाइसेंस मिले । प्रदेश के लिए क्या कोई नये प्रोजेक्ट स्वीकृत हुए ? प्रदेश ने क्या-क्या सहायता मांगी और आठवीं योजना के क्रियान्वयन के बारे में क्या विचार हुआ ? किसी नयी योजना पर कोई ठोस विचार नहीं हुआ तो उसका कारण क्या था ? कारण था तालमेल की कमी, मेलजोल की कमी, और समन्वय की कमी । आठवीं योजना फाइलों में बन्द पड़ी सिसकती रही और वातावरण ऐसा बन गया कि प्रदेश भर में कर्फ्यू या दफा चवालिस लगती रही और इसी में सब अधिकारी लग गये और विकास का काम लगभग शून्य हो गया । की गयी घोषणाओं का खोखलापन साबित हो गया है ।

आज याद आती है, भगवान बुद्ध की उस पंक्ति की, जिसमें उन्होंने कहा था कि वीणा के तार को इतना ही कसें कि वह टूट न जाय और इतना ढीला भी न करें कि संगीत ही न निकले । उन्होंने मध्यम मार्ग की बात कही थी । धर्म निरपेक्षता का मार्ग ही मध्यम मार्ग है । कहीं राष्ट्रीय वीणा के तार टूट न जायं, कहीं राष्ट्र टूट न जाय । कहीं उससे राष्ट्रीयता का सरगम निकलना बन्द न हो जाय जो सरगम निकले वह श्मशान का गीत न बने ।

आज कितनी ही बातें कहीं गयीं । जिनमें राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के बारे में मुख्य मंत्री जी ने तमाम तथ्य प्रस्तुत किये । मुझे भी इस प्रश्न पर सोचने का कई बार अवसर मिला । दो तीन वर्ष पहले केन्द्रीय मंत्रिपरिषद की जो समिति बनी थी उस के सदस्य के नाते और उत्तर प्रदेश के मुख्य सेवक के नाते भी मुझे अवसर मिला कि इस प्रश्न की गहराई में पहुंच सकूं ।

हमारे समय की और आज की स्थिति में फर्क क्या है, फर्क यह है कि तब केन्द्र और प्रदेश की सरकारों में समन्वय था, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, प्रधान मंत्री के सचिवालय और उ0 प्र0 के मंत्रालयों में तालमेल था । इसीलिए एक समझौता विश्व हिन्दू परिषद् से हो सका। मैं बधाई देना चाहता हूं कि मुख्य मंत्री जी ने इस संदर्भ में कई बातों का उल्लेख किया है । केना में श्री सुरेन्द्र मोहन ने जब बहुत देर बाद इस ओर ध्यान आकर्षित कराया, तब वह समझौता फाइलों की गहराइयों से निकाला गया। उस समझौते के आधार पर इस वर्ष के प्रारम्भ में ही विश्व हिन्दू परिषद् और भारतीय जनता पार्टी से बातचीत की जानी चाहिए थी।

पिछले सितम्बर, 1989 के समझौते में विश्व हिन्दू परिषद् ने यह मान लिया था कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले को मानेंगे, फैसला होने तक यथास्थिति बरकरार रखेंगे और विवादित संपत्ति में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं करेंगे। इसी समझौते के अनुसार कार्य हुआ। स्पष्ट है कि इसी समझौते के अनुसार शिलान्यास हुआ, पर विवादित भूमि पर नहीं, गैर विवादित भूमि पर हुआ और साथ ही मस्जिद भी बची रही। लेकिन चुनाव के समय असत्य प्रचार किया गया कि मस्जिद शहीद हो गयी या शिलान्यास के बाद मंदिर नहीं बनने दिया गया। शिलान्यास के तत्काल बाद निर्माण का कोई कार्यक्रम विश्व हिन्दू परिषद् ने तब घोषित ही नहीं किया था।

आज फिर चुनाव का सा माहौल बनाया जा रहा है। मिथ्या प्रचार चल रहा है। ऐसी ही बेबुनियाद बातों पर यदि चुनाव का सिलसिला बन गया तो उन्माद कभी बन्द नहीं होगा, विकास व आर्थिक संकट की सारी बातें भुला दी जायंगी। योजनाएं नहीं चलेंगी और धार्मिक उन्माद हावी रहेगा। इसलिए मेरा केन्द्र व प्रदेश की सरकार से आग्रह है कि भारतीय जनता पार्टी व विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं व बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के साथ वार्ता करके कोई रास्ता निकाला जाय जैसा कि पिछले वर्ष निकाला गया था।

जो रास्ता निकाला गया उससे मस्जिद को आंच नहीं आयी और गैर विवादित भूमि पर शिलान्यास हो गया। क्या आज कोई ऐसा रास्ता नहीं निकल सकता जिससे विवादित भूमि छोड़कर जिस स्थल पर शिलान्यास हुआ है वहां पर मंदिर बनाने की बात हो? या अन्य कोई भी रास्ता जो दोनों पक्षों को मान्य हो, निकाला जाना चाहिए। प्रयास करना ही चाहिए, क्योंकि यह प्रश्न आज धार्मिक मानसिकता का बन गया है। यह बहुसंख्यक लोगों के मानस में मनोवैज्ञानिक प्रश्न बन गया है।

आज नाराजी केवल इसीलिए नहीं है कि शासन द्वारा सख्त कदम उठाये गये बल्कि इसलिए भी है कि राजनैतिक कारणों से शासन में मुख्य मंत्री मुलायम सिंह जी इतने दबाव में रहे कि उनके आदेशों से भी बढ़कर, आवश्यकता से अधिक बल का प्रयोग किया गया। किन अधिकारियों ने उनके आदेशों के अनुपालन में बढ़-चढ़कर ज्यादतियां की हैं, वह भी स्पष्ट होना चाहिए क्योंकि इन ज्यादतियों से शासन को और सरकार को अपमानित होने की नौबत बनी है। जो ज्यादतियां हुई हैं उनके लिए मुख्यमंत्री को जिम्मेदार माना जाता है।

मैंने पिछली जनवरी में ही राज्य सरकार द्वारा सभी नेताओं की सामूहिक बैठक में कह दिया था कि यह केवल यू0 पी0 का सवाल नहीं है। यह अखिल भारतीय सवाल बन चुका है। हमने जो समझौता किया उसमें केन्द्र के गृह मंत्री, केन्द्र के गृह सचिव, आई0 बी0 चीफ और तमाम सारे वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। केन्द्र से तालमेल करके समझौता कराया। हमने बार-बार कहा कि यह प्रश्न अब केवल उत्तर प्रदेश का नहीं है। आज यह अखिल भारतीय प्रश्न बन गया है। बाबरी मस्जिद और राम जन्मभूमि का मसला शान्तिपूर्ण ढंग से कैसे हल हो सकता है, यह सभी पक्षों को मिलकर सुनिश्चित करना है। हिंसा के ज़रिये हल किया तो किसी भी तरह उचित नहीं होगा। हमने देख लिया कि हमारे देश में हिंसा से बंगलादेश व पाकिस्तान में भी हिंसा भड़कती है और करोड़ों हिन्दू, मुस्लिम जीवन असुरक्षित हो जाते हैं।

इसलिए केवल समझौता ही एक मात्र मार्ग रह जाता है, इसके अलावा दूसरा रास्ता नहीं है। इस प्रश्न पर मुख्य मंत्री जी व नये प्रधानमंत्री जी को अवश्य विचार करना चाहिए। हमारा यह सुझाव होगा और सुझाव के साथ-साथ हमारा यह प्रभावी आग्रह और मांग होगी कि अयोध्या व अन्य स्थानों पर हत्या, अत्याचार आदि की जो मुख्य घटनायें हुई हैं, उनकी अलग-अलग न्यायिक जांच होनी चाहिए। यह न्यायिक जांच किसी ट्रिब्यूनल, कमीशन या आयोग द्वारा होनी चाहिए जो सारे कारणों के विस्तार में जाकर यह देखें कि यह सब क्यों और कैसे हुआ ? वे कौन लोग हैं जिन्होंने मुख्य मंत्री या सरकार के नाम पर गलत आदेश दिये? इस तरह की बदनाम करने की साजिश कैसे की गयी कि लखनऊ यूनिवर्सिटी को जेल घोषित कर दिया जाय ताकि कारसेवकों को वहां रखा जा सके और कुलपति को उच्च न्यायालय में याचिका दायर करनी पड़े।

मैं नहीं मान सकता कि शासन ऐसे आदेश दे सकता है। एक दूसरी रिट हुई और रिट में यह बात सामने आयी कि इलाहाबाद की एक शव यात्रा में 'राम नाम सत्य है' जैसे युग प्रचलित शब्दों का उच्चारण करने पर कतिपय शव-सेवकों को बन्दी बनाया गया और उन्हें छुड़वाने के लिए हाई कोर्ट जाना पड़ा। ऐसे आदेश शासन के हो ही नहीं सकते हैं। सूचना विभाग तथा तमाम किस्म के विज्ञापनों द्वारा समाचार पत्रों में इसका खण्डन होना चाहिए था कि इस तरह की जो खबरें निकली हैं वे गलत हैं। इस तरह की जो भी घटनाएं हुई हैं उनके बारे में पूरी प्रभावी जांच होनी चाहिए। मैं इतना अवश्य कहूंगा, एक बड़े भाई के नाते, मुख्य मंत्री से वरिष्ठ होने के नाते, कि हम जो भी भाषण करें वह संयत हो। कड़वी से कड़वी बात भी संयत भाषा में कही जानी चाहिए। मैं नहीं जानता कि मुख्य मंत्री जी के स्तर से ही यह कहा गया अथवा उन्होंने ऐसा कहा होगा या नहीं कि "वहां पर परिन्दा भी पर नहीं मार सकता।" मुझे इसका व्यक्तिगत ज्ञान नहीं है। पर ऐसी बातें यदि कही गयी तो वे चुनौती भरी बातें हैं।

चुनौती देना या स्वीकार करना वर्तमान संदर्भ वाली राजनीति में कभी अच्छा नहीं रहता है। राजनीतिक चुनौतियां ठीक होती हैं लेकिन धार्मिक प्रश्नों पर चुनौती नहीं देना चाहिए। यह धर्म का सवाल है। इसलिए मेरा आग्रह होगा कि जब हम धर्म के प्रश्न पर बोलें तब चाहे वह मंदिर हो या मस्जिद हो, पंजाब का मसला हो या कश्मीर

का हो, अत्यन्त सावधानी से बोलें । धार्मिक प्रश्न पर चुनौती की भाषा बोलने से धार्मिकता और साम्प्रदायिकता का फर्क मिट जाता है और धार्मिकता साम्प्रदायिकता बन जाती है। मैं नहीं जानता कि ये समाचार कैसे छप गये । यदि यह बात नहीं कही गयी थी तो इसका खण्डन तुरन्त पत्रों में होना चाहिए था । ऐसे जो समाचार छपे उनका खण्डन नहीं हुआ, वह होना चाहिए था ।

यह खबर प्रकाशित हुई कि जनरल बिलमोरिया को टेलीफोन किया गया, उनको हेलीकाप्टर से अयोध्या भेजा गया । कहा गया कि फायरिंग कराने के लिए वे वहां गये और लौट कर हालात के अनुसार उन्होंने फौज द्वारा फायरिंग कराने से मना कर दिया। यह कितनी भ्रामक बात है, जैसे यहां से फौज को मशीनगन चलाने के आदेश हो रहे हों। इस बात का खण्डन होना चाहिए था । अगर समाचार पत्र नहीं छापते तो विज्ञापनों द्वारा उसका खण्डन होता ।

मैं कहना चाहता हूं कि इस बीच समाचार पत्रों में जिस तरह से व्यवहार हुआ है उस पर भी हमें पुनर्विचार करना पड़ेगा । यह भी तनाव बढ़ाने का एक मुख्य कारण रहा है । मुझे खुशी है कि प्रेस कौंसिल में कोड आफ कण्डक्ट पर विचार हो रहा है। आज कहा जाता है कि सनसनी खेज खबरें और अतिरंजित खबरें छापी गयीं। पहले भी ऐसी खबरों का खण्डन निकलता था । समाचार पत्र खबरें ढूंढते हैं । उनमें भी होड़ होती है कि कौन पहले समाचार देता है तो उनको भी सही समाचार दिये जायं । किसी न किसी समाचार पत्र में अपवाद में ऐसे भ्रामक समाचार छप जाते हैं तो उनका समय से खण्डन होता है । अगर नहीं हुआ तो जनता अफवाह को भी सच मान लेती है।

अयोध्या जैसे धार्मिक प्रकरण पर हम सभी को सदैव सजग रहना चाहिए कि किसी भी घटना का प्रदेश के जन मानस पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है । प्रदेश शासन में हमारे समय में ऐसी व्यवस्था थी कि सूचना निदेशालय में खुद सूचना निदेशक प्रेस को दी जा रही सूचना की प्रामाणिकता देखते थे । गृह सचिव स्वयं दैनिक शांति व्यवस्था से सम्बन्ध तथ्य पत्रकारों को उपलब्ध कराते थे । जिला अधिकारियों से भी कहा गया था कि जिले के समाचार पत्रों को सही सूचना उपलब्ध कराते रहें ताकि जनता को सही जानकारी मिले ।

जो लोग मृत्यु के शिकार हुए हैं उनके बारे में आज भी अलग-अलग संख्या दी जा रही है । अयोध्या में घटना के दस दिन बाद सोलह मृत व्यक्तियों की संख्या दी गयी , उसमें भी चार के नाम नहीं मिल सके शासन की ओर से यह खबर बहुत देर में आयी थी कि कितने लोग मारे गये । जनरल बिलमोरिया के अयोध्या जाने की बात का खण्डन नहीं नहीं हो पाया ।

इसी सन्दर्भ में समाचार पत्रों के सम्पादकों व पत्रकारों की गिरफ्तारी की बात भी सामने आयी। मैंने स्वयं समाचार पत्र पढ़ा जागरण, आज, पायनियर, स्वतन्त्र भारत, स्वतन्त्र चेतना जैसे प्रमुख समाचार पत्रों के सम्पादकों के वारन्ट और गिरफ्तारी की बात सामने क्यों आयी ? प्रदेश के सम्मानित सम्पादकों व पत्रकारों के प्रति ऐसा व्यवहार क्यों हुआ किसके आदेश से हुआ ?

मैं जानता हूं कि कभी-कभी शासन को कठोर कदम उठाने पड़ते हैं । समाचार पत्रों को भी समाचार प्रकाशित करने में सत्य-असत्य की सावधानी बरतनी पड़ेगी । आज

जन-मानस में जो आक्रोश है उसका एक कारण समाचार पत्रों को सही सूचना न मिलना भी है। सूचना विभाग का प्रेस से सही सम्पर्क न होने से भी यह स्थिति पैदा हुई है।

मुझे मालूम हुआ है, यह कहां तक सही है मैं नहीं कह सकता, कि कुछ अखबारों के, जो शासन के खिलाफ लिखते हैं, विज्ञापन बन्द कर दिये गये हैं। हमने अपने शासन काल में चाहे हमारे खिलाफ कितना ही लिखा गया हो कभी अपनी ओर से शासकीय विज्ञापन बन्द नहीं किये। कहीं कोई अधिकारी ऐसा करने की सिफारिश भी करता था तो हमने उनकी बात नहीं मानी।

अयोध्या या अन्य नारों में यदि मृत्यु हुई है तो मृत्यु मृत्यु है चाहे आतंकवादियों की गोलियों से हो चाहे पुलिस की गोलियों से। ऐसे निर्दोषों की अमानुषिक हत्या जघन्य अपराध है हम सभी निर्दोषों की अमानवीय हत्या पर शोक व्यक्त कर अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

हम निन्दा करते हैं साम्प्रदायिक हिंसा की और जहां-जहां बल का जरूरत से ज्यादा प्रयोग हुआ है, चाहे यह कर्नलगंज, जिला गोंडा में, बिजनौर में, मेरठ में, रामपुर, शामली में, अलीगढ़, डिवाई में, और मैं कहां-कहां के नाम गिनाऊं, जहां भी ज्यादती हुई है वहां हम नृशंसता की निन्दा करते हैं।

देश के अन्य शहरों जैसे जयपुर, इन्दौर, अहमदाबाद, रांची, पटना, हिमाचल प्रदेश आदि में अयोध्या के मसले को लेकर तनाव बढ़ रहा है और कितनी ही जगहों पर फायरिंग हुई है। आज हम केवल फायरिंग की इन घटनाओं पर मुलायम सिंह जी का इस्तीफा मांगेंगे तो हर प्रदेश में फायरिंग हुई है, तो किन-किन का इस्तीफा मांगेंगे? चूंकि यही स्थिति जयपुर, अहमदाबाद, इंदौर और हिमाचल प्रदेश में देखते हैं जहां समाचार कहते हैं कि सैकड़ों लोग मारे गये हैं। इसी तरह बिहार में भी यह घटनाएं घटित हुई हैं। तो किन-किन का इस्तीफा मांगेंगे। कहीं नैतिक आधार पर स्वयं इस्तीफा दे दें तो अलग बात है।

सन 1956 में डा0 लोहिया ने नागपुर समाजवादी अधिवेशन में कहा था कि जिस प्रदेश में कहीं कोई फायरिंग हो तो उस प्रदेश में मुख्य मंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिए। तब केरल में प्रजा समाजवादी के श्री पट्म तानु पिल्ले की सरकार द्वारा एक फायरिंग में चार-पांच व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने के कारण इस्तीफे की बात चली थी।

हमारे मुख्य मंत्री आज यदि उस उक्ति के आधार पर फायरिंग होने के कारण इस्तीफा दे दें तो इस तरह कोई भी मुख्य मंत्री आज अपने पद पर नहीं रह सकता है वह चाहे किसी दल का क्यों न हो। आज तो सभी दलों के देश में मुख्य मंत्री हैं। राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, आंध्र, महाराष्ट्र आदि में आरक्षण, धार्मिक या अन्य प्रश्नों पर कितनी ही जगहों पर गोलियां चली हैं। हर राज्य में नित्य प्रति कहीं न कहीं कोई फायरिंग होती रहती है। स्थिति इतनी विषम हो गयी है।

राष्ट्र की वीणा की झंकार राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना से झंकृत होनी चाहिए थी लेकिन उसकी जगह आज मौत का चीत्कार सुनाई देता है।

(श्री रघुबर दयाल वर्मा के खड़े होने पर व्यवधान)

श्री रघुबर दयाल वर्मा–

मान्यवर, एक स्पष्टीकरण श्री तिवारी जी से चाहता हूं कि पिल्लई साहब का उन्होंने जिक्र किया तो मैं जानना चाहता हूं कि जो चिंतन सामाजवादियों का था कि गोली और फायरिंग पर इस्तीफा दे देना चाहिए तो मुख्य मंत्री को इस पर आपकी क्या राय है ?

श्री नारायण दत्त तिवारी–

गोली काण्डों के आधार पर सरकारें इस्तीफा देने लगीं तो हर प्रदेश में रोजाना गोली काण्ड हो रहे हैं । आरक्षण की वजह से या दूसरे कारणों से, कोई भी सरकार एक दिन भी नहीं चल सकती है । रोजाना मुख्य मंत्री बदलने से भी काम नहीं चलेगा । इसलिए आज हमें रास्ता निकालना है जिससे साम्प्रदायिकता और धार्मिक उन्माद से छुट्टी मिले । आज आरक्षण का प्रश्न एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया है । मैं उन लोगों में से हूं जो सही ढंग से आरक्षण के सदा पक्षधर रहे हैं ।

यह प्रारम्भ में ही स्पष्ट होना चाहिए कि शिड्यूल्ड कास्ट (हरिजन) व शिडयूल्ड ट्राइब (आदिवासियों) के लिए सेवाओं में आरक्षण कभी विवाद का विषय नहीं रहा और न आज है । इन वर्गों के नाम अकारण घसीट कर चन्द लोग केवल राजनैतिक शोषण करना चाहते हैं ।

जहां तक उत्तर प्रदेश में पिछड़े वर्गों के लिए राजकीय सेवाओं में आरक्षण का प्रश्न है सन् 1977 में इस प्रदेश के मुख्य सेवक होने के नाते मुझे ही यह सौभाग्य मिला था और तभी पहली बार उत्तर प्रदेश में पिछड़े वर्गों के लिए 15 प्रतिशत का आरक्षण दिया गया था । लेकिन जिस ढंग से केन्द्रीय सरकार ने आरक्षण की राजनीति करने के लिए और वोट बैंक बनाने के लिए इसे केन्द्र में लागू किया वह किसी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता है । आज उसी का कुफल समाज के युवा वर्ग में प्रदर्शित हो रहा है । युवाओं के आत्मदाह हो रहे हैं ।

आत्मदाह मौत का सबसे दुखद संस्करण है । लगभग एक सौ नौजवान आत्मदाह के शिकार हो गये हैं । राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की नाक के नीचे ये लोमहर्षक आत्मदाह काण्ड हुए हैं । आत्मदाह के अलावा स्थान-स्थान पर पुलिस की गोलियां उन पर क्यों बरसीं? यदि पहले इस मसले पर छात्रों व नौजवानों को विश्वास में लिया जाता तो यह स्थिति नहीं आती ।

मध्यावधि चुनाव को ध्यान में रखते हुए भगवान राम का नाम चुनाव के लिए मुद्दा बना लिया जाय, आरक्षण को चुनाव का मुद्दा बना दिया जाय, तो कहां तक ठीक होगा? अब हमको राष्ट्रहित में देखना होगा कि किन मुद्दों को किस रूप में चुनाव का मुद्दा बनाया जाय ।

कांग्रेस शासन में करोड़ों गरीबों को गरीबी रेखा के ऊपर लाने के लिए योजनाएं चलायी गयीं । हमने जवाहर योजना चलायी थी, गरीबों के लिए पांच लाख मकान दो साल के भीतर बनाये । 45 अरब रुपया एक साथ बैंक से प्राप्त किया जिससे विकास की एक धारा प्रदेश में बही। आज विकास की कहां चर्चा है? केवल मंदिर मस्जिद, आरक्षण, पंजाब व कश्मीर की हिंसा-फायरिंग की ही चर्चा हो रही है । मैं चाहता हूं यह सब समाप्त हो । अब मुख्य मंत्री यह नहीं कह सकते कि प्रधान मंत्री उनके नहीं हैं।

पिछले 10 नवम्बर के बाद मा0 चन्द्र शेखर जी के प्रधान मंत्री होने के बाद, अब राजनीति का नया अध्याय शुरू होना चाहिए । मैं कहना चाहता हूं कि आज विरोधी दल के मुख्य प्रवक्ता और नेता सदन इन दो व्यक्तियों में आपसी विश्वास, अविश्वास का प्रश्न नहीं है ।

पिछले महीनों में हमने अविश्वास की सीमाएं लांघी और हमें शासन की नीतियों पर विश्वास नहीं रहा। स्वयं जनता दल की प्रदेशीय और केन्द्रीय सरकारों में पारस्परिक विश्वास नहीं रहा । हम विरोधी दल में हैं और जैसे हमने 11 मास केन्द्र में रह कर निवर्तमान राष्ट्रीय मोर्चा व जनता दल सरकार को पहले रचनात्मक सुझाव दिये थे और संसदीय विरोध किया था, वैसे ही नये जनता (एस) शासन को भी रचनात्मक सुझाव देने के लिए हम तैयार हैं । (व्यवधान) ।

चन्द्र शेखर जी जो नए प्रधान मंत्री हुए हैं, 40–42 साल पहले से जानता हूं। हमने साथ-साथ काम किया है। मैं जानता हूं कि वह प्रखर समाजवादी हैं और एक किसान के घर से आये हैं । आज किसान की बात आती है । हमारे नये प्रधान मंत्री जो बलिया जिले के गांव इब्राहीम पट्टी के एक गरीब किसान परिवार से निकले हैं। निरंतर संघर्ष करके चन्द्रशेखर शिखर तक पहुंचे हैं । उनको उचित अवसर देना चाहिए ।

आज केन्द्र के इस नये नेतृत्व के साथ वर्तमान मुख्य मंत्री जुड़ गये हैं । इसलिए इस नव-स्थापित गठबंधन को अवसर देना चाहिए । इसलिए हम अविश्वास की सीमाएं 8-9 नवम्बर के पहले लांघ चुकने के बाद भी चन्द्रशेखर जी के नेतृत्व ग्रहण के बाद विश्वास की लक्ष्मण रेखा पर वापस लौटे हैं। हम इस विश्वास की लक्ष्मण रेखा पर खड़े यह देखना चाहते हैं कि यह नयी मंत्रि परिषद् किस तरह भारत और उत्तर प्रदेश को चलाती है और समस्या-समाधान करती है ।

चन्द्रशेखर जी ने जो भाषण किये हैं और जो अपने विचार व्यक्त किये हैं, मैं समझता हूं कि आज उनका बड़ा महत्व है, और उनके विचार उपयोगी हैं । इसीलिए तो भारतीय जनता पार्टी भी कह रही है कि उन्होंने कोई गलत बात नहीं है । आप फर्क देखें ? कितना फर्क होता है समन्वय का ।

अभी हमने सुना कि भूतपूर्व प्रधान मंत्री और वर्तमान मुख्य मंत्री के बीच समन्वय की कितनी कमी थी और समन्वय न होने से प्रदेश में कितना कहर हो गया । यह सब असमन्वय का ही परिणाम हुआ है ।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों ने जय श्री राम का उद्घोष किया।)

यह वही सम्मानित आडवाणी थे जिनको 30 अक्तूबर को न आने देने के लिए इतना बड़ा इन्तजाम हो रहा था, खाइयां खुद रही थीं। वही आडवाणी 19 नवम्बर को लाखों की भीड़ के साथ अयोध्या जाकर पूजा कर आये हैं।

(व्यवधान)

तो यह अच्छा हुआ एक बहुत बड़ी भीड़ के साथ वह वहां गये।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट)

समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित हुआ कि वर्तमान प्रधानमंत्री, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री और आडवाणी जी की एक बैठक हुई थी। उसमें यह तय हुआ था कि आडवाणी जी 19 नवम्बर को अयोध्या जा सकेंगे। तो यह अच्छा हुआ कि एक बहुत भीड़ के साथ श्री आडवाणी वहां गये। (जनता दल व जनता दल के असन्तुष्टों के बीच शोर शराबा होने पर)

मैं कहना चाहता हूं, कल तक हम आप साथ रहे। मंत्रिमंडल में साथ रहे, दल में साथ रहे। फिर एकदम से इतनी घृणा। ऐसा करना राजनीतिक कल्चर को बदलना है। पारस्परिक सम्बन्धों में द्वेष रहेगा तो प्रजातंत्र चलने वाला नहीं है।

हम कल साथ थे, एक साथ बैठते उठते थे। हम इधर बैठते हैं तो किसी के शत्रु नहीं हैं, उधर बैठते हैं तो किसी के शत्रु नहीं हैं। अगर मित्र नहीं हैं तो शत्रु भी नहीं हैं। समान अधिकारों वाले नागरिक होने के नाते एक साथ काम कर रहे हैं। दलों में यदि विभाजन होता है तो वह सहिष्णुता से होना चाहिए। जूते की नोक पर नहीं होना चाहिए। व्यक्तिगत लड़ाई के जरिये नहीं होना चाहिए। विचारों के जरिये होना चाहिए। विभाजन होगा तो क्रोध क्यों? (मेजें थपथपायी गयीं)

(कांग्रेस के सदस्यों द्वारा मेजें थपथपाई गईं)

आडवाणी जी जब कारसेवा के लिए अयोध्या में 30 अक्तूबर को प्रवेश करना चाहते थे, तब उनसे बातचीत हो सकती थी। जैसे अब निर्णय किया गया और वह लाखों की भीड़ के साथ अयोध्या गये, वैसे ही 30 अक्तूबर की यात्रा को लेकर बातचीत हो जाती। 30 अक्तूबर की शांति व्यवस्था का कार्य श्री आडवाणी पर छोड़ दिया जाता।

आज तक किसी को मैंने यह कहते नहीं सुना कि मस्जिद तोड़ेंगे। विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं से बात हुई। भा0 ज0 पा0 के नेताओं से बात हुई। बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के नेताओं से भी पूछा गया। जब सभी कहते हैं कि मस्जिद टूटेगी नहीं और मंदिर बनेगा तो मंदिर बनता क्यों नहीं है। (मेजें थपथपायी गयीं) (घोर व्यवधान)

ऐसा लगता है कि इसमें राजनीति वाली बात है, राजनीति आ गयी है और वार्तालाप नहीं होता है। अब 6 दिसम्बर को फिर यही मामला आ रहा है। मैं सदन से अपील करना चाहूंगा, विशेष रूप से जो यहां इतना सुन्दर केसरिया बाना पहन कर आये हैं उन मित्रों से आपके द्वारा आग्रह करूंगा कि जो यह तनाव हो रहा है, यह नहीं होना चाहिए। इसकी आवश्यकता नहीं है। (व्यवधान)।

कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिससे राष्ट्रीय सम्मान को ठेस लगे। यदि हर जगह दंगे होते हैं और फैलते रहते हैं तो मुख्य मंत्री किसके, प्रधानमंत्री किसके, सबका सब लोकतंत्र स्वाहा हो जायगा। (व्यवधान)

इसलिए 6 दिसम्बर से पहले बातचीत कीजिए, कोई रास्ता निकालिए और इस मामले का हल निकालिए, नहीं तो फिर कहेंगे कि शासन ने यह कर दिया, यह कर दिया।

मुख्य मंत्री जी से भी कहूंगा कि कल इस संदर्भ में जैसा उन्होंने रवैया अपनाया और आडवाणी जी पर सारी जिम्मेदारी डाली कि आप जायें और मस्जिद को बचाएं और पूजा जैसा चाहें वैसे करें, उसी तरह 6 दिसम्बर के लिए चन्द्रशेखर जी के साथ बैठकर बातचीत करें। इसमें शाही इमाम बुखारी जी आयें या बाबरी मस्जिद कमेटी के अन्य नेता हों। सब मिल बैठकर इस समस्या का हल निकालें। अगले चार-पांच दिन के अन्दर इस मसले का हल निकाला जाय। बहुत हो चुका है, बहुत खून की होली हो गयी। अब यह सब नहीं होना चाहिए और यह रुकना चाहिए। इस साम्प्रदायिक उन्माद को रोकना होगा।

भारतीय राष्ट्र के संविधान में जो विचार बिन्दु ग्रथित हैं, उन विचार बिन्दुओं के आधार पर वर्तमान काल चक्र के व भारत के इतिहास के इस नाजुक दौर में समझौते का रास्ता निकालना ही पड़ेगा। इसलिए मैं फिर प्रार्थना करूंगा अपने सभी दलों से कि इस मंदिर-मस्जिद के प्रश्न पर हल ढूंढ़ने के लिए हम सब एक हों।

चन्द्रशेखर जी ने इस बारे में लोक सभा में जो भाषण किया उसकी मैं प्रशंसा करता हूं। अयोध्या काण्ड में जो मौतें हुईं उनके लिए उन्होंने खेद प्रकट किया। उन्होंने जो भाषण किया उसका हिन्दी अनुवाद मुझे मिला नहीं। लेकिन मैं उसका स्वयं हिन्दी अनुवाद कर दूंगा। जब सुश्री उमा भारती, सांसद ने उनसे प्रश्न पूछा तो उन्होंने कहा "आई एम सारी फार वाट हैपेन्ड इन अयोध्या" (अयोध्या में जो कुछ हुआ उसके लिए मैं खेद प्रकट करता हूं) नोबाडी वाण्ट्स दैट इवन ए सिंगल मैन शुड डाय (कोई नहीं चाहता कि एक व्यक्ति भी मरे)। आई अश्योर यू दैट इवन इफ ए सिंगल मैन आर वूमन डाइज इन दिस कन्ट्री, आई फील दैट ए सन आर डाटर आफ मदर इंडिया हैड डाइड (मैं विश्वास दिलाता हूं कि यदि एक भी आदमी या औरत इस देश में मरती है तो मैं सोचता हूं कि भारत माता का एक बेटा या बेटी मरी है)।

मुख्य मंत्री जी से मैं कहूंगा कि जिस तरह से प्रधान मंत्री ने खेद प्रकट किया है उन्हें भी उसी प्रकार खेद प्रकट करना चाहिए। मैंने मुख्य मंत्री को टेलीविजन पर सुना था। उन्होंने एक-एक लाख रुपये यहां पर हुई हत्याओं के लिए दिए हैं। उसी तरह से वह अन्य स्थानों में भी इसी सहायता को दोहरायें।

यहां जो इतनी गहमागहमी हो रही है तो उसमें अपना भी दायित्व समझें। इस तरह की मृत्यु या हत्याओं के बारे में खेद व्यक्त करें और एक उच्चस्तरीय न्यायिक जांच का आदेश दें। यह जांच का कार्य इस तरह से हो कि इस जज या जजों को दूसरी कोई जिम्मेदारी जांच के दौरान न दी जाय। मैं मानता हूं कि भिन्न तरह की जांच से पुलिस को, अधिकारियों को काफी कठिनाई होती है। जुडिशियल इन्क्वायरी हो। सुप्रीम कोर्ट लेवल के किसी योग्य हाईकोर्ट के जज के माध्यम से यह जांच करायी जाय जिससे सभी मामलों की सही जांच हो सके।

आज आवश्यकता इस बात की है कि 6 दिसम्बर के पहले की तमाम बातों को छोड़कर बातचीत के माध्यम से समस्या के समाधान का प्रयास किया जाय। भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री कल्याण सिंह, अध्यक्ष राजेन्द्र गुप्त जी भी इस बातचीत में पूरा भाग लें और ऐसा वातावरण बनाया जाय जिससे 6 दिसम्बर से पूर्व ही इस समस्या का समाधान

हो जाय और 6 दिसम्बर को फिर से उस काण्ड की पुनरावृत्ति न हो जो 30 अक्तूबर व 2 नवम्बर को दुर्भाग्यवश अपनी काली छाप छोड़ गया और जिसका प्रभाव पूरे देश पर पड़ा। कांग्रेस पार्टी इस बारे में जो भी कर सकती है करेगी। किसी भी रचनात्मक वार्ता में कांग्रेस अपना पूर्ण समर्थन और सहयोग देने के लिए तैयार है।

आरक्षण के बारे में माननीय चन्द्रशेखर जी ने जो बातें अपने पहले ब्राडकास्ट में कही हैं वह मुख्य मंत्री जी की स्थिति से बहुत भिन्न नहीं है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने आरक्षण के बारे में जो कहा है उसे मानने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

श्री किरन पाल सिंह–

[XX] कर रहे हैं आप।

श्री प्रमोद कुमार–

[XX] इधर हो रहा है और [XX] उधर बैठा है।

श्री नारायण दत्त तिवारी–

प्रधान मंत्री माननीय चन्द्रशेखर जी ने देश के लिये अपने ब्राडकास्ट में आरक्षण के बारे में जो कुछ कहा है मुझे विश्वास है कि उन्होंने कहने से पहले उस पर मुख्य मंत्री जी को विश्वास में ले लिया होगा। उन्होंने कहा है (इन दि सेम वे पीपुल आर फाइटिंग इन दि नेम आफ कास्ट आन दि क्वेश्चन आफ रिजर्वेशन) इसी प्रकार लोग लड़ रहे हैं जाति के आधार पर आरक्षण के प्रश्न को लेकर। (टाइम-ओल्ड सिस्टम आफ कास्ट हैज क्रियेटेड ए सिचुएशन व्हेयर सर्टेन बैकवर्ड क्लासेज आर आलसो इकोनामिकली बैकवर्ड।) जाति की पुरातन व्यवस्था के कारण ऐसी परिस्थिति पैदा हुई है कि कुछ पिछड़ी जातियां और पिछड़े वर्ग आर्थिक आधार पर भी पिछड़े हुए हैं। (दे हैव टु बि टेकेन केयर आफ रिजर्वेशन्स आन दि कास्ट लाइन्स कैननाट बि डन अवे टोटली।) और उनको आरक्षण की सुविधाएं जातिगत आधार पर देने से पूर्णतया नकार नहीं सकते। (बट आई अन्डरस्टैन्ड एण्ड आई एग्री देट बिकाज आफ लोप-साइडेड डेवलपमेन्ट आफ आवर इकोनामी सर्टेन पीपुल इन दि अपर कास्ट्स आर आलसो पुवर।) लेकिन मैं इस बात से सहमत हूं और मैं यह समझता हूं कि जो हमारा आर्थिक विकास है वह इस प्रकार हुआ है कि उसमें चाहे कुछ उच्चवर्ग के लोग हैं वे भी गरीब हैं। (देअर एरे पीरेशन्स एण्ड होप्स आर आलसो टु बि टेकेन इन्टु कन्सीडरेशन) उनकी आकांक्षाओं व समस्याओं को भी ध्यान रखना है। (वी शैल हैव टु मेक ए सिन्थेसिस एण्ड फाइन्ड सोल्यूशन आफ दीज प्राब्लम्स) हमें कोई बीच का रास्ता निकालना होगा और इन समस्याओं के निदान का रास्ता ढूंढना होगा।

तो एक सिंथेसिस का रास्ता ढूंढना है। मैं कहना चाहता हूं कि यह समन्वय ढूंढा जा सकता है। मुख्य मंत्री जी इसका उल्लेख आज अवश्य करेंगे। उन्होंने अपनी पूर्व घोषणा में कहा था कि आर्थिक आधार पर भी वह ध्यान देंगे। मैं चाहता हूं कि वह आज इसके बारे में भी बतायें।

नोट :–[XX] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

मुख्य मंत्री जी ने पर्वतीय क्षेत्र के बारे में भी उल्लेख किया था । पर्वतीय क्षेत्र के जो आठ जिले हैं वहां पर सामाजिक ढांचा हमारे यहां के ढांचे से भिन्न है । प्रदेश के भिन्न-भिन्न भागों का सामाजिक ढांचा भिन्न-भिन्न है । बुन्देलखण्ड, मध्य उत्तर प्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश, दक्षिण भारत का सामाजिक ढांचा भिन्न-भिन्न है । पर्वतीय क्षेत्र में मान्य पिछड़े वर्गों की संख्या बहुत कम है ।

मण्डल आयोग की रिपोर्ट में आरक्षण का एक मुख्य आधार महिलाओं के बारे में है कि जहां महिलाएं खेती के कार्य करती हैं वहां भी आरक्षण होना चाहिए । महिलाएं सबसे अधिक पर्वतीय क्षेत्र में खेती से सम्बद्ध कार्य करती हैं । तो प्रदेश के कुमायूं गढ़वाल पर्वतीय क्षेत्र में आरक्षण का प्राविधान भी होना चाहिए । यह आधार जहां-जहां लागू होता हो उसके अलावा आर्थिक आधार को जोड़ना है । इन सुझावों को मानते हुए कोई रास्ता निकालना है । जैसे कर्पूरी साहब का कर्पूरी फार्मूला बिहार में निकला था, जैसे हमारे राष्ट्रीय नेता कांग्रेस के अध्यक्ष राजीव गांधी का राजीव फार्मूला घोषित हुआ है, उसी प्रकार का कोई रास्ता निकालना है ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री–

राजीव गांधी फारमूला क्या है, बता दीजिये ?

श्री नारायण दत्त तिवारी–

मैं चाहूंगा कि राजीव फार्मूला, कर्पूरी ठाकुर फार्मूला, मुंगेरी लाल रिपोर्ट, छेदीलाल साथी रिपोर्ट आदि का, जब तक हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट का स्टे आर्डर है, अध्ययन हो और अध्ययन करके कोई ऐसा रास्ता निकालें कि 27 प्रतिशत की संस्तुति ऐसी रखे जो खपने लायक हो जाय ।

(माननीय सदस्यों द्वारा मेजें थपथपाई गयीं ।)

आज मैं यह भी कहूंगा कि एक नये दृष्टिकोण, एक नये आधार पर प्रदेश में शासन चलना चाहिए । शायद मुख्य मंत्री जी को मालूम न हो, आज जिलों में बहुत जगह अशान्ति है । तमाम जिलों में कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारियां अकारण की गयीं । विकास कार्य रुक गये । ये बातें मा0 मुख्य मंत्री जी की जानकारी में होंगी । मैं उन सब तथ्यों के उदाहरण नहीं देना चाहता जिनसे हमारे कांग्रेस जनों में विभिन्न प्रकार से क्षोभ है ।

(कांग्रेस के मा0 सदस्यों द्वारा मेजें थपथपाई गईं ।)

(सत्तापक्ष द्वारा विरोध प्रकट करने से व्यवधान ।)

(व्यवधान)

लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि चन्द जिलों में लोग अपने को मिनी चीफ मिनिस्टर घोषित करते घूम रहे हैं । हो सकता है, नहीं होंगे, लेकिन ऐसा लोग कह रहे हैं । मैं इस संबंध में मुख्य मंत्री जी से बातें कर चुका हूं । यह सब धांधली निषिद्ध होनी चाहिए ।

मुझे भी चार बार मुख्य मंत्री के रूप में सेवा का मौका दिया गया । मैंने भी जीवन के प्रारंभ में घास काटी, रल जोता, जानवर चुराये, सभी खेती के कार्य किये । मैं भी किसान के घर में पैदा हुआ और दूसरे छात्रों से किताबें मांग-मांग करके हमने हाई स्कूल और इण्टर पढ़ा । मुझे बड़ी खुशी है कि आज इटावा के एक किसान परिवार का बेटा मुख्य मंत्री है । हमें बड़ी प्रसन्नता है । पर आज मुख्य मंत्री के नाम पर कुछ जिलों में कुछ लोग अपने को मिनी मुख्य मंत्री कह रहे हैं । यह परम्परा आपने ही डाली और आपने ही खण्डन भी किया । इसका आप स्पष्टीकरण कर दें, ताकि यह असंतोष समाप्त हो जाय । मुझे भी नुकसान उठाना पड़ा । चन्द लोग हमारे नाम पर बिना हमारी जानकारी के कभी-कभी ऐसा करते थे । मुझे सावधान करना पड़ा कि खबरदार मेरे नाम पर कुछ न करें ।

(व्यवधान)

आज प्रदेश की जनता को दुखी होने का एक और कारण है, बढ़ती हुई महंगाई । पिछले दिनों भारत सरकार के सहयोग या असहयोग से आप को प्रदेश की नाकाबंदी करनी पड़ी । ट्रेनें बन्द करने में भारत सरकार ने जरूर आपको सहयोग दिया । सी0 पी0 आर0 एफ की कम्पनियां, इन्डो तिब्बत बार्डर फोर्स भेज कर सहयोग दिया। लेकिन बात चीत करने में सहयोग नहीं दिया । सभी दलों के विधायक यहां पर बैठे हुए हैं, पूछिये प्रदेश के अधिसंख्य जिलों में वस्तुओं के क्या भाव हो गये थे । 15 दिन तक, 20 दिन तक 25–30 रुपया प्रति किलो के लगभग टमाटर हो गया था । आलू 10 रुपये प्रति किलो, गोभी 5 रुपया, 20–25 रुपया किलो दाल, तोल सरसों 40 रुपया और इसी प्रकार कुकिंग गैस सिलेण्डर 250 रुपये का और वह भी मिला नहीं ।

(व्यवधान)

आज यह महंगाई सबसे ज्यादा परेशान किये हुए है । इस प्रश्न पर पहले जो नयी केन्द्रीय सरकार है और प्रादेशिक सरकार की नयी पृष्ठ भूमि में पहला कार्य होना चाहिए महंगाई रोकना, चीजों को सुलभ कराना, दामों को गिराना, दाम बांधों कमेटियां बनाना। यह सब व्यापारियों की अन्धाधुन्ध गिरफ्तारियों से होने वाला नहीं है ।

हम सब जानते हैं कि देश की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है । मुख्य मंत्री जी ने उसका उल्लेख किया था । आज 1 खरब 50 अरब रुपये के घाटे का बजट केन्द्र में हो रहा है । चन्द्र शेखर जी क्या करेंगे मैं नहीं कह सकता । कहां से रुपया लायेंगे जनता दल के घोषित वादों को पूरा करने के लिए? आज यह हालत है कि हमारे पास केवल सात दिन का फारेन एक्सचेंज रिजर्व है । कहां से डीजल मिलेगा, कहां से तेल मिलेगा ?

आज यह हालत है कि करोड़ों लोगों को खाना नसीब नहीं हो रहा है । लगातार कर्फ्यू की वजह से जहां मैं गया हूं वहां महीनों से बच्चों को दूध नहीं मिला है । सभी वर्गों के गरीब मजदूर जिनको खाना व रोजी मयस्सर नहीं हो रही है कैसे जिन्दा हैं। कर्फ्यू की वजह से करोड़ों को कितनी पीड़ा है यह हमने देखा है । कर्फ्यू के कारण लोग मजदूरी नहीं कर सकते हैं, रिक्सा नहीं चला सकते, तांगा नहीं चला सकते । कहां से बच्चों को दूध दें ।

भाव आसमान छू रहे हैं और हम बैठे-बैठे चुनाव की राजनीति कर रहे हैं। यह सब नहीं होना चाहिए। हम इस स्थिति का सामना करने के विश्वास की लक्ष्मण रेखा पर खड़े रहने को तैयार हैं, इसलिए कि यह जो असली मुद्दा है मंहगाई का, इसकी तरफ आपका ध्यान जाय, केन्द्र का ध्यान जाय। इण्टरनेशनल मानीटरी फण्ड से विदेशी मुद्रा लेनी है या नहीं ? रुपया कहां से आयेगा ? कितनी जरूरत है, आज उत्तर प्रदेश को मिट्टी के तेल की, वनस्पति घी की, दाल आदि आवश्यक वस्तुओं की ? यह सब कहां से आयेगा ?

बजाय कर्फ्यू के शासन और जिलाधिकारी विकास कार्यों में लगें। विकास की रुकी हुई और सिसकती हुई योजनाएं चालू हों और लोगों को राहत पहुंचाने के लिए कदम आगे बढ़ायें जायं। यही हमारा सुझाव है और हमारी मांग भी है। ऐसा वातावरण पैदा होना चाहिए कि इस प्रस्ताव पर निर्णय के बाद शान्ति से और दत्तचित्त होकर प्रदेश के सामने जो समस्याएं खड़ी हैं, उनका सामना कर सकें।

यह मेरे पास मुख्य मंत्री जी का बजट भाषण है। आज यह स्थिति है कि बजट भाषण के अनुसार आदेश हो गये हैं लेकिन बजट की धनराशि बहुत जिलों में पहुंची ही नहीं। कारण क्या है ? प्रदेश के खजाने में धनराशि है ही नहीं।

मुझे यह मालूम हुआ है कि यह कर्ज की माफी का, जिसका उल्लेख मुख्य मंत्री जी ने किया था, साढ़े पांच अरब रुपया कोआपरेटिव बैंक ने किसानों के खातों में दर्ज कर दिया लेकिन उस पर नाबार्ड ने केवल 80 करोड़ रुपया दिया। केन्द्रीय सरकार ने अपने आधे हिस्से का मुख्यांश नहीं दिया और प्रदेश सरकार पर आज सारा बोझ पड़ गया है।

कोआपरेटिव बैंक आगे कैसे खाद और बीज के लिए ऋण देंगे किसानों को, इस पर किसी का ध्यान नहीं गया है। हम तो शांति व्यवस्था के लिये कर्फ्यू लगाने में फंसे हैं। नाबार्ड कहां से पैसा देगा, रिजर्व बैंक से कौन बातें करेगा। मुद्रास्फीति बढ़ेगी। पिछली सरकार ने जितने वादे कर दिये हैं सारे पूरे कर दिये जायं तो 2 खरब 20 अरब का घाटा केन्द्र में होने वाला है। उसका मंहगाई पर क्या असर होगा आप सोच सकते हैं। मैं मा0 सदस्यों से आग्रह करूंगा कि वे बेसुरा राग न अलापें। मैं यह आग्रह करूंगा कि आज हमारा देश और प्रदेश संकटकालीन आपात काल से गुजर रहा है। मुख्य मंत्री जी आपका शुभ नाम मुलायम सिंह है। यह अवसर है कि मुलायम नाम की मुलायमित को अधिक मुलायम करें। इसके लिए सबका सहयोग लेने की आवश्यकता है।

नये संदर्भों में मैं स्पष्ट कहना चाहता हूं कि 10 तारीख से पहले हम अविश्वास की सीमा को लांघ चुके थे, लेकिन अब केन्द्र में प्रधान मंत्री चन्द्रशेखर जी आये हैं। एक नयी छवि वाला, स्पष्ट विचार वाला, ओजस्वी समाजवादी, आप प्रधान मंत्री के रूप में लेकर आये हैं। आप उनके साथ जुड़ रहे हैं और केन्द्र व प्रदेश में एक नयी टीम ने काम करना शुरू किया है।

हम आपको रचनात्मक सहयोग देना चाहते हैं, लेकिन याद रखें कि हमारा विश्वास एक लक्ष्मण रेखा पर खड़ा है। हम विश्वास की इस लक्ष्मण रेखा पर तब तक खड़े रह सकते हैं जब तक आप सही ढंग से साम्प्रदायिकता से लड़ते रहेंगे, जब तक आप सही ढंग से सर्वमान्य आरक्षण पद्धति को लागू करेंगे, जब तक आप बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि के मसले पर सही ढंग से विचार कर आगे कार्यवाही करेंगे व गरीबों के विरुद्ध विकास युद्ध चालू रखेंगे।

यह अकेले आप का प्रश्न नहीं है। आपने कहा भी नहीं। यह प्रश्न मुख्य मंत्री या उनके दल का नहीं है, यह प्रश्न उत्तर प्रदेश और भारत के भविष्य का है इसीलिए इसका हल निकलना चाहिए। कवि दुष्यन्त की एक पंक्ति मुझे याद है कि

"कोई हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
सिर्फ मकसद है कि यह सूरत बदलनी चाहिये
उठ गयी है पीर पर्वत सी मगर अब,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिये"

आज हम सबके सामने एक सामूहिक इच्छा होनी चाहिए कि सारे समाज को साथ लेकर कैसे आगे चलें ? कैसे उत्तर प्रदेश को आगे बढ़ायें और देश को आगे बढ़ाने के लिए गतिशील हों ? यू0 पी0 स्थिर रहता है तो देश स्थिर रहता है। असम की आग बुझाई जा सकती है, कश्मीर और पंजाब की आग बुझाई जा सकती है, अगर यू0 पी0 शान्त व प्रगतिवान रहे। यू0 पी0 के 14 करोड़ लोग शान्ति व एकता से रहें, और हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई की भावना व जात-जात की भावना से ऊपर उठकर उत्तर प्रदेश को आगे बढ़ायें तो भारत आगे बढ़ेगा।

(समय 3 बजे)

अगर यू0 पी0 में जात-पात और धर्म के नाम पर कर्फ्यू लगा रहे, आरक्षण के नाम पर शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाई न हो तो भारत में शान्ति कैसे होगी ? तो देश व प्रदेश की एकता, सामाजिक सद्भाव, विकास, एकता व अखण्डता की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए एक नये दृष्टिकोण को लेकर हम भी आगे बढ़ें व इस प्रस्ताव पर आगे विचार करें। भारत की एकता व अखण्डता की गंगा की महाधारा अविराम बहती रहे और इस एकता को बनाये रखने और सतत विकास के महान अभियान में हम सभी साथ मिलकर काम कर सकें, इसी आह्वान के साथ मैं ऐसे प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

(व्यवधान)

श्री धर्मपाल (बहराइच)–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

अब आप क्या कहना चाहते हैं ? आप बैठें।

श्री धर्मपाल–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

माननीय कल्यान सिंह जी आप बोलें।

(व्यवधान)

श्री धर्मपाल–

[x x x]

नोट :–[xx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री अध्यक्ष–

मैं आपकी बात नहीं सुनूंगा । जब मैं आपका नाम लूंगा तब आप अपनी बात कहें ।

श्री धर्मपाल–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

जब आपकी सदस्यता समाप्त होगी, तो मैं सुन लूंगा ।

श्री धर्मपाल–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

आपकी कोई भी बात कार्यवाही में नहीं आयेगी । आपको जब बाद में बुलाऊं तो आप बोल लें । यह व्यवधान नहीं होगा ।

माननीय कल्यान सिंह जी आप बोलें ।

(श्री धर्मपाल के बोलते रहने से व्यवधान)

श्री धर्मपाल–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

माननीय कल्यान सिंह जी आप बोलें ।

(श्री धर्मपाल बोलने की अनुमति न मिलने पर विरोध स्वरूप सदन से उठकर चले गये)

श्री कल्यान सिंह–

मान्यवर, अध्यक्ष महोदय, मैंने आज सरकार के द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत के प्रस्ताव पर माननीय नेता सदन का और माननीय नेता सहयोगी दल का भाषण सुना । मान्यवर, इन दोनों नेताओं का भाषण सुनने के बाद मुझे एक संस्कृत का श्लोक याद आ रहा है :–

उष्ट्रानाम् विवाहेषु गायन्ति गीत गदर्भाः ।

परस्परं प्रशंसति, अहो रूपमहो ध्वनि ।।

ऊंटों की शादी में स्तवन गायन के लिए गदहे बुलाये गये । दोनों एक दूसरे की प्रशंसा करने लगे । गदहों ने प्रशंसा की ऊंटों की कि भगवान ने आपको कैसा सुन्दर स्वरूप दिया है और ऊंट लौटकर कहने लगे परमात्मा ने आपको सरगम जैसा कैसा मधुर संगीत दिया है । मान्यवर, आज यहां पर मैं यह उम्मीद कर रहा था कि जब मुलायम सिंह जी बोलेंगे तो प्रदेश के कुछ उन मुद्दों पर रोशनी डालेंगे जो जनजीवन से जुड़े हुए हैं, जिनकी ओर कुछ संकेत मा0 नारायण दत्त तिवारी जी ने दिया है । लेकिन वे उन मुद्दों पर रोशनी नहीं डाल सके । आज एक ऐसी सरकार का विश्वास मत का प्रस्ताव इस सदन में प्रस्तुत हुआ है जो धड़विहीन अस्तित्व हीन है । यह किसी दूसरे की बैसाखी पर चलने वाली सरकार है जो हर मोर्चे पर बुरी तरह से विफल हो चुकी है । यह सरकार 11 महीनों में बांझ साबित हो चुकी है । छः महीने का एलान किया गया

नोट :–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

था मुख्य मंत्री जी के द्वारा कि छः महीने के अन्दर प्रदेश में व्यवस्था ठीक कर देंगे लेकिन आज पूरा एक वर्ष बीत रहा है लेकिन व्यवस्था के परिवर्तन बच्चे का जन्म होता नहीं दिखता । इसलिए मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि यह सरकार जो हमारे सामने बैठी है वह 11 महीनों में बांझ साबित हो चुकी है । मान्यवर, आज नई शादी की है शायद कुछ हो जाये, लेकिन बड़ा जोर लगाना पड़ेगा । बड़ी बांझ औरत है मुलायम सिंह सरकार।

मान्यवर, आज महंगाई जनजीवन को त्रस्त कर रही है । महंगाई को दूर करने के लिए सरकार ने क्या उपाय किये हैं एक शब्द भी इसके सम्बन्ध में नहीं बोला गया और सदन का विश्वास प्राप्त करना चाहती है सरकार । आज हर चीज महंगी है, आटा, नमक, पेट्रोल, लोहा, सीमेन्ट, दाल, सब्जी हर चीज महंगी है । हां, श्री मुलायम सिंह की सरकार के 11 महीने के शासनकाल में दो चीज सस्ती हुई है वह है इन्सान की जान और नारी का सम्मान । किसानों और नौजवानों ने सत्ता परिवर्तन में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया था । आज उन नौजवानों और किसानों पर गोलियां चल रही हैं, नौजवान आत्मदाह कर रहे हैं । इन 11 महीनों में बेरोजगारी बढ़ी है । विकास के कार्य अवरुद्ध हुए हैं । सारे प्रदेश में अराजकता का साम्राज्य छाया हुआ है । इन 11 महीनों में कानून नाम की कोई चीज नहीं रह गयी है यही है मान्यवर, इन 11 महीनों की उपलब्धियों का एक छोटा सा ब्योरा है । मैं चाहता था कि मुख्य मंत्री जी इस पर कुछ रोशनी डालते । जिन मुद्दों को मैंने उठाया, उन सभी मुद्दों पर यह सरकार पूरी तरह विफल हुई है और इस नाते यह सरकार इस सदन में विश्वास मत प्राप्त करने की पात्र नहीं है ।

मैं दूसरी बात आरक्षण के बारे में कहना चाहता हूं । केन्द्र की सरकार ने आरक्षण को जिस जल्दबाजी में राजनीतिक कारणों से घोषित किया, उसी तरह से उत्तर प्रदेश में माननीय मुख्य मंत्री जी कर रहे हैं और डूबती सरकार को तिनके का सहारा देने के लिये ही उन्होंने आरक्षण की नीति घोषित की है । जहां तक भारतीय जनता पार्टी का प्रश्न है, यदि भारतीय जनता पार्टी की आरक्षण नीति को स्वीकार कर लिया जाय, तो देश में आत्मदाह की घटनायें समाप्त हो जायेंगी । हमारे लिये यह कोई नई बात नहीं है, 20 जुलाई, 1985 को भोपाल में भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्य समिति ने प्रस्ताव पारित करके आरक्षण की नीति घोषित की थी, जिसमें मोटे तौर पर 3 खण्ड किये गये हैं (1) अनुसूचित जाति और जनजातियों को आरक्षण यथावत् जारी रहना चाहिये (2) मंडल कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार पिछड़ी जातियों को आरक्षण की सुविधा दी जानी चाहिये, लेकिन पिछड़ी जातियों में सबसे पहले गरीबों से यह सुविधा प्रारम्भ की जानी चाहिए । (3) हम यह मानते हैं कि गरीबी पिछड़ेपन के कारणों में से प्रमुख कारण है, इसलिये अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ी जातियों के अलावा जो सवर्ण कही जाने वाली शेष जातियां बचती हैं, उनमें भी गरीबी के आधार पर उनको भी आरक्षण की सुविधा स्वीकार की जानी चाहिये । अगर इस आधार पर आरक्षण की नीति को लागू कर दिया जाय, तो मेरा विश्वास है कि लोगों में जो आक्रोश है, वह आक्रोश समाप्त हो जायेगा । मान्यवर, मैं जानता हूं कि मेरे पास समय कम है, इसलिये मैं अपनी बात को सूक्ष्म में कहूंगा । एक बात मैं और कहना चाहता हूं कि इस 11 महीने में हमारे प्रदेश ने जो पाया है, वह घोर जातिवाद, घनघोर सम्प्रदायवाद और राजनीति का अपराधीकरण ।

आयुर्वेद के सिद्धान्त के अनुसार तीन दोष बताये गये हैं—वात, पित्त और कफ। इनमें से यदि एक दोष भी कुपित हो जाय तो आदमी बीमार पड़ जाता है और अगर तीनों दोष एक साथ हो जायें, तो सन्निपात होता है। इस प्रकार जातिवाद, सम्प्रदायवाद और राजनीतिक अपराधीकरण जैसे तीनों दोष एक साथ इस सरकार में चल रहे हैं। इसलिए यह सरकार सन्निपात में चल रही है। इस सरकार को पता नहीं है कि यह कहती क्या है और करती क्या है? आज प्रदेश की स्थिति खराब हुई है, उसमें किसी अधिकारी को दोष नहीं देना चाहिए। मैं तिवारी जी की बात से सहमत नहीं हूं कि सारा दोष अधिकारियों का है। अधिकारी को बलि का बकरा नहीं बनाया जाना चाहिए। अधिकारी की क्या गलती, उसने तो आदेशों का पालन किया है। आदेश करने वाले हैं, माननीय मुलायम सिंह यादव, मुख्य मंत्री। आज जो पूरे प्रदेश की बिगड़ती हालत है, इसका गहराई से अध्ययन किया जाय, समीक्षा की जाय, तो इस गहराई में जो चीज मिलेगी, वह है मुख्यमंत्री का अहंकार, इसी कारण आज यह स्थिति पैदा हुई। इस अहंकार के कारण उत्तर प्रदेश की स्थिति खराब हुई है।

आज यहां साम्प्रदायिकता रोकने की बात कही जा रही है। यह करोड़ों रुपये लेकर जनता की गाढ़ी कमाई का तथाकथित सद्भाव रैलियों के नाम पर खर्च किया गया, इन सद्भावना रैलियों का क्या हुआ, इनमें घनघोर जहरीले भाषण, उत्तेजक भाषण दिये गये, आग लगाने वाले भाषण दिये गये, इस देश और प्रदेश के 85 प्रतिशत हिन्दुओं को गाली देने वाले भाषण दिये गये और अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के लिए भाषण हुए। तुष्टीकरण तो यहां तक चला गया कि मुख्यमंत्री ने गैर जिम्मेदारी के भाषण दिये। कानपुर की सभा में जब यह मुख्य मंत्री कहेंगे कि अल्प संख्यक अपनी सुरक्षा के नाम पर गैर कानूनी हथियार रखने के अधिकारी हैं। कोई भी मुख्य मंत्री क्यों न हो, अगर ऐसे गैर जिम्मेदार भाषण करेगा कि अमुक वर्ग या अल्पसंख्यक अपनी सुरक्षा के नाम पर गैर कानूनी हथियार रख सकता है तो ऐसी छूट देने से प्रदेश के अन्दर शान्ति नहीं हो सकती है और कानून-व्यवस्था ध्वस्त हो सकती है। पहले ही उनके पास अवैध हथियार कम नहीं थे, फिर इस घोषणा के बाद तो उनके पास गैर कानूनी हथियारों का जखीरा बढ़ गया है। जहां-जहां पर भी मुख्य मंत्री जी के भाषण हुए, सद्भावना रैलियां हुईं, उनमें से अधिकांश स्थानों पर या तो उस भाषण के दिन या फिर उस भाषण के बाद दंगे भड़के। हमने भी भाषण दिये, हम भी जनता के बीच में गये, हमने भी अपनी बात रखी, परन्तु एक भी उदाहरण नहीं दिया जा सकता कि हमारे भाषणों के बाद वहां पर कोई दंगा हुआ हो। जब तक यह तुष्टीकरण की बात होगी तब तक कभी भी साम्प्रदायिक सौहार्द नहीं हो सकता है। वोटों के लिए तुष्टीकरण की राजनीति की गई। हिन्दू मर जाय या मुसलमान मर जाय, इसकी मुख्य मंत्री जी को कोई चिन्ता नहीं है। आज पूरा प्रदेश साम्प्रदायिक जहर में डूबा हुआ है। यदि यही स्थिति रही तो इस प्रदेश के अन्दर साम्प्रदायिक सद्भावना का वातावरण पैदा नहीं किया जा सकता है।

मान्यवर, सबसे लम्बी बात माननीय मुख्य मंत्री जी ने राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद के प्रकरण पर कही है। उस प्रकरण पर मैं पहले अपनी बात कहूं, उससे पहले मैं एक बात कहना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि विश्व हिन्दू

के पास विदेशों से जो पैसा आया है, उसकी जांच होनी चाहिए। हम उसके लिए तैयार हैं लेकिन इसके साथ ही पिछले दिनों अरब देशों से जो करोड़ों रुपये मुख्य मंत्री जी के पास आये हैं बाबरी मस्जिद की सुरक्षा के नाम पर, उसकी भी जांच होनी चाहिए। एक बात और कही गई। देश से जो लाखों कार सेवक अयोध्या पहुंचे थे कई व्यवधानों के बावजूद, जिसकी चर्चा मैं करूंगा, उन पर माननीय मुख्य मंत्री जी ने आरोप लगाया कि ये लोग मन्दिर बनाने के लिए नहीं अपितु मस्जिद तोड़ने के लिए गये थे।

श्री अशोक बाजपेयी–

मान्यवर, समय की सीमा होनी चाहिए।

श्री कल्याण सिंह–

मुझे एक घंटे का समय चाहिए। सभी तो एक ही सुर में बोलने वाले हैं। मुझे सबका उत्तर देना है।

मान्यवर, मैं दो बातें केवल कहना चाहता हूं कि जिस समय मुख्य मंत्री के जहरीले भाषण अखबार में छपे हैं, उसी समय से प्रदेश भर में साम्प्रदायिकता की भावना का विषाक्त वायु मण्डल में फैला है और एक काफी गहरी खाई हिन्दू-मुसलमानों के बीच पैदा हो गयी है और मान्यवर, साथ ही मैं उस आरोप का खण्डन भी करना चाहता हूं कि कार-सेवक मंदिर बनाने नहीं बल्कि मस्जिद तोड़ने गये थे। 30 अक्टूबर को मस्जिद तोड़ने नहीं बल्कि मुख्य मंत्री मुलायम सिंह और इस सरकार का अहंकार तोड़ने के लिए गये थे और इस अहंकार को तोड़ने में सफलता पाई। वहां जो कुछ घटा है, उसके लिए श्री मुलायम सिंह स्वयं जिम्मेदार हैं।

मान्यवर, अयोध्या के अन्दर उस बाबरी मस्जिद के अलावा 5 मस्जिदें और हैं। अगर मस्जिद तोड़ने का किसी का इरादा होता तो वह मस्जिद तोड़ने की बात सोचता किन्तु 5 मस्जिदों में से किसी भी मस्जिद को कार-सेवक ने छुआ तक नहीं। साथ ही अयोध्या के अंदर अरसे से लगभग 5 हजार मुसलमान रह रहे हैं, अगर ऐसा कोई मुद्दा जो हिन्दू और मुसलमान के बैर का रहा होता, तो जहां पर लाखों कार-सेवकों के रूप में लोग पहुंचे हैं, उनमें से किसी एक ने भी उन 5 हजार रह रहे मुसलमानों की एक उंगली तक को नहीं छुआ या घायल किया है और अगर उन कार-सेवकों को वहां जाने दिया होता और उन्हें बीच में रोका गया न होता तो निश्चित तौर पर जो 30 तारीख को हादसे हुए हैं, वह टाले जा सकते थे, परन्तु 30 तारीख की अपनी पराजय के बाद मुख्य मंत्री जी बौखला गये और अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठे, इसी वजह से संबंधित अधिकारियों को खूब डांटा और यह आदेश दे दिए कि इन सब कार सेवकों को मौत के घाट उतार दो, और लाशें भी मत गिनो, इस तरह से जितनी गोलियां चाहें चलवायीं (आरोप एवं प्रत्यारोप से व्यवधान) फिर मान्यवर इस बीच जो भी हुआ और फिर दो नवम्बर को अयोध्या में जो कुछ हुआ और इस प्रदेश में जो कुछ नर-संहार हुआ, उस पर मानवता सदियों तक रोयेगी, मान्यवर सदियों तक। जबकि सभी कारसेवक शांत थे वह कार-सेवक निहत्थे थे, 'जय सिया राम' व 'जय राम' के नारे ही लगा रहे थे, उन पर गोलियां चलायी गयीं (आरोप-प्रत्यारोप के कारण घोर व्यवधान)

दूसरी बात और कहना चाहता हूं कि आज यह मौजूदा सरकार कितने पैसे काले-बाजारों से ले रही है, जिसकी वजह से खरीद व फरोख्त की क्रिया जोरों पर है, (शोर) फिर मान्यवर, यही कहना चाहता था कि दो नवम्बर को अयोध्या में नर-संहार बड़ी क्रूरता और निर्ममता के साथ हुआ, बेतहाशा गोलियां चलायी गयीं और इस पर जो भाषण दिए जा रहे हैं, वह सब असत्य हैं। मुलायम सिंह ने सरकारी प्रचार माध्यमों से भी झूठ बुलवाया। कभी कहा जा रहा है कि 5 मरे हैं, कभी कहा जा रहा है 9 मरे हैं, जबकि शहीदों की संख्या सैकड़ों में है आपको मरने वालों पर कोई मोह नहीं है, आप इतने निष्ठुर हैं कि जरा भी संवेदनशील नहीं हैं। अरे उन माताओं से पूछो जिनके बेटे नहीं रह गये हैं। उन बहनों से पूछो जिनके भाई नहीं रह गये हैं। सत्ता पक्ष में जो लोग बैठे हैं जिनमें संवेदना नाम की कोई चीज ही नहीं है और आज नर संहार का औचित्य ठहरा रहे हैं। मैं कहता हूं कि डायर ने भी इतना जघन्य हत्याकाण्ड नहीं करवाया था, जितना इन्होंने करवाया है। 2 नवम्बर, 1990 को अयोध्या में जो नर-संहार हुआ, निर्दोष नागरिकों को जिस तरह से मारा गया, उनका संहार हुआ, उसको देखकर डायर भी पीछे रह गया है। लाखों की तादाद में लोग आये, अनेक प्रान्तों से लोग आये, लेकिन इस सरकार ने उनके साथ जो सलूक किया, उससे यह सरकार हिन्दुस्तान की नजरों में गिर गयी है, उसके माथे पर कलंक का दाग लग गया है। निरीह और निहत्थों पर गोलियां चलायी गयी हैं, लाठियां चलायी गयी हैं।

मुख्य मंत्री जी ने अभी अपने भाषण के दौरान कहा कि उन्होंने माताओं और बहनों की लाज बचाने के लिए शौचालय बनवाये हैं, लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि उनकी यह दलील उस समय कहां चली गयी, जब उन्होंने अयोध्या में सरयू के किनारे माताओं और बहनों को नंगा करके भगाया है, तब वह कौन सी लाज बचा रहे थे, कौन सी शर्म बचा रहे थे। मैं कहना चाहता हूं कि बिना इमरजेंसी लगाये, उन्होंने प्रदेश में इमरजेंसी का माहौल ला दिया है, उससे ज्यादा बदतर हालत हो गयी है। प्रेस की आजादी पर डाका डाल दिया है। दुनिया के सामने इस सरकार की हत्या हो गयी है। मैं मांग करता हूं कि अगर इनमें हिम्मत है तो 30 अक्तूबर और 2 नवम्बर को जो अयोध्या में नर संहार किया गया है, उसकी जांच उच्च न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश द्वारा करायी जाये। मैं इसकी मांग करता हूं।

*संत श्रीराम–

मान्यवर, मैं श्री कल्याण सिंह जी से एक स्पष्टीकरण चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष–

अगर वह बैठ जायें, तो आप पूछ सकते हैं।

संत श्रीराम–

मैं आपके माध्यम से माननीय कल्याण सिंह जी से जानना चाहता हूं कि 2 तारीख के पहले एक तारीख को करो या मरो का नारा किसने दिया था, यह मैं कल्याण सिंह जी से पूछना चाहता हूं।

(व्यवधान)

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री कल्यान सिंह–

इनका प्रश्न क्या है, यह फिर से दुहरा दें । शोर शराबे में मैं सुन नहीं पाया ।

संत श्रीराम–

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूं कि पहली नवम्बर को अयोध्या जाने के लिए करो या मरो का नारा किसने दिया था और दूसरा यह कि जिन अशोक सिंहल ने करो या मरो का नारा दिया वह जत्थे का नेतृत्व करते समय कहां चले गए ?

श्री कल्यान सिंह–

धार्मिक आजादी पर अंकुश लगाया गया और उस अधिकार को प्राप्त करने के लिए जनता के सामने संघर्ष के अलावा और कोई रास्ता नहीं है ।

(कुछ सदस्यों द्वारा बोलने के कारण व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग शान्त रहें ।

श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, इससे भी अधिक कोई क्रूरतम हत्याकाण्ड हो सकता है कि एक भाई को गोली लग गई दूसरा भाई उसकी लाश को उठाने के लिये कोशिश करता है तो उसको भी गोली मार कर ढेर कर दिया । एक भाई को गोली लग गई और उसकी बहन उसके पास जाकर बिलख रही है और उसको भी गोली लगा दी । मान्यवर, एक अखाड़े के कमरे में कुछ कार सेवकों ने अपनी जान बचाई तो उसके किवाड़ को तोड़कर उनकी कनपट्टी में गोली लगाकर 5-6 को एक साथ मार दिया गया । मान्यवर, यह प्रारम्भ कहां से हुआ ? यह आपराधिक मानसिकता पैदा कहां से हुई । मेरा माथा उसी दिन ठनका था जिस दिन जब मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री ने दिल्ली में देश भर के मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन में यह मांग की कि अयोध्या में 30 तारीख को गोली चलाने की इजाजत दे दी जाय । इन्होंने पहले से ही मन बना लिया था कि 30 तारीख को गोली चलानी है । मैं नहीं समझता हूं कि कोई भी मुख्य मंत्री मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन में गोली चलाने के लिये पहले से अनुमति मांग कर हिंसा पर उतर सकता है । जिसमें वहां पर सभी दलों के मुख्य मंत्री थे सभी ने उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री के इस आचरण की निन्दा की । मान्यवर उसी हिंसक मानसिकता में यह हत्याकाण्ड हुआ । तैयारी पहले से ही थी, यह पूर्वनियोजित था उसको यह दबाना चाहते थे । लोक शक्ति ने राजशक्ति के घुटने टिका दिये थे, इसीलिये यह नरसंहार हुआ । इसके लिये सारी जिम्मेदारी है उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव की ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय कल्याण सिंह जी समय कम है आप 10 मिनट में समाप्त करें ।

श्री कल्यान सिंह–

मान्यवर, सही हिसाब तो यह है कि आपने मुझे अभी 10 मिनट ही दिये होंगे । जो व्यवधान हुआ है, उसको भी आप देखें ।

श्री अध्यक्ष–

समय नहीं है ।

लोक निर्माण, आबकारी एवं संसदीय कार्य मंत्री (श्री बेनी प्रसाद वर्मा)–

52 20 नवम्बर, 1990 अंक 2

मान्यवर, साढ़े तीन बजे हैं और 5 बजे मतदान करना है । अभी और नेता भी बोलेंगे, माननीय सदस्य और मुख्य मंत्री जी भी बोलेंगे । विधान सभा में सार्वजनिक सभाओं की तरह भाषण नहीं होगा. . . (व्यवधान) ऐसे भाषणों से ही देश की तबाही की गई है । . . (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

मैं माननीय मंत्री जी से कहूंगा कि वे रोष में न आयें । चूंकि वह बीमार हैं (व्यवधान)

श्री बेनी प्रसाद वर्मा–

बीमार तो आपने पूरे देश को कर दिया है । गरीब देश के लोगों के लोगों के आगे वोट की राजनीति के लिये आपने पूरे देश को बीमार कर दिया । ऐसे भाषणों पर रोक लगनी चाहिए । आपको यह बर्दाश्त नहीं है कि एक किसान का लड़का मुख्य मंत्री बने । उनकी फसल लूट ली है और यह लूटने वाले लोग हैं । जाल फैलाने वाले लोग हैं।

*श्री भोला पाण्डेय–

एक स्पष्टीकरण चाहता हूं । एक मिनट का समय दे दें । अध्यक्ष जी, मैं नेता भाजपा से जानना चाहता हूं कि वे श्री राम का ढिंढोरा पीटे जा रहे हैं । भगवान श्री राम अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने के लिये जब लंका गये थे तो क्या वे अपने साथ वहां चुनाव चिह्न लेकर गये थे जिस प्रकार से आप अयोध्या गये थे ?

श्री अध्यक्ष–

यह कोई स्पष्टीकरण नहीं है । उनके जो विचार हैं उन्हीं पर आप स्पष्टीकरण मांगे । नये-नये प्रश्नों पर आप स्पष्टीकरण चाहते हैं । माननीय कल्याण सिंह जी, आप बोलें ।

श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, इस सरकार के पास इस बात का क्या जवाब है कि जिस निर्विवादित स्थल पर शिलान्यास हुआ है वहां पर जो छतरी लगायी गयी थी उसको मुख्य मंत्री जी की मौजूदगी में तोड़ा गया (व्यवधान) फिर जनता को गुमराह करने के लिये मीडिया से झूठ बुलवाया गया कि वहां पर छतरी नहीं तोड़ी गयी लेकिन वह बात सामने आई जब न्यायाधीशों और वकीलों का कमीशन वहां गया और उसने रिपोर्ट दी है कि छतरी तोड़ी गयी और मूर्ति हटाई गयी है । तो यह सारी बातें मुख्य मंत्री जी ने उत्तेजना पैदा करने के इरादे से नहीं की तो और क्या किया इसको दूसरी क्या संज्ञा दी जा सकती है ? (व्यवधान) मैं भारतीय जनता पार्टी की ओर से मांग करना चाहता हूं कि राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद का मामला हल हो जाय (व्यवधान) राम मंदिर आप बनवा दें तो सारे वोट आप ले जांय हमें इसका कोई डर नहीं, कोई चिन्ता नहीं । (व्यवधान)

*श्री गोपीनाथ वर्मा–

[x x x]

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

नोट:–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री अध्यक्ष–

मैं इजाजत नहीं देता, कल्याण सिंह जी आप बोलें (व्यवधान) वह तो कहते रहेंगे क्या किया जाय ? मुख्य मंत्री जी को भी सुनना है ।

*श्री शारदानन्द अंचल–

पिछले चुनाव में भाजपा को जनता ने अयोध्या से भगा दिया ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय कल्याण सिंह जी आप बोलें, 5 मिनट में समाप्त करें ।

श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, इस समस्या का समाधान करने के लिये बहुत दिनों से सत्यनारायण की कथा अलापी जा रही है और दो बातें कही जा रही हैं या तो वार्ता के जरिये हल कर लो या फिर न्यायालय के फैसले को मान लो (व्यवधान) वार्ता में इसलिये हल नहीं होने देंगे क्योंकि यह पूर्वाग्रह से ग्रसित है (व्यवधान) पूर्व प्रधान मंत्री ने 4 महीने का समय मांगा था । 11 महीने उनको मिल गये थे और आज के नये प्रधान मंत्री को 6 दिसम्बर 1990 से पहले हल करने के लिये समय दे दिया गया है । लेकिन उन पर मुख्य मंत्री जी ने इस विषय को लेकर एक व्यौरा देना आरम्भ कर दिया है कि उनके घर में कैसे फूट रही है, उसका वह काफी लम्बा व्यौरा दे रहे हैं लेकिन इस समस्या के समाधान के लिये उनके पास एक शब्द भी नहीं है । उनकी घर की फूट से मुझे कोई लेना देना नहीं है। मान्यवर, लालबत्ती मत दिखाइये ।

श्री अध्यक्ष–

5 मिनट में समाप्त करें ।

श्री कल्याण सिंह–

अब इनके मियां बीबी के झगड़े से हमें कुछ लेना देना नहीं है । क्या आप आज श्री मुलायम सिंह विश्वनाथ प्रताप सिंह को बुरा कह रहे हैं। कल चन्द्र शेखर को बुरा कहेंगे और परसों राजीव गांधी को बुरा कहेंगे। लेकिन मान्यवर, हमारा कहना है कि मुसलमान भाईयों को समझाया जा सकता था । किन्तु उल्टे उनको बरगलाया गया । उन्हें हमने समझाया तो कार सेवा के अंदर कुछ मुसलमान भाई भी अयोध्या गये थे और वहां शहीद भी हुए । मान्यवर, मैं हिन्दू मुसलमान का अब ज्यादा जिक्र नहीं करना चाहता हूं चूंकि समय आप नहीं दे रहे हैं । लेकिन इतना कहना चाहता हूं कि राम पूरे हिन्दुस्तान में रहने वालों के पूर्वज हैं और वह हिन्दू एवं मुसलमान के पूर्वज हैं । राम का जन्म अयोध्या में हुआ था और किसी की जन्मस्थली नहीं बदली जाती है । उसके नाते कहना है कि राम का मन्दिर अयोध्या में उसी स्थान पर बनना चाहिए । मान्यवर, आज भी वार्ता के जरिये कोई हल निकल सकता है तो मैं उसका स्वागत करूंगा ।

मान्यवर, रही मस्जिद की बात तो उसे आप न किसी दूसरे स्थान पर बना सकते हैं और उसमें नमाज अदा करने की व्यवस्था की जा सकती है। इससे झगड़ा हमेशा के लिये हल हो सकता है। न्यायालय वाले कोई फैसला नहीं दे पायेंगे और इसके इतिहास में मैं नहीं जाना चाहता हूं चूंकि न्यायालय के कितने ही फैसलों को नहीं माना गया, जैसे 12 जून, 1975 में हाई कोर्ट का और 1985 का सुप्रीम कोर्ट का फैसला नहीं माना गया और 40 सालों से भी इस विवाद का निपटारा नहीं हुआ। इसलिये

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

अदालत इस बात का फैसला नहीं दे सकती है और यदि फैसला दे भी देती है तो जिसके पक्ष में नहीं होगा वह उसको नहीं मानेगा। इस तरह यह मामला लटकता रहेगा। इसलिये आज सत्य नारायण की कथा को छोड़कर वार्ता के जरिये इस मामले को हल करें जिसके लिये हम तैयार हैं। (कुछ सदस्यों द्वारा टोकने पर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

अब आप समाप्त करें।

श्री कल्यान सिंह–

मान्यवर, दो अंतिम बातें और कहना चाहता हूं। मान्यवर, एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं कि एक फैशन बन गया है निगेटिव सेकुलेरिज्म का कि हिन्दू बहुमत को गाली दो और अल्पसंख्यकों का तुष्टिकरण करें और अपने को कहलाते हैं कि हम सेकुलर हैं। 85 प्रतिशत हिन्दुओं की भावनाओं को कुचलकर सेकुलेरिज्म की स्थापना आप नहीं कर पायेंगे। इस सत्य को आप मान लें।

(टोका टोकी से घोर व्यवधान)

श्री शारदानन्द अंचल–

मान्यवर, केवल एक स्पष्टीकरण मैं इनसे चाहता हूं . . .

श्री अध्यक्ष–

जब वह बैठ जायं, तभी आप स्पष्टीकरण पूछना।

श्री कल्यान सिंह–

एक आखिरी बात मेरी और आपसे। कहने के लिए तो बहुत कुछ है, लेकिन आप हमें समय नहीं दे पा रहे हैं, इस नाते केवल आखिरी एक बात। वैसे तो हमारे कांग्रेसी नेताओं को, कांग्रेसी मित्रों को इतना अधिकार है कि वह कोई भी फैसला करें, लेकिन मैं ऐसा समझता हूं कि इस सरकार को समर्थन देकर अयोध्या के नर-संहार को उन्होंने अपना समर्थन दे दिया है। मेरी अपनी नजरों में आज कांग्रेस ने आत्म हत्या कर ली है, मैं बताए देना चाहता हूं धर्मपाल जी ने . . . . (व्यवधान)

श्री नारायण दत्त तिवारी–

मैंने तो इस नर संहार या किसी नर संहार का समर्थन नहीं किया है, मैंने तो इसके लिए न्यायिक जांच की मांग की है।

श्री कल्यान सिंह–

मान्यवर, मुझे ऐसा लग रहा है कि जनता का रोष इस वर्तमान सरकार के खिलाफ बेहद है ही, लेकिन आज जो कांग्रेस ने उसके लिए अपना समर्थन घोषित किया है, यह भी उस रोष से अछूते नहीं रहेंगे . . . (व्यवधान) यहां सदन में मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं कि राजा परीक्षित को जब तक्षक नाग ने डस लिया था, तो उसके बेटे जन्मेजय ने अपने पिता के डसने का बदला लेने के लिए एक नाग यज्ञ किया था, नागों का सर्वनाश करने के लिए। तो उस यज्ञ में जो आहूति डाली जाती थी, उससे आ आकर नाग अग्नि में भस्म होते जाते थे। जब इस तक्षक नाग का नम्बर आया तो वह अपनी जान बचाने के लिए जाकर भगवान इन्द्र के सिंहासन के पायों से लिपट गया तो जन्मेजय ने बाद में जो आहूति दी यह कहकर आहूति दी कि "तक्षकाय इन्द्राय च स्वाहा"। तब इससे इन्द्र की कुर्सी-

उनका सिंहासन भी डोलने लगा था। तो उसी प्रकार से आज मुलायम सिंह यादव की हत्यारी सरकार को भस्म करने के लिए जनता स्वाहा की आहूति बोल रही है। अब चूंकि कांग्रेस ने मुलायम सरकार का समर्थन कर दिया है इसलिए अब जनता मुलायम सरकार और कांग्रेस दल दोनों के स्वाहा, सर्वनाश के लिए आहूति बोल देगी। मान्यवर, आखिरी बात, आज यह सदन प्रदेश की जनता की भावनाओं का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा है। जनता कुछ और चाहती है। मैं कांग्रेस के मित्रों से भी कहना चाहता हूं कि इनसे भी इनकी जनता यही चाहती है कि इस हत्यारी और खूनी सरकार का समर्थन न दिया जाए। इनके जिलाध्यक्ष और पार्टी पदाधिकारी भी इसी तरह की बात चाहते हैं। चूंकि सरकार ने और आपने सही निर्णय नहीं लिया है, इसलिए इस सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के बजाए मैं मान्यवर, आपसे मांग करता हूं कि इस विधान सभा को भंग किया जाए और नए चुनाव कराके नया जनादेश प्राप्त किया जाय। (व्यवधान) मैं चुनौती देकर कहना चाहता हूं कि आज यह चुनाव मैदान के बीच में आकर देख लें कि जनता क्या चाहती है और उनके साथ क्या व्यवहार करती है। मान्यवर, इन्हीं शब्दों के साथ मैं पूरी शक्ति के साथ उस प्रस्ताव का विरोध करता हूं जो माननीय मुख्य मंत्री जी ने अपनी सरकार के लिए विश्वास प्राप्त करने के लिए यहां प्रस्तुत किया है।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा जय श्रीराम, जय श्रीराम के नारे लगाए जाने के घोर व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

माननीय अध्यक्ष, महोदय, मुझे दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि. . .

श्री मुलायम सिंह यादव–

आपकी आवाज ही नहीं आ रही है।

कुंवर रेवती रमण सिंह उर्फ मणि जी–

अभी आवाज आएगा और आपको सुनाई देगी। मेरी आवाज इतनी धीमी नहीं है। मेरी आवाज दूर-दूर तक सुनाई पड़ेगी। मैंने जैसा मुख्य मंत्री जी ने कहा एक सहयोगी के रूप में, एक परिवार के रूप में इनसे हमने व्यवहार रखा है। जो लड़ाई आज से 3–4 साल पहले शुरू हुई थी उसमें हमने तन मन धन से इनका साथ दिया था और यह तय किया गया था. . . (व्यवधान) सुन लें क्या सुनना भी गवारा नहीं है, क्यों पीड़ा हो रही है। उस लड़ाई में एक बार नहीं अनेक बार मुख्य मंत्री जी ने वायदा किया था और इस चुनाव में भी कहा था कि जनता दल कभी टूटेगा नहीं। एक बार जनता दल टूटा तो नौ साल के लिए जनता दल बाहर रहा था। मान्यवर, आज जनता दल टूटा तो काला पानी की सजा जनता देगी।

(सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा कुछ कहने पर व्यवधान)

लेकिन मान्यवर, मैंने इनसे यह भी कहा कि जनादेश मिला था जनता का, गैर कांग्रेसवाद पर, कांग्रेस के खिलाफ जनादेश मिला था और यह जनादेश भी मिला था कि पांच साल तक कांग्रेस के विरुद्ध हम यहां पर सरकार चलाएंगे और जनता को यह साबित करके दिखाएंगे कि यह जनता दल की सरकार कांग्रेस के खिलाफ पांच साल तक लगातार चल सकती है और जनता की आर्थिक स्थिति से लेकर गांव के विकास तक चौधरी चरण सिंह के सपनों

को पूरा करने से लेकरके आचार्य नरेन्द्र देव डा0 लोहिया और जय प्रकाश नारायण के सपनों को पूरा करेंगे । एक बार नहीं अनेक बार माननीय मुख्य मंत्री ने डाक्टर लोहिया और चौधरी चरण सिंह के नाम को उद्धृत किया है और कहा कि उनके पदचिन्हों पर चलेंगे उन्हीं के सपनों को साकार करेंगे, लेकिन मान्यवर, कदाचित मुख्य मंत्री भूल गये मैंने विश्वासघात नहीं किया । मैंने मुख्य मंत्री जी से कह दिया कि जनता दल टूटना नहीं चाहिए । जनता दल एक रहना चाहिए । मैं पार्टी के साथ हूं और पार्टी के साथ रहूंगा । मुख्य मंत्री जी ने कहा कि मैं आपसे बात करूंगा और इन्होंने बात नहीं की और मान्यवर, इसलिए आज पूरे देश में जनता दल की सरकार टूटी है तो कुछ मुद्दों पर टूटी है। जनता दल अगर टूटी है तो कुछ मुद्दों और सवालों पर टूटी है और मान्यवर, अभी मैं नेता विरोधी दल को बधाई दूंगा उन्होंने उन मुद्दों को खुलासा किया कि जनता दल क्यों टूटी है, मंडल आयोग की सिफारिशों पर जनता दल टूटी है। बाबरी मस्जिद और राम-जन्म भूमि के सवाल पर जनता दल टूटी है । मुख्य मंत्री जी ने एक बार नहीं अनेक बार कहा मुझे याद है उन्होंने कहा था कि मुझे कुर्सी दांव पर लगानी पड़ेगी तो लगा दूंगा, लेकिन समझौता नहीं करूंगा। मान्यवर, मुख्य मंत्री जी की कुर्सी तो आज भी नहीं गई लेकिन प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की कुर्सी और केन्द्रीय सरकार किन्हीं मुद्दों के कारण चली गई । मान्यवर, मैं श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और उनके सहयोगियों को बधाई दूंगा कि उन्होंने समझौता नहीं किया। अगर वह समझौता कर लेते तो कदाचित् विश्वनाथ प्रताप सिंह अभी आने वाले 4 साल तक इस देश के प्रधान मंत्री रहते। मैंने एक बार नहीं अनेकों बार मुख्य मंत्री जी से कहा था कि आप अपने मन में कोई संशय मत रखिये। कोई आपको [xxx] नहीं कर रहा है । कोई आपको हटाना नहीं चाहता। कोई दूसरा मुख्य [illegible] बनना नहीं चाहता लेकिन एक संशय मुख्य मंत्री मन में बनाये रहे और उसका परिणाम यह है कि जनता दल का विभाजन हुआ । सम्मानित सदन के नेताओं में मुख्य मंत्री प्रथम होता है। [xxx] के आफिसर्स से तो बात होती रही लेकिन केबिनेट में यह मसला कभी नहीं तय किया गया और इसीलिये मान्यवर, यह दुर्दशा हुई। हम बाबरी मस्जिद की रक्षा नहीं कर पाये ।

मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूं। आपने इल्जाम लगाया है कि माननीय विश्वनाथ प्रताप सिंह ने प्रधान मंत्री के रूप में आपको सहयोग नहीं दिया। अभी सम्मानित नेता विरोधी दल ने उल्लेख किया कि 80 हजार पैरा मिलेटिरी फोर्स, बी0एस0एफ0, सी0आर0पी0, तिब्बतन फोर्स और मिलेटिरी भी आपके सहयोग के लिये भेजी गई। आपने यह भी आदेश करा दिये कि कोई ट्रेन नहीं चलेगी। आपके सहयोग में ट्रेनें भी बन्द कर दी गई। मान्यवर, प्लेन भी बन्द करा दिये गये । हर तरह का समर्थन और हर तरह से आपका सहयोग दिया गया। मान्यवर, आज एक समझौता हो गया । मैं तिवारी जी को बधाई दूंगा कि उन्होंने सशर्त समर्थन आपको दिया है। आपने कहा कि श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने आरक्षण के मामले में धोखा किया। अगर उन्होंने धोखा किया होता तो मान्यवर, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार कदाचित् जाती नहीं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में रूकवा दिया

(इस समय 3 बजकर 58 मिनट पर श्री उपाध्यक्ष पीठासीन हुए)

और क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि आपने हाई कोर्ट में स्टे करवा दिया अगर श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने ऐसा किया तो क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपने ऐसा क्यों किया? दो महीने पहले कैबिनेट में यह लिया गया। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जो किया

नोट:—[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

है, आपने जो किया है दोनों में बहुत फर्क है। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पब्लिक अन्डर टेकिंग में भी सभी निगमों में आरक्षण दिया है। आपने नहीं दिया है। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मेरिट के अलावा 27 प्रतिशत का किया है आपने नहीं किया है। मान्यवर, आपने तब किया जबकि आपको मालूम हो गया कि सुप्रीम कोर्ट में स्टे हो गया है और यहां पर भी हो जायेगा। तब आपने लागू किया। मैं आपसे पूछना चाहूंगा कि आपकी नीति के बारे में तिवारी जी ने कहा है वह भूमि कौन सी मानी जायेगी आप जहां मन्दिर का निर्माण करवायेंगे। मान्यवर, क्या आप यह बतलायेंगे कि जैसा आरक्षण की नीति के बारे में तिवारी जी ने कहा है कि उसमें सभी को समाहित किया जायेगा आपकी आरक्षण की नीति के बारे में क्या सुझाव है? आपके अनुसार 27 फीसदी करने का है या 15 फीसदी जैसा कि तिवारी जी ने कहा है। क्या आर्थिक आधार पर भी करेंगे। मान्यवर, आप हिन्दी के बारे में बड़े नाराज थे। मान्यवर, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या भारत सरकार के काम-काज हिन्दी में होने लगे हैं? (समय 4 बजे) क्या माननीय प्रधान मंत्री जी से लेकर और जो मंत्री अभी बने हैं क्या वह सभी हिन्दी में भाषण दे रहे हैं या अंग्रेजी में भाषण दे रहे हैं। अगर अंग्रेजी में बोल रहे हैं तो कैसे बोल रहे हैं यदि हिन्दी की नीति है क्या ?

मान्यवर, इसी तरह से केन्द्र सरकार आर्थिक आधार पर आरक्षण देने की बात कर रही है और आप 27 फीसदी की बात कह रहे हैं। इनमें कौन सी बात सही है यह मेरी समझ के बाहर है। मान्यवर, तिवारी जी ने सरकार को सशर्त समर्थन दिया है तो यह कितने दिन की सरकार है। मान्यवर, मैं अजीत सिंह जी को बधाई देना चाहता हूं कि जब पिछले सदन में तमाम सदस्यों ने आपके खिलाफ विद्रोह कर दिया था तब अजीत सिंह ने विद्रोहियों को समझाया था और कहा था कि मुलायम सिंह की सरकार नहीं गिरनी चाहिए। (मेजों की थपथपाहट)। उन्होंने कहा था कि मुलायम सिंह की सरकार चलना चाहिए। मैं अजीत सिंह से 2–4 बार से ज्यादा नहीं मिला हूं लेकिन उन्होंने कभी मुझसे नहीं कहा कि सरकार गिर जानी चाहिए। आपको बताया गया कि शरद यादव आपका विरोध करते हैं लेकिन आज तक शरद यादव ने एक शब्द नहीं कहा कि मुलायम सिंह की सरकार को हटा दो। मान्यवर, इमरजेंसी में, आपातकाल जब लगा था और माननीय हमारे साथी जो उधर बैठे हुए हैं उन्होंने इमरजेंसी में ज्यादतियां कीं, पत्रकारों पर सेंसरशिप लगायी। कुछ पत्रकार बंधुओं ने सनसनीखेज खबरें लिखीं, लेकिन उनके ऊपर रा0 सु0 का0 लगाना, विज्ञापन बंद करना, उनको प्रताड़ित करना यह कहां का सही काम है। जिन उसूलों और सिद्धान्तों के लिए आपने संघर्ष किया उन्हीं को आप भूल गये हैं। आज आपका कद बहुत ऊंचा हो गया होता अगर आप इस सदन में इस्तीफा देने की घोषणा कर देते और यह कहते कि हम बैसाखी पर सरकार नहीं चलायेंगे।

आज आपने अपना कद बहुत छोटा कर लिया है। आजम साहब बैठे हैं, मेरे मित्र हैं, आपने कहा कि पी0 ए0 सी0 बर्बर है, पी0 ए0 सी0 लूटपाट करती है, माइनारिटीज को सताती है। लेकिन पिछले 2 महीनों से आप पी0 ए0 सी0 की लगातार तारीफ कर रहे हैं तो यह विरोधाभास क्यों? बाबरी मस्जिद की आप रक्षा नहीं कर पाये, मैं पूछना चाहता हूं कि आपकी इंटेलीजेंस क्या कर रही थी। इतनी बड़ी संख्या में, हजारों

की संख्या में कार सेवक वहां पहुंच गये, जब वहां लाखों पुलिस लगी थी तो कैसे वह लोग वहां पहुंच गये यह मेरी समझ में नहीं आता। वहां पर सिंघल साहब, दीक्षित जी कैसे पहुंच गये। आपकी इंटेलीजेंस वहां देखती और कोई कार्यवाही नहीं की। कार सेवक मस्जिद के ऊपर पहुंच गये, बाउण्डरी गिरा दी। इतना ही नहीं पूरे प्रदेश में करीब 2 दर्जन से ज्यादा मस्जिदें गिरायीं गयीं। आज पूरे समाज में एक भावना पैदा हो गयी है जो मान्यवर, पहले कभी नहीं थी। अगर ऐसी ही बात थी तो क्या मैं जान सकता हूं कि 5 तारीख को जब विश्वनाथ प्रताप सिंह हट गये, मुहर लग गयी और पार्टी में विभाजन हो गया तब कार सेवकों को दर्शन भी कराये जाने लगे, उनको बसों, ट्रेनों से भेजा भी जाने लगा। क्या यह सही नहीं है कि आपने नवाबगंज पक्षी बिहार में हेलीकाप्टर से विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं को बुलाया और आपने वार्ता की। अगर मान्यवर, यह सही है तो जैसा आप कहते हैं कि षडयंत्र था, षडयंत्र विश्वनाथ प्रताप सिंह था केन्द्रीय नेताओं ने किया। राजीव गांधी ने आपकी तारीफ की नेशनल इन्टीग्रेशन कौंसिल में।

(व्यवधान)

जब राजीव जी गुलबर्गा गये, जहां पर कत्ले आम हुआ था, दंगा हुआ था, तो उन्होंने वीरेन्द्र पाटिल को एक मिनट में हटा दिया। माननीय नेता विरोधी दल, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि आपने अभी उल्लेख किया था भैरों सिंह शेखावत के सरकार का ....

(व्यवधान)

वह जब बिजनौर गये, तो उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी हिंसा हुई है, इतने लोग मारे गये हैं, लेकिन एक शब्द भी नहीं कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने खराब काम किया है, एक शब्द भी नहीं कहा। मुख्य मंत्री जी ने कहा था कि मैं कांग्रेस में नहीं जाऊंगा, उसमें मेरी लाश जायगी, उसमें मैं नहीं जा सकता। यह आज उनसे कह रहे हैं कि मेरी रक्षा करो। मान्यवर, आपको यह कहना चाहिए था कि मैं कांग्रेस से गठिबन्धन नहीं करूंगा। डा0 लोहिया ऐसा कभी नहीं चाहते थे। डा0 लोहिया ने जीवन पर्यन्त गैर-कांग्रेसवाद चलाया।

(व्यवधान)

श्री नारायण दत्त तिवारी–

आपने कहा कि डा0 लोहिया जी जीवन-पर्यन्त गैर कांग्रेसवाद में रहे। मैं बताना चाहता हूं कि वह इंडियन कांग्रेस फारेन कमेटी के काफी समय तक इंचार्ज रहे।

(व्यवधान)

*श्री ऊदल–

डा0 लोहिया ने लोक सभा में तथ्यपूर्ण भाषण दे करके पंडित जवाहर लाल नेहरू को निरुत्तर कर दिया था यह भी तथ्य है।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

जीवन पर्यन्त से मेरा मतलब, जब से उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया ।

श्री दया शंकर–

कैबिनेट से इस्तीफा देने के पहले इन सारी चीजों का विरोध क्यों नहीं किया ?

(व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

रथ तो सोमनाथ से चली थी और गुजरात के मुख्य मंत्री आपके मित्र हैं, उन्होंने क्यों नहीं रोका ? उसके बाद हरियाणा में भी पहुंचा, तो वहां पर क्यों नहीं रोकी गयी ? आप कहते हैं कि हम सिद्धान्तों पर, वसूलों पर कोई समझौता नहीं करेंगे, एक तरफ तो आपने कांग्रेस के आगे शरणागत होकर समर्थन मांगा है और एक तरफ राजस्थान में आपने उनको समर्थन देकर उनकी सरकार को बरकरार रखा है । मान्यवर, मुख्य मंत्री जी ने यह कहा । . . .

*श्री जनार्दन प्रसाद ओझा–

मान्यवर, यह गलत बयानी है माननीय कुंवर साहब को इसकी जानकारी नहीं है ।

(घोर व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, मुख्यमंत्री जी ने यह कहा कि हमने हिन्दी की प्रगति किया । क्या मैं मुख्य मंत्री जी से पूछ सकता हूं कि पिछले 11 महीनों में उर्दू के विकास के लिए भी उन्होंने कोई काम किया है, क्या उर्दू अकादमी अभी तक गठित हो गयी है इन 11 महीनों में आज सवाल इस बात का है कि सरकारें तो आती जाती रहती हैं, स्थाई नहीं होती हैं लेकिन आदमी का व्यक्तित्व, आदमी का विचार हमेशा-हमेशा याद किया जाता है लेकिन आज मुझे दुख है, इस बात का दुख है और मन से इस बात को कह रहा हूं कि मुझे माननीय मुलायम सिंह जी से यह उम्मीद नहीं थी कि एक सामाजिक न्याय की लड़ाई को एक सम्प्रदायिकता विरोधी ताकत को इतनी जल्दी यह बिखेर देंगे । मान्यवर, इससे भी अन्दाजा नहीं लग रहा है कि इससे कितना बड़ा नुकशान हुआ है देश का । इसके नुकशान का खामियाजा आगे आने वाली पीढ़ियों को भोगना पड़ेगा । यह केवल इस बात का प्रतीक नहीं है कि सरकार आये या जाये, वी0 पी0 सिंह प्रधान मंत्री पद से हट गये कोई गम की बात नहीं है। मैं आपसे पूंछना चाहता हूं कि मैं कभी भी विश्वनाथ जी के सम्पर्क में नहीं रहा, मैं हमेशा उनका विरोध करता रहा, उन्होंने बहुत कोशिश की थी पहले भी मैं कांग्रेस में नहीं गया था, मैं मिला उनसे एक पार्टी के मुद्दे पर और उतने तक ही सीमित रहा ।

(श्री राजेन्द्र त्रिपाठी के खड़े होकर बोलने का प्रयास करने पर व्यवधान उत्पन्न हो गया)

मान्यवर, राजेन्द्र त्रिपाठी जी अभी अपनी सम्पत्ति की जांच करवा लें और मेरी सम्पत्ति की भी जांच हो जाय तो इससे पता चल जायेगा ।

(व्यवधान)

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

*श्री राजेन्द्र त्रिपाठी–

मान्यवर, यह मुख्य मंत्री जी से इसलिए नाराज हैं क्योंकि एक महिला अधिकारी की जांच को यह रुकवाना चाहते थे और माननीय मुख्य मंत्री जी ने उसे नहीं रोका था। अगर आप चाहें तो मैं उस महिला अधिकारी का नाम बता दूं ।

(व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, डा0 लोहिया ने लोक सभा में एक सवाल उठाया था ।

(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र त्रिपाठी–

मान्यवर, इन्होंने चाय पान तक के लिए हेलीकाप्टर का उपयोग किया है क्या यह बतायेंगे कि हेलीकाप्टर और वायुयान से एक दिन पर कितना खर्च इस प्रदेश को उठाना पड़ा है ?

(घोर व्यवधान)

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि मैं तिवारी जी को स्मरण कराना चाहता हूं कि आपका एक बयान "प्रतिदिन" में छपा था कि यह उबड़ खाबड़ सरकार देश को क्या चलाएगी, 31 अक्टूबर को छपा था । यह तिवारी जी मा0 नेता विरोधी दल तिवारी जी का बयान था ।

श्री नारायण दत्त तिवारी–

यह बात साबित हो गयी, इस्तीफा भी हो गया ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

राज्य में आतंक का वातावरण पैदा कर रहे हैं मुलायम सिंह यह बलराम सिंह ने कहा । मान्यवर, आपने स्वयं कहा कि पूरे प्रदेश में लोग प्रताड़ित हैं । मैं कहता हूं कि विरोध स्वाभाविक है, राजनीति में विरोध स्वाभाविक है, लेकिन विरोध में प्रतिशोध नहीं आना चाहिए । मैंने देखा कि 4-5 दिन में आप जिस कुर्सी पर सुशोभित हैं, उस पर पंडित गोविन्द बल्लभ पंत, डा0 सम्पूर्णानन्द, चौधरी चरण सिंह जैसे नेता बैठे हैं । मैंने अपने जीवन में ऐसा नहीं देखा जो विधायकों के साथ सलूक किया गया । उन्हें खरीद लिया गया । इस तरह की बात नहीं होनी चाहिए । मैं उम्मीद करता हूं कि मा0 नेता विरोधी दल ने जो सुझाव दिये हैं, क्या सरकार उस पर अमल करेगी ?

श्री रामचन्द्र बख्श सिंह–

मा0 उपाध्यक्ष जी, मा0 मुख्य मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत पर लम्बे समय से बहस चल रही है और बीच-बीच में कुछ नोंक झोंक भी होती रही है । मान्यवर, यह ऐसा है, यह समय ऐसा है कि जो भी बोलेगा उसकी बात से कुछ लोग सहमत होंगे और कुछ लोग असहमत होंगे । मेरा आपके माध्यम से विनम्र अनुरोध है कि समय कम है, मेरी बात कोई माने या न माने, सहमत हों या असहमत, ध्यान से सुनने की कृपा करें । मान्यवर, सबसे पहले जो आज दो विवाद के

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मुद्दे बने हुए हैं, साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता को बरकरार रखने का सवाल और मण्डल कमीशन की संस्तुतियां । इस पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का दृष्टिकोण साफ रूप से इस सदन के सामने रख रहा हूं । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी हर किस्म की साम्प्रदायिकता का जमकर विरोध करती है । पीछे स्पर्श किया है आगे भी करेंगे, इस पर कोई समझौता नहीं है । मण्डल कमीशन की संस्तुतियों के बारे में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी चाहती है कि पूरी ईमानदारी के साथ उन्हें लागू किया जाय । इसके बारे में मैं साफ तौर से कहना चाहता हूं कि हम केन्द्रीय सरकार में विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के साथ थे । इन लोगों ने लागू किया है, इसका समर्थन करता हूं । यहां पर आपका भी समर्थन करता हूं । लेकिन हमारे मन में एक बात है कि इस सरकार को बने लगभग एक वर्ष हो रहा है, कुछ ही दिन कम है । जिस वक्त चुनाव हुआ था राष्ट्रीय मोर्चा का, चुनाव घोषणा पत्र में मण्डल कमीशन की संस्तुतियों को बगैर किसी इफ एन्ड बट के बिना किसी परन्तु लेकिन के उसे लागू करने की बात कही गयी थी । हम लोगों की समझ में नहीं आता है कि अगस्त के अंदर केन्द्र में संस्तुतियां लागू की गयीं, हाल में कुछ दिन पहले प्रदेश में लागू किया गया, जब एक माहौल पैदा हुआ आरक्षण विरोध का, तब इसे यहां लागू किया गया । सरकार बनने के तत्काल बाद ही इसे केन्द्र में और उत्तर प्रदेश में एक साथ लागू किया जाता, तो यह न तमाम आत्मदाहें होतीं और न आरक्षण विरोध होता ।

मान्यवर, आज पूरा देश खास तौर से उत्तर प्रदेश साम्प्रदायिकता की आग में झुलस रहा है । आज पूरे प्रदेश को संगीन हालत में पहुंचा दिया गया है । आज सवाल यह उठता है कि इसके लिए कौन दोषी है ? माननीय कल्याण सिंह जी भारतीय जनता पार्टी के नेता हैं, मैं उनका बड़े भाई जैसा आदर करता हूं और पूरा मतभेद रखते हुए जैसा कि अभी आप कह रहे थे ऐसा लग रहा था कि इस सवाल में सबसे बड़े दोषी माननीय मुख्य मंत्री मुलायम सिंह यादव जी हैं । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से उनसे पूछना चाहता हूं कि जो हालात पैदा किये गये हैं सितम्बर से अक्तूबर और इधर नवम्बर तक उसमें कोई भी सरकार होती चाहे माननीय मुलायम सिंह यादव जी की होती या माननीय कल्याण सिंह जी की होती वह क्या करती ? मैं आपके माध्यम से मान्यवर उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या इस प्रदेश में हिन्दू कम थे उनमें क्या राम के प्रति आदर कम था? गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार-रथ का दौरा करा रहे हैं, जिस लिए रथ का दौरा कराया जा रहा था ? क्या उत्तर प्रदेश में हिन्दू नहीं हैं ? क्या फैजाबाद में हिन्दू नहीं हैं ? वहां से आप जाते लोगों की भावना देखते ? फैजाबाद में आधे से ज्यादा आबादी हिन्दुओं की है, वह कह रहे थे कि जो कहेंगे हम करने के लिए तैयार हैं । उत्तर प्रदेश के लोगों ने आपकी बात मानी नहीं, मैं तो कहूंगा कि उत्तर प्रदेश के हिन्दुओं में भारतीय जनता पार्टी के प्रति विश्वास नहीं रहा । आपकी पूरी बात धार्मिक उन्माद की रही, आपने सोमनाथ से रथ यात्रा शुरू किया । खाली रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद का विवाद था तो यह छोटा सा मुद्दा था, लेकिन देश के पैमाने पर धार्मिक उन्माद का वातावरण जो तैयार किया गया है मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि इसके लिए दोषी कौन हैं ? मेरा साफ कहना है कि वोट की राजनीति सब लोग कहते हैं कि मैं नहीं करता हूं, मैं नहीं करता हूं तो है क्या ? माननीय लालकृष्ण आडवानी जी के कल अयोध्या में भाषण के बाद जो बात सामने आयी

है, कल जो अयोध्या में उनका भाषण हुआ उन्होंने कहा कि राम मंदिर का निर्माण हमारा प्रमुख उद्देश्य नहीं है, प्रमुख उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र की नींव रखना है । जब नींव रखने में तो एक मस्जिद क्षतिग्रस्त हुई । जब हिन्दू राष्ट्र स्थापित हो जायेगा तो हजारों-हजार मस्जिद स्वाहा हो जायेंगी । आपका मकसद क्या है, विवाद केवल रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद का है ?

अभी माननीय कल्याण सिंह जी कह रहे थे कि हम मस्जिद गिराना नहीं चाहते हैं, 5 किलो मीटर स्थानान्तरित करना चाहते हैं अगर स्थानान्तरित करना चाहते हैं तो कोई ऐसी तरकीब, कोई ऐसी मशीन नहीं है कि मस्जिद हटा दी जाय । मैं नहीं समझता संभव होगा । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं, अभी हमारे कल्याण सिंह जी कह रहे थे कि वह देश में किसानों के हित के लिए विकास की समस्याओं के लिए गरीबी दूर करने के लिए चिन्तित हैं । मैं पूछना चाहता हूं कि अगर वाकई में वे किसानों के हमदर्द हैं अगर उन्हें मजदूरों से हमदर्दी है वास्तव में यदि वह महंगाई से पीड़ित हैं तो यह रथ यात्रा उन समस्याओं के विरुद्ध होती तो हम लोग भी फूल मालाओं से उसका स्वागत करते । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि सद्भावना रैली बड़े पैमाने पर यदि नहीं की जाती तो दंगा कराने का जो प्रयास था उसमें लोग सफल हो जाते । सद्भावना रैली का ही असर है कि उत्तर प्रदेश की जनता ने चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान सभी ने इसमें भाग लिया । मान्यवर मैं आपके माध्यम से मा0 कल्याण सिंह जी से पूछना चाहता हूं कि संविधान की कसम खाकर विधान सभा व संसद में संविधान के अन्दर काम करने को कहते हैं । फिर भी आप कहते हैं कि हम न्यायपालिका की बात नहीं मानेंगे । आप शपथ भी लेंगे और न्यायपालिका की बात भी नहीं मानेंगे, जिद करेंगे, यह भी सोचेंगे कि जो आप समझते हैं वह सही है क्या इससे कोई देश चल सकता है ? मान्यवर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि हर व्यक्ति चाहे जिस धर्म का हो चाहे किसी जाति का हो अगर उसको एक होकर के चलना है तो हमारा जो वर्तमान संविधान है, उसके अंदर हमको रहना पड़ेगा और जो संविधान को नहीं मानता, उसे तोड़ना चाहता है वह लोकतंत्र की हत्या करता है । आज धर्मोन्माद के वातावरण में फासिस्टवाद को जन्म दिया जा रहा है । हिटलर ने उसी प्रकार से जरिए दुनिया को बरबाद किया था । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का साफ कहना है, मा0 नारायण दत्त तिवारी जी का मैं आदर करता हूं पिता तुल्य मानता हूं उन्होंने बड़ी मीठी बात से दिल्ली की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से लेकर यहां तक आपकी आलोचना की है । मा0 मुख्य मंत्री जी इस पर ध्यान दें । मैं आपको बता देना चाहता हूं यह आपको बहुत मंहगा पड़ेगा । मान्यवर, मैं माननीय नारायण दत्त तिवारी जी की इस बात से सहमत नहीं हूं कि जिस समय शिलान्यास किया था उस समय आपने सब बड़े शान्तिपूर्ण ढंग से निपटा दिया था वास्तव में आपने इस सरकार के लिए झगड़ा खड़ा दिया था । मैं नहीं जानता कि मुसलमान भाई क्या सोचते हैं लेकिन मैं महसूस करता हूं कि यदि आप लोग संविधान में संशोधन करके 15 अगस्त, 1947 में पूरे प्रदेश में मंदिर, मस्जिद की जो यथास्थिति थी वही रहे ऐसी स्थिति में मुसलमान भाई संभवतः यह मस्जिद देने को तैयार हो जायें ।

श्री लाल कृष्ण अडवानी जी कल ही जो अयोध्या गये हैं वहां उन्होंने अपने भाषण में केवल यह बात कही है कि मंदिर निर्माण कोई प्रमुख मुद्दा नहीं है बल्कि हिन्दू राष्ट्र के नीव की यह शुरूआत है। यदि हिन्दू राष्ट्र बन गया तो क्या इस देश के अन्दर सारी मस्जिदों को तोड़ दिया जायेगा। हिन्दू राष्ट्र बनने पर फिर यह बात आयेगी कि कौन हिन्दू राज्य करेगा और कौन बड़ा हिन्दू है और कौन छोटा।

श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, जैसा कि माननीय सदस्य ने अभी कहा कि 1947 में जो यथास्थिति है वहीं बनायी रखी जाये तो क्या ऐसी स्थिति में सोमनाथ के मंदिर को तोड़ा जायेगा क्योंकि उसका शिलान्यास वर्ष 1951 में हुआ उसका निर्माण उसके बाद।

श्री रामचन्द्र बख्श सिंह–

जहां तक मैं जानता हूं कि सोमनाथ के मंदिर को तोड़कर कोई मस्जिद नहीं बनायी गयी। अनेक ऐसे प्रश्न हैं, लेकिन आपके प्रश्न से इसकी कोई तुलना नहीं है। कल्याण सिंह जी ने जो पूछा है, उसका कोई उत्तर नहीं है। मान्यवर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि आज इस देश के अंदर जो खतरनाक [xx] धर्म की आड़ में की जा रही है, इससे सभी प्रगतिशील, समझदार लोगों को सावधान रहना होगा।

श्री उपाध्यक्ष–

अब समाप्त करें।

श्री रामचन्द्र बख्श सिंह–

मान्यवर, मैं एक बात और कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा। माननीय मुख्यमंत्री जी ने ज्योति बसु जी के बारे में तथा इन्द्रजीत गुप्त के बारे में बात कही। मैं उस बारे में कुछ नहीं जानता, इसलिए उसका कोई उत्तर नहीं दे सकता। माननीय मुख्य मंत्री जी स्वयं जानते हैं कि वामपंथी मोर्चा आज से नहीं, उत्तर प्रदेश में सन् 1985 से समर्थन कर रहा है। वामपंथी मोर्चा ने समय-समय पर हर स्थिति में आपका साथ दिया है, यह मैं जानता हूं और यही कह रहा हूं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी साफ तौर से कहती है कि इधर न उधर, सबका। जो भी साम्प्रदायिकता के विरोध में संघर्ष करेंगे हम उनको पहले भी समर्थन दिये हैं और आगे भी देंगे।

माननीय उपाध्यक्ष जी, आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि मुलायम सिंह यादव जी मेरे मित्र हैं, मेरा उनसे सम्पर्क रहा है। लेकिन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कभी व्यक्तिगत संबंधों पर विश्वास नहीं करती। इस पार्टी ने हमेशा नीतिगत मामलों पर माननीय मुख्यमंत्री का समर्थन किया है। मैं उनको आगाह करना चाहता हूं कि उनको कांग्रेस का साथ यद्यपि विवशता में लेना पड़ा है, लेकिन यह साथ उनको मंहगा पड़ेगा, आपके लिए। माननीय नारायण दत्त तिवारी जी बहुत ही बुद्धिमान हैं और उनकी जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। लेकिन मैं समझता हूं कि उन्होंने बहुत ही मीठे शब्दों में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की और आपकी सरकार की आलोचना ही की है, आप इससे सावधान रहें। मेरा तो मानना है कि जनता दल का विभाजन अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है और जनता ने जनता दल को कांग्रेस की नीतियों के खिलाफ मतदान देकर केन्द्र व उत्तर

नोट:–[xx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

प्रदेश में भेजा था । केन्द्र में गया तो गया, लेकिन उत्तर प्रदेश में जनता दल के विभाजन अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है । यह जनता आपसे पूछेगी कि कांग्रेस के खिलाफ आपको मतदान इस लिए दिया गया था कि कांग्रेस जो नहीं कर पाई है, उसको करने के लिए आपको भेजा गया था, और वह काम आपको करने हैं । इनका समर्थन आपके साथ कहां तक चलेगा, हम नहीं जानते, लेकिन इतना अवश्य कहूंगा कि आप इनसे सावधान रहिये और कांग्रेस की चाल में न फंसिए । साथ ही यह भी कहना चाहूंगा कि जन आकांक्षा की पूर्ति के लिए जनादेश को मानिए तथा जो कार्य अभी तक घोषणापत्र के आप नहीं कर पाये हैं उनको पूरा करिए, धन्यवाद ।

श्री शेख मोहम्मद सुलेमान–

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन मुख्य मंत्री मुलायम सिंह यादव जी, माननीय नेता विरोधी दल मेरे बुजुर्ग नारायणदत्त तिवारी जी, माननीय नेता विधान मंडल दल, भारतीय जनता पार्टी कल्यान सिंह जी, रामचन्द्र बख्श सिंह, राज किशोर सिंह जी, तथा रेवती रमण सिंह जी ।

काफी देर से बाबरी मस्जिद तथा राम जन्मभूमि के मसले पर सभी पोलिटिकल पार्टीज के लीडर्स ने अपने-अपने ख्यालात रखे हैं । इसके बारे में मैं भी कुछ कहना चाहता हूं । यह मामला बाबरी मस्जिद से मुताल्लिक तो है ही, लेकिन आज हमारे सामने मसला इस देश को बचाने का, इसकी एकता और अखंडता का भी है । मैं एक शेर से अपनी बात शुरू करना चाहूंगा ।

आओ तारीखों गुलिस्तां देखें, कौन किस वक्त काम आये हैं,
जब भी पड़ा है वक्त इस गुलशन पर, हमने लहू बहाया है ।

माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं पुराना इतिहास दोहराना चाहता हूं । इस मुल्क को आजाद कराने के लिए परम आदरणीय बाबा भीमराव अम्बेदकर, महात्मा गांधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, रफी अहमद किदवई, हुसैन अहमद मगनी जैसी शख्सियतों ने इस देश को आजाद कराया लेकिन बदकिस्मती यह रही कि हिन्दुस्तान का बंटवारा हो गया और पाकिस्तान बन गया । जब मुल्क का बंटवारा हुआ तो जिन मुसलमानों ने हिन्दुस्तान के हक में वोट दिया, वे हिन्दुस्तान में रहे और जिन लोगों ने पाकिस्तान के हक में वोट दिया, वे पाकिस्तान चले गए । हम वफादार हैं, हम गद्दार नहीं हैं । लेकिन आज बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे ऊपर इल्जाम लगाया गया कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने प्रदेश के अंदर साम्प्रादायिक दंगे भड़काये । मैं कहता हूं कि दंगे उन लोगों ने भड़काये, जिन्होंने यह नारे लगाये कि "मुस्लिम जाये पाकिस्तान या कब्रिस्तान, तेल लगाओं बाबर का, वंश मिटा दो बाबर का । मैं इस सदन के सभी सम्मानित सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसे लोगों की वह निन्दा करे ।

माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो मंडल कमीशन की रिपोर्ट लागू की है, उसका हम समर्थन करते हैं । दूसरा, यह कि बाबरी मस्जिद व राम जन्म भूमि के संबंध में उन्होंने जो फैसला लिया कि हम उसकी तरफ किसी हिन्दू को फटकने नहीं देंगे और किसी मुसलमान को फटकने नहीं देंगे । ऐसा करके माननीय मुख्य मंत्री जी ने सैक्यूलर होने का सबूत दिया । हमारे दल के नेता श्री कांशी राम जी ने फैसला लिया है कि हमारा दल विश्वास मत के पक्ष में माननीय मुख्य मंत्री जी को समर्थन देगा । इसके साथ ही

मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि बिजनौर के अंदर जो लोग मरे हैं, रामपुर में जो लोग मरे हैं, गाजीपुर के अंदर जो लोग मरे हैं, इन सबकी न्यायिक जांच होनी चाहिये । खासतौर से धामपुर व बिजनौर में जो लोग मरे हैं, उसकी मजिस्टेरियल जांच होनी चाहिये । इसके लिए एक कमेटी बनाई जानी चाहिए, जिसमें चार जज हों । एक हिन्दू, एक मुसलमान, एक सिक्ख व एक ईसाई । इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करते हुए कहना चाहता हूं कि बहुजन समाज पार्टी अपने दल के सभी सदस्यों की ओर से विश्वास मत के पक्ष में माननीय श्री मुलायम सिंह जी का समर्थन करती है ।

(श्री राज किशोर सिंह का नाम पुकारे जाने पर और भारतीय जनता पार्टी के कई सदस्यों के एक साथ खड़े हो जाने से व्यवधान)

श्री राजकिशोर सिंह–

पिछले दिनों दिल्ली में और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप उत्तर प्रदेश में जो घटनाएं घटी हैं, उसके परिणामस्वरूप माननीय मुलायम सिंह मंत्रि मंडल को यह विशेष सत्र बुलाना पड़ा मान्यवर, देश में कांग्रेस राज लम्बे समय रहा है । और उत्तर प्रदेश में भी इसी प्रकार कांग्रेस राज रहा है साम्प्रदायिकता उसी समय से चली आ रही है बल्कि कांग्रेस राज की ही देन है, चाहे यह साम्प्रदायिकता राम जन्म-भूमि और बाबरी मस्जिद के सवाल को लेकर हो चाहे कोई और अन्य सवाल हों । साम्प्रदायिकता की सबसे बड़ी जिम्मेदारी कांग्रेस सरकार की ही रही है क्योंकि इन्होंने एक लम्बे अरसे तक इस प्रदेश के अन्दर राज किया है और इसके साथ-साथ प्रारम्भ से ही इस मामले में भा0 ज0 पा0 भी है, लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है . . . ,

(व्यवधान)

*श्री अरुण कुमार सिंह–

यह बाबरी मस्जिद तो जब बनी है, जब कांग्रेस थी भी नहीं, क्या कांग्रेस की साम्प्रदायिकता उस समय से चली आ रही है, आप जो कह रहे हैं, वह कुछ स्पष्ट नहीं है . . . .

(व्यवधान)

श्री राजकिशोर सिंह–

जरा धैर्य रक्खें, अभी मैं सारी चीजें स्पष्ट किये देता हूं कि कांग्रेस (इ) दल एक राजनीतिक दल होते हुए भी धर्मान्धता का शिकार हो गयी, अडवानी साहब या उनकी पार्टी के लोग जो ऐसा करते आ रहे हैं कि "रथ" निकालने के साथ कमल के फूल की निशानी लेकर चारों तरफ जो आ जा रहे हैं, इससे पूरे देश व प्रदेश में काफी बड़ा खतरा पैदा हो गया है, और एक दूसरे की भावनाओं को ठेस ही नहीं पहुंचा रहे हैं, बल्कि भावनाओं को बिगाड़ रहे हैं ।

सन् 1949 में कांग्रेस राज था, उस वक्त इस प्रदेश के मा0 मुख्य मंत्री स्व0 पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जी थे, इन्हीं के जमाने में बाबरी मस्जिद के अंदर पुलिस के माध्यम से हिन्दुओं की मूर्ति वहां रखवा दी गयी और उसी दिन से वहां पर

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

पूजा-पाठ शुरू करवा दी गयी । उस समय वहां के जिलाधिकारी श्री नय्यर साहब थे, जिनके आदेशों से ही यह सारे कार्य हुए इसलिए मैं इन कांग्रेस (इ) दल वालों से मान्यवर आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि क्या यह तथ्य सही है या नहीं और क्या यह भी सही है कि नहीं यदि उसी समय बाबरी मस्जिद में रखी हुयी मूर्तियां हटवा दी गयी हों तो आज जो कुछ हो रहा है, कुकृत्य, यह सब कुछ न होते, इसलिये इसके जिम्मेदार यही कांग्रेस दल है ।

(कांग्रेस दल के सदस्यों द्वारा आपत्ति करने से सदन में घोर व्यवधान उत्पन्न हो गया)

मान्यवर, दूसरा सवाल एक और उठता है, शिलान्यास का इसी (कांग्रेस दल) के कार्य-काल में उस मस्जिद का ताला खोला गया जिससे साम्प्रदायिकता का जहर और बढ़ा मा0 राजीव गांधी के कहने पर मा0 नारायण दत्त तिवारी जी जो यहां पर मुख्य मंत्री की हैसियत रखते थे, माह नवम्बर, 1989 में अब से एक ही साल पूर्व मंदिर का शिलान्यास करा दिया, जबकि कम्युनिस्ट मार्क्सवादी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी व अन्य वाम पंथी दलों आदि सभी ने जोरों पर विरोध किया कि यह झगड़े का घर, शिलान्यास न होना चाहिए और इस बात को लेकर हमारे काफी संख्या में कार्यकर्ता अयोध्या पहुंचे कि किसी भी सूरत में यह शिलान्यास न होना चाहिए लेकिन मा0 मुख्य मंत्री, मा0 नारायण दत्त तिवारी जी द्वारा चारों तरफ सील करवाकर, पुलिस लगवाकर, शिलान्यास कराकर प्रदेश के कोने-कोने में लोगों के अन्दर साम्प्रदायिकता की आग फैला दी । जिससे आज पूरा उत्तर प्रदेश ही नहीं, देश जल रहा है ।

(कांग्रेस के सदस्यों द्वारा आपत्ति करने से सदन में घोर व्यवधान उत्पन्न हो गया)

साथ ही साथ यह भी कहना चाहता हूं कि जैसा कि भा0 ज0 पा0 के मा0 नेता ने कहा कि हमारे कार-सेवक मस्जिद को तोड़ने के लिए नहीं गए थे, तो फिर वह मस्जिद के ऊपर चढ़ क्यों गये थे और मा0 आडवानी द्वारा जगह-जगह जाकर फिर यह क्यों कहा जा रहा है कि बाबरी मस्जिद का ऊपरी हिस्सा व ढांचा किसी दूसरी जगह ले जाया जाए ? (व्यवधान) इसके क्या माने होते हैं ? करोगे वही, लेकिन बात किसी की नहीं मानोगे । चारों तरफ जो सद्भाव हुआ, अगर सद्भावना रैलियां न निकाली गयी होतीं, यह न होता । मैं मुलायम सिंह जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि वाम पंथी पार्टियों द्वारा चलाये गये आन्दोलन में इस प्रकार से काम किया कि उन्होंने सद्भावना रैलियां निकालीं । अगर सद्भावना रैलियां न निकाली जाती तो उत्तर प्रदेश में और आग लग जाती, तब क्या सांस लेते ? मुलायम सिंह यादव जी की इन रैलियों से फायदा पहुंचा है, इसलिए मैं उनकी सराहना करता हूं । साम्प्रदायिकता की लड़ाइयों में वाम पंथी पार्टियों ने लड़ाइयां लड़ी हैं और कुरबानियां दी हैं, जो अन्य दलों ने नहीं किया है, चाहे पंजाब का मसला हो और चाहे अन्य कोई मसला हो ।

(व्यवधान)

जरा सुनते जाइये । वास्तविकता बता रहा हूं । हमारी पार्टी का कार्यकर्ता कानपुर निवासी 12 अक्टूबर को साम्प्रदायिक रैली में शहीद हुआ है । मुलायम सिंह जी, जो मुख्य मंत्री हैं, उन्होंने दिल्ली के अन्दर जो कार्य किया है वह अत्यन्त निन्दनीय है और शर्मनाक है । उन्होंने राजीव गांधी की राजनीति को कामयाब बना दिया है । उन्होंने उन बदसूरतों से हाथ मिलाया है । चन्द्र शेखर जी को प्रधान मंत्री बनवाया है, राजीव गांधी जी ने कहा था कि अगर श्री चन्द्र शेखर प्रधान मंत्री होंगे, तो हम समर्थन देंगे और

राजीव गांधी कामयाब हो गये । दलबदलुओं से हाथ मिलाकर सरकार को गिराने में भारतीय जनता पार्टी का साथ दिया है, यह शर्मनाक बात है ! आप आज कांग्रेस की गोद में चले गये हैं और कांग्रेस का खिलौना बन गये हैं ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव बंधुत्व सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देवदेव ।।

आप अच्छी सरकार कैसे चलायेंगे ? आज आप उनकी गोद में चले गये और उनके मुंह से मुंह मिलाकर काम करेंगे । नारायण दत्त तिवारी जी और आप चुम्मी चुम्मा करेंगे, आप को पता चल जायेगा, इतिहास को पढ़ें । उस समय भी चौधरी चरण सिंह इंदिरा गांधी के भुलावे में आ गये और कितने दिन चल पाये, नाम लिख गया कि प्रधान मंत्री हुए । इसी प्रकार से चन्द्र शेखर जी का नाम लिख गया है कि प्रधान मंत्री हो गये हैं। इतना तो हो गया है, लेकिन कांग्रेस (आई) के लोग बड़े होशियार हैं, लगा दिया पांच सूत्री शर्तें । क्या आप उनमें निकल सकते हैं, बिना उनकी सलाह के आप चल नहीं सकते हैं । 8वीं पंचवर्षीय योजना का संशोधन करना पड़ेगा । (4 बजकर 50 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए) मंडल कमीशन की रिपोर्ट बगैर उनकी मर्जी के नहीं लागू की जा सकती । आरक्षण के सवाल पर आप इधर-उधर नहीं जा सकते । मा0 मुख्य मंत्री आपको बांध दिया गया है, कस दिया गया । आपको खिलौना बना दिया गया है । जब यह खिलौना टूटेगा तो आप बच नहीं सकते । मैं कहना चाहता हूं और हमारी पार्टी ने स्पष्ट कहा है कि हम इस देश की एकता और अखण्डता को सबसे ऊपर रखते हैं । हमारी पार्टी के लोगों ने कितनी कुर्बानी दी है ? पंजाब में कांग्रेस (इ) के और मुख्य मंत्री और दल के कितने लोग मरे हैं और हमारे कितने मरे हैं पता लगा लीजिये । हमारी कम्युनिस्ट पार्टी कहती है कि हमारे जितने भी विधान मंडल के सदस्य हैं, अध्यक्ष जी मैं आपके समक्ष कहना चाहता हूं कि इस देश की एकता और अखण्डता के लिए हमेशा लड़ेंगी और इसके खिलाफ जो आयेंगे, साम्प्रदायिकता का जो लोग जहर फैलायेंगे, देश को तोड़ने की जो कोशिश करेंगे उनके खिलाफ हमारा करारा संघर्ष होगा चाहे हमें हजारों की सहादत देनी पड़े । यह भी हमारी पार्टी और अन्य वामपंथी दलों ने कहा है कि धर्मनिरपेक्ष ताकतों की एकता के लिए कोशिश करेंगे, एक सूत्र में बांधेंगे । मुलायम सिंह जी ने तो इसे आज तोड़ दिया है । लेकिन साम्प्रदायिकता के खिलाफ देश की एकता के लिए मुख्य मंत्री अगर लड़ेंगे तो मैं सबसे कहना चाहता हूं कि जो अपने को धार्मिक कहते हैं और साम्प्रदायिकता का जहर फैलाते हैं उनसे लड़ने की जरूरत है । अभी 6 दिसम्बर को चुनौती दी गई है । मुलायम सिंह यादव जी से 30 अक्टूबर को जो भी घटनायें हुई हैं उनके वे जिम्मेदार नहीं हैं । उन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ उसको रोका है । जो भी हत्यायें हुई हैं वह बी0 जे0 पी0 द्वारा की हुई हैं जिसे बहुत बड़ा नरसंहार कहा जा रहा है । कांग्रेस के जमाने में भी नरसंहार हुआ है । पंजाब में अमृतसर में हुआ है, मेरठ में हुआ है, बम्बई में हुआ है । लेकिन पूरे देश से लाये हुए लोगों को रोकना कोई मामूली बात नहीं है ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

अब आप कृपया बैठ जायं ।

श्री राज किशोर सिंह–

प्रदेश में इस सरकार ने श्रम के प्रति विरोधी आचरण अपनाया है, श्रम कानून के अनुसार नहीं कार्य किया, हड़तालों पर रोक लगाई, महंगाई चरम सीमा पर बढ़ गई। इन शब्दों के साथ मैं इस विश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं । मैं इस प्रस्ताव पर मतदान से अपने को अलग रखूंगा ।

(व्यवधान)

श्री राम स्वरूप वर्मा–

मान्यवर, यह सारा मसला....

(माइक की खराबी के कारण सुनाई नहीं दिया ।)

श्री अध्यक्ष–

दूसरे माइक पर खड़े होकर बोल लें ।

श्री शेख मोहम्मद सुलेमान–

मान्यवर, बुजुर्ग हैं । बैठकर बोलने की इजाजत दे दें ।

श्री अध्यक्ष–

ठीक है ।

श्री राम स्वरूप वर्मा–

मान्यवर, मैं मुख्य मंत्री जी का भाषण सुन रहा था उन्होंने अपनी पार्टी के अन्दर की बातें बताई जिससे मतभेद पैदा हुए। तो मतभेद किसी सिद्धान्त पर हो तो सारा देश जानता है। यह जो मतभेद हुआ है आपसी अहम भाव से हुआ है चाहे वह प्रधान मंत्री के अहम भाव से हुआ है या मुख्य मंत्री के अहम भाव से से हुआ है जिसके कारण यह दल टूट गया तो दल के टूटने की जिम्मेदारी किसी न किसी को लेनी पड़ेगी। प्रधान मंत्री अपने पद से हट गये हैं तो उन पर तो जिम्मेदारी आती नहीं है, मुख्य मंत्री जी पर जिम्मेदारी आती है। प्रधान मंत्री ने धर्मनिरपेक्षता के लिए सामाजिक न्याय के लिए अपनी कुर्सी छोड़ दी है। अब इन दोनों दलों के लिए मुख्य मंत्री जी कहते हैं कि हम धर्मनिरपेक्षता कायम रखेंगे, सामाजिक न्याय देंगे तो जब दोनों में मतभेद नहीं तो टूटने की बात क्यों आई ? ऐसा है दोनों की भावनाओं में एकता है तो टूटने की नौबत क्यों आई तो कहीं न कहीं गड़बड़ हुई है जिसके कारण आज विश्वास का मत प्राप्त करने के लिए मुख्य मंत्री जी को सदन की बैठक बुलानी पड़ी। जहां विचारों की लड़ाई होती है वहां देश ध्यान देता है लेकिन व्यक्तियों की लड़ाई हो तो देश सजा देता है तो किसी न किसी को सजा के चक्कर में आना पड़ेगा मुख्य मंत्री जी इस बात को सोच लें । सामाजिक न्याय का आधार मण्डल कमीशन है उसे लागू किया गया अच्छा किया देर आये दुरुस्त आये । लेकिन उसमें एक लक्ष्मण रेखा आ गई है समर्थन तभी मिलेगा जब उसका आर्थिक आधार होगा, मण्डल कमीशन के लिए राजीव गांधी जो कहेंगे उसे मानना पड़ेगा, सामाजिक लड़ाई से हट कर सत्ता की लड़ाई लड़ेंगे. या विचारों की लड़ाई लड़ेंगे तो देश और समाज को न्याय नहीं मिलेगा। सामाजिक न्याय की लड़ाई में हत्यायें होती हैं, आन्दोलन खड़े होते हैं। हमें याद है इतिहास के पन्ने पढ़ लें अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन

ने काले लोगों को गुलामी से मुक्त कर दिया उसके लिए बेहद आन्दोलन हुए। राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन की हत्या कर दी गयी लेकिन वह अपने विचारों से नहीं हटे उन्होंने कहा था कि गुलामी अपराध है वह खतम होनी चाहिए। इसी तरह पिछड़े लोगों को जाति के आधार पर (समय 5 बजे) सामाजिक और शिक्षा के आधार पर जो मर्यादा रेखा है न्याय मिलना चाहिए। अगर इस मर्यादा रेखा को नहीं मानेंगे तो सामाजिक न्याय नहीं मिलेगा लेकिन उधर से आपको समर्थन नहीं मिलेगा। आपको इसका फैसला करना होगा।

मैं एक बात और कह कर खतम करता हूं। राम जन्म भूमि के बारे में भावनाओं की बात कही जा रही है। तो भावनायें दो प्रकार की होती हैं एक सत्य पर आधारित भावना जो कल्याणकारी होती है दूसरी असत्य पर आधारित भावना जो पश्चातापकारी होती है। राम जन्म भूमि की भावना असत्य पर आधारित है क्योंकि राम काव्य पुरुष हैं इतिहास पुरुष नहीं। इतिहास पुरुष महामना बुद्ध, महामना ईसा और हजरत मोहम्मद साहब हैं। इनके इतिहास को सत्य पर आधारित होने के कारण तोड़ा मरोड़ा नहीं जा सकता। जबकि राम काव्य पुरुष हैं और काव्य पुरुष प्रायः काल्पनिक होते हैं। इसलिए यह कहना कि राम अमुक स्थान पर ही पैदा हुए थे, सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार की असत्य धार्मिक भावना ईसाइयों में थी कि सूर्य पृथ्वी के चारों तरफ घूमता है। इटली के वैज्ञानिक गैलीलियों ने दूरबीन से पता लगा कर कह दिया कि पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घूमती है सूर्य के पृथ्वी के चारों तरफ घूमने की बात असत्य है। इस पर असत्य पर आधारित धार्मिक भावना के तहत गैलीलियों को फांसी दे दी गयी। अब जब यह सत्य विश्व में उजागर हो गया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है तो अब गैलीलियों की कब्र को खोद कर उनकी हड्डियों को इकट्ठा करके गैलीलियों के शरीर का ढांचा बनाने की जुगत में ईसाई लगे हैं ताकि गलत भावना के गलत परिणाम के लिए गैलीलियों से माफी मांग सकें। इसी तरह राम जन्म भूमि की गलत भावना के तहत होने वाले दुष्परिणामों के लिए हिन्दुओं को पछताना न पड़े। क्योंकि असत्य पर आधारित धार्मिक भावना का परिणाम पश्चातापकारी ही होता है।

इन शब्दों के साथ मैं विश्वास के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री अध्यक्ष–

मा0 मुख्य मंत्री जी आप बोलें।

(मा0 मुख्य मंत्री के खड़े होने पर तालियों की गड़गड़ाहट)

श्री रविदास मेहरोत्रा–

मान्यवर, मुझे बोलने का मौका दिया जाये।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

मैंने नेता सदन को बोलने के लिए बुला लिया है और चूंकि सभी दलों के नेताओं ने अपनी अपनी बातें कह ली हैं इसलिए अब मा0 मुख्य मंत्री जी उनका जवाब देंगे। श्री रविदास मेहरोत्रा और श्री मूलचन्द के लिए मैंने सचिव से कह दिया है कि आप लोगों

से पूछ लें और फिर सभी नेताओं के साथ आप लोगों को भी बुलाकर मैं अपने कक्ष में आप लोगों की बातों को सुनूंगा और तब निर्णय करूंगा।

(व्यवधान)

(श्री रविदास मेहरोत्रा और श्री रघुबर दयाल वर्मा एवं श्री राम गोविन्द चौधरी के एक साथ बोलने से घोर व्यवधान श्री रविदास मेहरोत्रा के बोलते रहने से एवं सत्ता पक्ष से कई सदस्यों की जोरदार टोकाटोकी और माननीय अध्यक्ष के बार बार मना करने के बावजूद श्री रविदास मेहरोत्रा बोलते रहे, जिससे उनका भाषण साफ-साफ नहीं सुनाई पड़ा)।

श्री रविदास मेहरोत्रा–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

आप जो कुछ बिना इजाजत के बोल रहे हैं, वह कार्यवाही में लिखा नहीं जाएगा।

श्री रविदास मेहरोत्रा–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

मैं बड़ी नम्रता से आपसे कहना चाहूंगा कि मेरे कक्ष में इनके बारे में जो कुछ भी निर्णय हुए और उसके अनरूप माननीय नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये, उन पर मैंने यही कहा कि कक्ष में आकर सभी नेताओं के साथ फिर दुबारा बात हो जाएगी। लेकिन अगर आप कहने पर, मना करने पर और कार्यवाही में न लिखे जाने की बात कहने पर भी बोलने से नहीं मानते हैं, तो आप सदन की मर्यादा कायम रखना चाहते हैं या आप कोई चुनौती देना चाहते हैं।

(श्री मूल चन्द्र के खड़े होने पर)

*श्री चन्द्र शेखर सिंह (वाराणसी)–

इसी सदन में मूल चन्द्र को पीटा गया तथा [xxx] मुख्य मंत्री के आदमियों ने उनको सबके सामने पीटा है, तो वह इस बारे में अपनी बात सदन के सामने अपने मुख से कहना चाहते हैं, उसके लिए आप उनको इजाजत अवश्य दे दें।

(घोर व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव–

अध्यक्ष महोदय, मैंने मंत्रि परिषद् में विश्वास प्राप्त करने के लिए जो प्रस्ताव पेश किया था, उस पर मैंने इस सदन के सभी नेताओं ने . . . (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप मेरी बात सुन लें और तब आप बोलें।

माननीय मुख्य मंत्री जी ने खेद प्रकट कर दिया तो ऐसी क्या बात है कि माननीय मुख्य मंत्री जी के खेद प्रकट करने के बाद भी यह सब हो रहा है।

(पुनः व्यवधान)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

नोट :–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री मुलायम सिंह यादव–

माननीय नेता विरोधी दल और सभी दलों के नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए उसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूं और धन्यवाद देता हूं ।

(व्यवधान)

पहले मैं कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री रामचन्द्र बख्श सिंह जी को धन्यवाद देता हूं और उनका आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने जब इस सदन के अन्दर धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई को मजबूत करने का आवाह्न किया है . . .

(टोका टोकी से घोर व्यवधान)

*श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री–

एक माननीय सदस्य रो रहे हैं और आप मुख्य मंत्री जी को सुन रहे हैं मैं आपसे और मुख्य मंत्री जी से विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं एक मेम्बर को चमार कहकर यहीं सदन में पीटा गया है ।

(पुनः व्यवधान)

मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इनकी बात को सुन लिया जाए ।

(व्यवधान के मध्य)

*श्री शारदा प्रताप शुक्ल–

मूल चन्द्र जी रो रहे हैं उनकी तकलीफ को सुन लें ।

(घोर व्यवधान)

श्री मूल चन्द्र–

मान्यवर, चमार शब्द का उपयोग मेरे लिए किया गया है । मेरा चश्मा खींच लिया और चश्मा दिया भी नहीं ।

(घोर व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव–

उनकी मैं सराहना करता हूं और उनको फिर यह विश्वास दिलाता हूं श्री राज-किशोर सिंह जी को, श्री राम चन्द्र बख्श सिंह जी को और अन्य दलों को भी कि मैं अपने

(शोर)

सिद्धान्तों से एक इन्च भी इधर से उधर हटने वाला नहीं हूं । (शोर) धर्मनिरपेक्षता की के सामने मेरे मन में इस कुर्सी का मोह नहीं है। मुख्य मंत्री पद का मोह नहीं है।

(शोर)

मैं यह भी कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, कि भावनाओं की रौब में बहकर कुछ समाचार-पत्रों ने भी गैरजिम्मेदारी से काम किया जिससे दो सम्प्रदायों के बीच वैमनस्य और दूरी बढ़ गयी । अफवाहें फैल जाने के कारण सरकार को न चाहते हुए भी अनेक जिलों में कर्फ्यू लगाना पड़ा । कुछ अखबारों के खिलाफ मजबूरन कानूनी कार्यवाही भी करनी पड़ी । मेरा कहना इस विधान सभा के माध्यम से केवल इतना है कि प्रेस की आजादी जरूरी है, प्रेस को मेरे खिलाफ असत्य छापने की भी पूरी आजादी है, लेकिन तनाव के समय में कृपा करके भ्रामक समाचार न दें । प्रेस को इसका थोड़ा अधिक जिम्मेदारी से

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

काम करना चाहिए। हर आजादी के साथ जिम्मेदारी बढ़ती है, कम नहीं होती। तनाव के समय में प्रेस की भूमिका बहुत जिम्मेदारी की होती है, इसे ध्यान में रखना एक आजाद प्रेस के लिए बहुत जरूरी है। पार्टी का समर्थन नहीं मांगा है और न मांगूंगा। मैंने पहले ही कह दिया था और मेरा शुरू से यही सिद्धान्त रहा है। जहां तक कुंवर रेवती रमण सिंह जी का सवाल रहा इन्होंने जो कुछ कहा मैं उस पर ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं। कुंवर रेवती रमण जी रोजाना यह कहते रहे कि मेरे खिलाफ [xx] हो रहा है और रोजाना सफाई देते रहे। 30 दिन में से 24 दिन तो यह दिल्ली में रहे। तब मुझे लगा कि यह [xx] में खुद शामिल हो गये हैं और यह कहते हैं कि जनता दल के टूटने का उनको अफसोस है। लेकिन जनता दल किसने तोड़ा? जिस दिन अटल बिहारी बाजपेयी ने समर्थन वापस लिया था तो जरा भी नैतिकता अगर थी तो उसी दिन इस्तीफा दे देना चाहिए था [xx] लेकिन अपना दूत भेजकर बात करते रहे। जनता दल के नये नेता के चुनने की बात थी, नया नेता चुन लिया जाता। अध्यक्ष महोदय आपको मालूम है, आपने भी उसमें प्रयास किया था। लेकिन आखिरी समय तक भारतीय जनता पार्टी का समर्थन लेने के लिए आडवानी जी से बैठक और अटल बिहारी बाजपेई जी से बैठकें होती रहीं। इसीलिए वामपंथी दलों से मैं कहना चाहता हूं कि साफ दिमाग रखो। भारतीय जनता पार्टी से समर्थन मांगते रहे, यह अडवानी जी ने लोक सभा में कहा है। जनता दल के टूटने के लिए यदि कोई जिम्मेदार है तो वह माननीय [xx] हैं जिन्होंने इस्तीफा नहीं दिया। जहां तक सवाल डाक्टर लोहिया का है, मैं कहना चाहता हूं कि डाक्टर लोहिया को आपने सुना है, पढ़ा नहीं है। 1962 का वह बयान याद करो जब चीन की लड़ाई हुई थी। हिन्दुस्तान के पहले नेता डाक्टर राम मनोहर लोहिया थे जिन्होंने कहा था कि आज हिन्दुस्तान पर संकट है, पंडित जवाहर लाल नेहरू की नीतियों का मैं कड़ा विरोधी हूं, कभी समर्थन नहीं कर सकता लेकिन अवसर आ गया है कि पूरे देश के लोगों को पंडित नेहरू का समर्थन करना चाहिए, सहयोग करना चाहिए। यह उन्होंने 1962 में कहा था। डाक्टर लोहिया को पढ़ा तो है नहीं लेकिन नाम ले लिया। आप [xx] ज्यादा मत फुदको, आपसे ज्यादा मैं लोहिया जी को जानता हूं। आज मैं स्वीकार करता हूं कि 1962 से ज्यादा गम्भीर खतरा देश को है। इसलिए साम्प्रदायिक शक्तियों को कमजोर करने के लिए, धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई को मजबूत करने के लिए आज हमें कांग्रेस पार्टी का जिस तरह से समर्थन लेना पड़ा तो माननीय रामचन्द्र बख्श सिंह, माननीय राजकिशोर सिंह की वजह से लेना पड़ रहा है। जहां तक माननीय रेवती रमण सिंह जी ने कहा कि यह सवाल मंत्रिपरिषद् में नहीं आया तो मुझे अफसोस हो रहा है कि कम से कम रेवतीरमण सिंह जी को सदन के अंदर ऐसा नहीं कहना चाहिए। मंत्रिमंडल की 4 अनौपचारिक बैठकें हुईं। चारों बैठकों में वह उपस्थित रहे। रेवती रमण सिंह जी पहले प्रस्ताव करते थे कि शांति व्यवस्था के संबंध में आप जैसा चाहें वैसा करें।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

यह बात सत्य से परे है।

श्री मुलायम सिंह यादव–

आरक्षण के संबंध में मैं फिर कहना चाहता हूं कि सारे हिन्दुस्तान के मुख्य मंत्रियों

नोट:–[xx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

के सामने 31 अगस्त को जो मैंने धमकी दी थी कि आपने मुझे पत्र क्यों लिखा और अगर लिखा है तो मैं उजागर करूंगा। अपने स्वार्थ के लिए देश में अशांति फैलाने का खतरा उठाकर, साम्प्रदायिक ताकतों से हाथ मिलाकर माननीय [xx] ने ऐसा काम किया जो देश के लिए घातक सिद्ध हुआ। श्री देवी लाल की रैली को विफल करने के लिए आधे-अधूरे मन से मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा की गयी। राज्यों को छूट दे दी कि जो चाहे लागू करे, न चाहे न लागू करे। शिक्षा, सेना को इससे मुक्त रखा गया। जब तक शिक्षा में आरक्षण नहीं होगा, इंजीनियरिंग और मेडिकल सेवाओं तथा अन्य तकनीकी सेवाओं में आरक्षण का लाभ पिछड़ों को नहीं मिल सकता मंडल आयोग की सिफारिशें 31 दिसम्बर, 1980 को सरकार के सामने पेश हो गयी थीं, उस समय मुख्य मंत्री थे वी0 पी0 सिंह उत्तर प्रदेश के अन्दर।

(व्यवधान)

पिछड़े लोगों के लिए मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू करना तो दूर रहा, हजारों लोगों का कत्ले-आम हुआ। मैं कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, अंग्रेज लोगों ने भी धर्म, जाति, पहचान के लोगों को मारा नहीं था, लेकिन जिस समय मुख्य मंत्री [xxx] थे, उस समय जान-पहचान कर पिछड़े, हरिजनों एवं निर्दोष लोगों को गोली मारी जाती थी, वह दिन याद करो।

(घोर व्यवधान)

माननीय रघुबर दयाल वर्मा, याद कीजिए जब आपके यहां एक गांव के करीब हमारी जीप नहीं पहुंची थी, तो हम लोग पैदल गये थे। ये ठेकेदार कब से पिछड़े लोगों के बन गये ? जहां तक मण्डल आयोग की सिफारिशों का सवाल है, मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि इंजीनियरिंग और मेडिकल कालेज में भी उसकी रिपोर्ट लागू होनी चाहिए। माननीय तिवारी जी, आपने जो कहा, उसी पर मैं वचनबद्ध हूं। उस समय भी मैंने आपका नाम लेकर अपना भाषण दिया था, उससे मैं बचनबद्ध हूं। उसमें लिखा है कि सामाजिक एवं आर्थिक न्याय के लिए वर्तमान आरक्षण नीति को जारी रखने के साथ ही साथ राष्ट्रीय मोर्चा के घोषणा-पत्र में किये गये वायदे के अनुसार हम मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं। इन सिफारिशों को लागू करते समय यह ध्यान में रखा जायगा कि गरीब चाहे जिस जाति का हो, उसे न्याय मिले। जो आपने कर्पूरी ठाकुर की रिपोर्ट के बारे में कहा है, उस पर हम आपसे विचार-विमर्श करके फैसला लेंगे। उसके लिए हम बचनबद्ध हैं। 27 सैकड़ों के बारे में कोई कमी नहीं आने पायेगी। यह मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं। और जहां तक माननीय कल्याण सिंह जी की बात है, उनका भाषण तो चौराहे का भाषण था, उसमें कुछ था ही नहीं, उसके संबंध में मैं क्या बोलूं, लेकिन मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं कि धर्म-हीन सरकार आपने जो कहा, यह हमारी धर्महीन सरकार नहीं है, यह हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार है।

(व्यवधान)

श्री कल्यान सिंह–

हमने धर्मविहीन सरकार कहा था।

नोट :–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, जहां तक उत्तेजनात्मक भाषण का सवाल है, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि इसमें लिखा है – मुस्लिम मुलायम सिंह, मौलाना मुलायम सिंह । और अफवाह उड़ाने में तो यह लोग बड़े माहिर हैं । जब मैं जेल में बन्द था तो जितने इनके साथी हमारे साथ बन्द थे, आर0 एस0 एस0 के भी कार्यकर्ता थे तो वे माफी लिखकर जेलर को दे आये सोचा कि पहले माफी मांग लें फिर उसके बाद क्या कहें इनके एम0 एल0 ए0 भी थे । मैंने कहा ऐसा क्यों किया तो उन्होंने कहा कि यही रणनीति है अफवाह फैला हैं, हमारे गुरू का आदेश आ गया सब लोग माफी मांग-मांग कर बाहर आ जायं तो अफवाहें फैलाने में ये बड़े माहिर हैं । आप कह रहे हैं कि उत्तेजनात्मक भाषण दिया, तो मैंने कहीं भी उत्तेजनात्मक भाषण नहीं दिया मैंने विनम्रता से ही कहा और अब भी कहना चाहता हूं भारतीय जनता पार्टी के अपने मित्रों से कि माननीय नारायण दत्त तिवारी जी ने जो अपील की है और मैं भी पहले अपील कर चुका हूं कि यह बातचीत के द्वारा समाधान निकालो । लेकिन बातचीत के द्वारा अगर समाधान नहीं निकलता है तो न्यायालय के फैसले का इन्तजार करिये । यह मैं चाहता हूं । और अभी भी अपील करता हूं और अन्य सम्प्रदाय के जितने भी नेता हैं, वह पुनः पहल करें । उसमें हमारी तरफ से जितना भी सहयोग हो सकता है, वह हम देने के लिए तैयार हैं, एक रास्ता निकलना चाहिए, लेकिन वोट की राजनीति नहीं होनी चाहिए ।

इस देश के तमाम धर्म के मानने वाले बड़े-बड़े पंडितों ने और ज्योतिषियों ने यह कहा कि जो आपने 30 अक्तूबर की तारीख चुनी है वह अशुभ है लेकिन आप नहीं माने । आपने इसे क्यों चुना ? क्योंकि आपको लोग मिलने वाले नहीं थे । कोई आपके आह्वान पर नहीं आता और किसी दिन माननीय राम चन्द्र बख्श सिंह जी ने ठीक ही कहा था कि चूंकि आपको लोग मिलने वाले नहीं थे इसलिए पंच कोसी और चौदह-कोसी का ही दिन चुना यह उम्मीद थी कि उस दिन निर्दोष लोग आयेंगे । (व्यवधान) जहां तक आप कहते हैं कि सैकड़ों लोग मर गये, आपसे मैंने कहा कि आप सूची दीजिए, आपने अखबारों में छपवाया । मान्यवर, आपने प्रचार किया । सूची दी उच्च न्यायालय में, आपने दरख्वास्त दी, आप प्रचार करने में कितने माहिर हैं ? आपने सूची दी कि आठ लोग गायब हो गये उन्नाव से और उच्च न्यायालय में उसकी दरख्वास्त दिलवाई । तुरन्त मैंने उसकी जांच करवायी और आठ लोग जिनके नाम दिए थे उच्च न्यायालय को उनके नाम हैं सर्वश्री रमेश राणा, भीष्म शर्मा, विशाल वालिया, योगेन्द्र प्रसाद, प्रमोद राणा, हरि नारायण, शोभनाथ और प्रह्लाद । इनको करनाल की अदालत में जिन्दा पेश कर दिया है । झूठा प्रचार करने में क्या होता है ? और नाम दीजिए । इसी तरह से आप जो सूची देंगे उस सूची पर मैं जांच करवाऊंगा । और अगर [xxx] प्रचार न करिये, अफवाह न फैलाइये। आप सूची दें मैं जांच कराने के लिए तैयार हूं ।

श्री बसन्त लाल गुप्ता–

न्यायिक जांच कराएंगे आप ?

नोट :–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री मुलायम सिंह यादव–

जहां तक मान्यवर, आदरणीय नारायण दत्त तिवारी जी ने जो भाषण दिया उन्होंने जो समीक्षा की, उसके लिए मैं उनको बधाई देना चाहता हूं।

एक सदस्य–

[xxx] हैं आप ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मैं बंधुवा मजदूर होता तो दिल्ली की सरकार से हमेशा चिरौरी करता रहता । एक लंगी लगा दी दिल्ली चारों खाने चित । (शोर व्यवधान)

श्री अरुण कुमार सिंह मुन्ना–

चरखा दांव वी0 पी0 सिंह को पता नहीं था । चरखा दांव लगा दिया, चित हो गये ।

श्री प्रमोद कुमार–

कौन सा दांव लगाया था कि जिससे दिल्ली सरकार गिर गयी ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मैं बंधुवा मजदूर कभी नहीं रहा । ये लोग बंधुवा मजदूर हैं । मा0 तिवारी जी की जो समीक्षा थी, उन्होंने ठीक भाषण दिया । यही लोकतंत्र में होना चाहिए । उन्होंने आलोचना की है, गलती होगी तो सुधार किया जायगा । आलोचना लोकतंत्र में होती है तो स्वीकार करना चाहिये । हमारी कमजोरी होगी, गलती कर रहे होंगे तो देश के महान अनुभवी नेता हैं, तिवारी जी उनका सुझाव मिलेगा तो लोग और इस समस्या का समाधान करने में अहम भूमिका अदा करेंगे, मैं आपके साथ रहूंगा । आप उस समय नहीं थे जब रैलियां हो रही थीं । मैंने किसी को चुनौती नहीं दी । अडवानी जी ने कई बार चुनौती दी, लेकिन मैंने स्वीकार नहीं की । मैंने चुनौती किसी को नहीं दी, लेकिन मैं किसी की चुनौती के सामने झुका नहीं । आज भी मैं विश्वास दिलाता हूं कि हिन्दू और मुसलमान की एकता कायम करने के लिये चाहे जितनी बड़ी कुर्बानी की आवश्यकता होगी, देने के लिये तैयार हूं । लेकिन साम्प्रदायिक शक्तियों ने मेरी दोस्त रही हैं, न मैं उनसे दोस्ती करने वाला हूं। ये लोग तो सत्ता के लिये गिड़गिड़ाते रहे । 6/7 नवम्बर की रात तक को अडवानी जी ने स्वीकार किया है कि चिपके रहे । हमने तो मना कर दिया । शनिवार इतवार निकल आया नहीं तो दो दिन पहले असेम्बली बुलवा दी होती । 48 घंटे में असेम्बली बुला ली । आप 23 तारीख से चिपके रहे, 7 नवम्बर तक चिपके रहे और चारों तरफ गिड़गिड़ाते रहे । जहां तक मा0 तिवारी जी आपने जो कहा, है उसका मैं पूरी तरह से खण्डन करता हूं । निराधार और असत्य है । जिस मिलिट्री के अफसर की बात कही गयी, मैं उसको नहीं जानता । समाचार पत्र हमारी आलोचना करें, मैं स्वागत करता हूं। आलोचना जितनी भी कर सकते हैं करें लेकिन संघर्ष के समय समाचार पत्र देश के हित में संयम और धीरज से काम लें । चाहे 9 मरे या 16 मरे लिखें लेकिन 9 मरे, एक सी0 आर0 पी0 का था । 11 बजे एक समाचार ने 50 हजार कापी बांट दी कि 100 मरे। प्रतिदिन लिखता है कि एक मरा। मैं इतना कहना

नोट :–[xx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

चाहता हूं कि पुलिस सुरक्षा दल, बी0 एस0 पी0, सी0 आर0 पी0 और जो भी सुरक्षा दल थे उन्होंने संयम और धीरज से काम लिया । बहुत बड़ी दुर्घटना बचा ली गयी । जिस तरीके से तीर कमान और भाला यह सब ले लेकर निकले थे यह लोग तो सुरक्षा से संबंधित लोगों ने संयम और धीरज से काम लिया । उसका परिणाम है कि (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

क्या पूरे मामले की जुडिशियल इन्क्वायरी करायेंगे।

श्री मुलायम सिंह यादव–

सी0 आर0 पी0 का हमारा जवान मार दिया गया एक चौकी जला दी गयी, कई मकानों को जला दिया गया । तब भी संयम और धीरज से काम लिया सुरक्षा बलों ने इस भूमिका के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं ।

जहां तक न्यायिक जांच का सवाल आपने माननीय तिवारी जी ने उठाया, मैं सभी बिन्दुओं पर कि इसके लिए कौन उत्तरदायी है, कौन जिम्मेदार है, किसने अफवाह फैलायी 'करो या मरो' का नारा दिया, राम ज्योति पर अल्पसंख्यकों को डराया, सारे बिन्दुओं पर हम न्यायिक जांच कराने के लिए तैयार हैं । आपसे विचार करके हम न्यायिक जांच करा लेंगे, सामान्य स्थिति आने दें ।

श्री प्रमोद कुमार–

न्यायिक जांच वाली बात जरा ठीक से सुन नहीं पाये हैं ।

(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव–

माननीय तिवारी जी ने, माननीय नेता विरोधी दल ने जो सबसे पहले न्यायिक जांच की बात कही, मैंने कहा सामान्य स्थिति आते ही आपसे बात करके न्यायिक जांच करायें

श्री शेख मोहम्मद सुलेमान–

यह जो बिजनौर में हुआ?

श्री मुलायम सिंह यादव–

चाहे बिजनौर हो, मेरठ हो या चाहे रामपुर, समस्त मामलों की जांच हो जायेगी, सभी की जांच हो जायेगी । माननीय तिवारी जी का सुझाव ठीक था इसलिये जो सुझाव ठीक था उनको हमने मान लिया ।

आज सौभाग्य इस बात का है कि उ0 प्र0 और दिल्ली दोनों का गठबन्धन है उत्तर प्रदेश की कुर्सी पर समाजवादी बैठा, आप भी समाजवादी रहे । लेकिन अभी तक कोई समाजवादी प्रधान मंत्री नहीं हुआ था । डा0 राम मनोहर लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव और जय प्रकाश नारायण जी के आशीर्वाद से आज कम से कम समाजवादी इस कुर्सी पर हैं। चन्द्रशेखर जी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ेगा चन्द्रशेखर जी नौटंकी करने वाले नेता नहीं हैं । चन्द्रशेखर जी षडयंत्र करने वाले नेता नहीं हैं । चन्द्रशेखर जी लड़ाने वाले नेता नहीं हैं । चन्द्रशेखर जी हिन्दू-मुस्लिम को धोखा देने वाले नेता नहीं हैं । वह देश के हित में अपनी समझ से ठीक बात करते हैं इसलिए फख्र है कि हमारे समाजवादी प्रधान मंत्री दिल्ली की कुर्सी पर बैठे हैं ।

मान्यवर,—जहां तक आपने यह भी बात रखी है कि निर्दोष लोग जो जेल में हैं, आप सूची देंगे, तो हम अपनी तरफ से जानकारी करेंगे और जितने निर्दोष लोग जेल के अंदर होंगे, उनको तुरन्त रिहा कर दिया जायेगा । जहां आपने कहा कि जिलों में

बहुत से लोग कहते हैं कि मैं मुख्य मंत्री हूं, मिनी मुख्य मंत्री भी कोई हैं, यह निराधार और असत्य है। अगर कोई एक भी नाम होगा तो मैं उसे पार्टी से निकालने के लिए तैयार होऊंगा। मान्यवर, थोड़े समय में ही देश के सामने कितने झूठ प्रस्तुत किए गये। अगर माननीय कल्याण सिंह जी प्रस्तुत करते, माननीय राजेन्द्र कुमार गुप्त जी कहते तो मुझे यहां कहने की जरूरत नहीं पड़ती लेकिन माननीय आडवाणी जैसे नेता देश के सामने यह प्रचार करते हैं कि सोमनाथ के मन्दिर का निर्माण सरदार पटेल ने कराया था यह सत्य नहीं है। मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। इन्होंने एक बार पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जी को चिट्ठी लिखी थी जिसका जिक्र मैं कर रहा हूं। यह पत्र 9 जनवरी, 1950 को उन्होंने लिखा है उसमें सरदार पटेल ने कहा है कि "ऐसे विवाद शान्तिपूर्वक ढंग से सुलझाये जा सकते हैं, जब हम मुस्लिम सम्प्रदाय की सहमति प्राप्त कर लें। विवादों का बल पूर्वक ढंग से समाधान निकालने का प्रश्न ही नहीं उठता ऐसी स्थिति में हर हालत में कानूनी ढंग से शान्ति व्यवस्था बनाये रखना होगी।" और मान्यवर महात्मा गांधी जी ने 28 नवम्बर, 1947 को अपनी प्रार्थना सभा में कहा था कि सरदार ने उन्हें बताया कि उनके जीवित रहते यह सम्भव नहीं है। सरकारी खजाने से सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए एक पैसा खर्च नहीं किया गया है। मान्यवर, इस हिन्दुस्तान में मैं यह स्वीकार करता हूं कि महात्मा गांधी से ज्यादा राम भक्त कोई नहीं है। जब उनको गोली मारी गयी थी तो उनके मुख से 'हे राम' निकला था और वही महात्मा गांधी धर्मनिरपेक्ष राज्य के सबसे बड़े समर्थक थे और इसके लिए उन्होंने अपने जीवन की सबसे बड़ी कुर्बानी अपनी जान की दी। अब इस सदन को तय करना है कि वह गांधी वाला राम राज्य चाहता है या गोडसे वाला राम राज्य, जिसमें हत्या, हिंसा और नफरत होगी।" हमने कांग्रेस का ही समर्थन नहीं लिया है बहुजन समाज पार्टी, और निर्दलीय विधायकों ने भी सरकार को पूर्ण समर्थन दिया है। अध्यक्ष महोदय, ये समर्थन इसलिए दिया है कि मजबूत सरकार चलाकर दिखाई जा सके और जनता को पता चल सके कि धर्मनिरपेक्षता का लबादा ओढ़ने वाला का असली चरित्र क्या है? यह एक नया प्रयोग है कि कांग्रेस, जनता दल और बहुजन समाज पार्टी मिलकर धार्मिक और साम्प्रदायिक उन्माद के खिलाफ एकजुट हुए हैं। हम सभी को पूरा विश्वास है कि यह प्रयोग सफल होगा और देश की जनता पहचान सकेगी कि धर्म-निरपेक्षता और साम्प्रदायिक सौहार्द के पक्ष में खड़ी होने वाली असली ताकतें कौन सी हैं?

अध्यक्ष महोदय, अभूतपूर्व जन समर्थन के बल पर इस सरकार ने अब तक अपने सामने आये हर संकट का दृढ़ता से मुकाबला किया है। हमने हर चुनौती का सफलता-पूर्वक सामना किया है। अपने कार्यकाल में प्रदेश के लगभग समस्त जिलों की जनता से सीधा संपर्क साधकर मैंने आम आदमी में यह विश्वास देखा है कि किसी भी विवाद या चुनौती के दौरान लोकप्रियता का खतरा उठाकर भी यह सरकार मुद्दों को टालने की बजाये समाधान का प्रयास करेगी। आम आदमी महसूस करता है कि यह ढुलमुल नीतियों वाली सरकार नहीं है। अधिकांश दलों ने हमारी सरकार को अभूतपूर्व सहयोग और समर्थन दिया है जिसका मैं आभारी हूं। धर्म निरपेक्षता में विश्वास करने वाले सभी लोगों, सभी शक्तियों और सभी दलों से मेरी अपील है कि राष्ट्रीय संकट और असाधारण चुनौती के इस क्षण में एकजुट होकर साम्प्रदायिक ताकतों के खिलाफ खड़े हों। इस देश

को एक बनाये रखने की जिम्मेदारी हम सभी की है । इस पुनीत कार्य में हमें सभी का समर्थन और सहयोग प्राप्त होगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है । मैं पूरे सदन से, जो धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखने वाले लोग हैं, मैं उनसे अपील करता हूं कि धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई को मजबूत करने के लिए हमारे प्रस्ताव का समर्थन करें और फिर मैं विश्वास दिलाता हूं कि धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई के लिए अपने सिद्धानों में साम्प्रदायिक शक्तियों से किसी भी तरह का समझौता नहीं हो सकता, भले ही यह सरकार रहे या न रहे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुन: अपील करता हूं कि धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखने वाले सभी लोग हमारे प्रस्ताव का समर्थन करें, यही मैं अपनी बात समाप्त करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

प्रश्न यह है कि यह सदन मंत्रि परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है जो माननीय पक्ष में हों वह कृपया हां कहें और जो माननीय सदस्य इसके विरोध में हों, वह कृपया न कहें ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया)

श्री अध्यक्ष–

मेरी समझ में हां की संख्या अधिक है, आप लोगों की क्या राय है ।

श्री कल्यान सिंह–

नहीं की संख्या अधिक है ।

श्री अध्यक्ष–

सभी खड़े लोग अपने स्थान पर बैठ जायें और मार्शल लाबीज को पूरा खाली करा लें ।

श्री रामचन्द्र बख्श सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, सी0 पी0 आई0 और सी0 पी0 एम0 के सदस्य इस मतदान में हिस्सा नहीं ले रहे हैं ।

(तत्पश्चात सी0 पी0 आई, सी0 पी0 एम0 के सभी सदस्य सदन से उठकर चले गये)

श्री अध्यक्ष–

जो माननीय सदस्य हां के पक्ष में हों , वह कृपया बैठकर अपने पक्ष में हाथ उठायें । (मुख्य मंत्री समर्थक जनता दल की ओर से मुलायम सिंह यादव जिन्दाबाद के नारे लग रहे थे और कांग्रेस दल की ओर से श्री राजीव गांधी जिन्दाबाद के नारे लगाये जा रहे थे । इस बीच प्रस्ताव के पक्ष में जिन लोगों ने हाथ खड़े किए थे, उनकी गिनती जारी थी ।)

जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के पक्ष में नहीं हैं, वे अपने हाथ उठायें ।

(जिन लोगों ने प्रस्ताव के विरोध में हाथ खड़े किए, उनकी गिनती जारी थी ।)

श्री अध्यक्ष—

अभी कृपया आप सभी लोग बैठे रहें, हो सकता है कि गिनती में कोई त्रुटि हो जाए तो दुबारा मिलाया जा सके ।

(कुछ देर के बाद)

प्रस्ताव के पक्ष में 224 और विपक्ष में 146 मत पड़े हैं, अतः यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

(सदन के किसी सदस्य ने कोई आपत्ति नहीं की)

अब हम अनिश्चित काल के लिए उठते हैं ।

(इसके बाद सदन सायंकाल 6 बजे अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो गया ।)

भाल चन्द्र शुक्ल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ :
20 नवम्बर, 1990

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी0 एस0 यू0 पी0-एल0 462 विधान सभा (783) 1991-572